3.3- Research Publication and Awards

3.3.2.1

Research Papers

PAPERS IN UGC APPROVED JOURNALS

Dr. M.A.Jadhav

2016+17

Issue - 16
Vol. - 16 (Jan.-March, 2017)

ISSN - 2322-018X

ICR/IIER,
IMPACT FACTOR
8.2856

UGC APPROVED
Peer Reviewed Indexed & Referred
International Research Journal of
Sociology & Social Science
Quarterly Bilingual

RELEVANT DERIVE

EDITOR-IN-CHIEF
DR. AMIT JAIN
M.Com, Ph.D, MSW, LLB

An official publication of
Amit Educational and Social
Welfare Society (Regd.)
Firozabad (U.P.)

UGC APPROVED

ISSN - 2322-018X

Peer Reviewed Referred & Indexed

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

International Research Journal of Sociology & Social Science
Quarterly Bilingual

RELEVANT DERIVE

Pattern :
Narendra Prakash Jain (International Scholar)
Dr. Anupam Jain (Registrar Ahilya Bai University, Indore(M.P.))

Advisory Board :
Prof. Vivek Kumar, JNU, New Delhi
Dr. Pooranmal Yadav, Mohan Lal Sukhadia University, Udaipur (Raj.)
Preeti Kumari, NCERT, New Delhi
Dr. Niti Jain, IGNTU, Amarkantak (M.P.)

Editorial Review Board :
Dr. D Sundram, Madras University, Madras
Dr. Tinku DE (Gope), Tripura University, Tripura
Dr. Ravindra Garda, Orissa
Dr. Anita Das, Assam
Dr. Venu Madan, Govt. College, Gurgaon (H.R.)
Dr. Anju Beniwal, Govt. Meera Girls College, Udaipur (Raj.)
Dr. Mahendra K Jadhav, (Maharastra)

Editor-in-Chief
Dr. Amit Jain
(M.Com, Ph.D., MAT, MASW)

Amit International Impact Factor Journals
Regd. MSME

An official publication of
Amit Educational and Social Welfare Society (Regd.)
Firozabad (U.P.) Regd. No. UP 1779/2004-05

www.amitdeliberativeresearch.com

Issue - 16
Vol.-16 (Jan-March, 2017)

Published : 31 July, 2017

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE * KOLHAPUR

ISSN 2230-7745

समाजशास्त्र संशोधन पत्रिका

मराठी समाजशास्त्र परिषद

वर्ष ३४ वे अंक - २१ वा फेब्रुवारी-२०१७ किंमत रु. ५०/-

मुख्य संपादक : डॉ. महेंद्रकुमार जाधव

कार्यकारी संपादक: डॉ. अरुण पौडमल
डॉ. संध्या पौडमल

अतिथी संपादक: डॉ. शैलजा माने
डॉ. प्रतिभा देसाई
डॉ. नलिनी बोरकर

संपादक समिती सदस्य: डॉ. संजय कोळेकर
डॉ. अशोक गायकवाड
डॉ. शाम सोमवंशी
डॉ. प्रतिभा अहिरे
डॉ. सुजाता गोखले
डॉ. नंदा कंधारे
डॉ. अर्जुन जाधव
प्रा. प्रविण घोडेस्वार

संपादकीय सल्लागार मंडळ
डॉ. एस.एन. पवार
डॉ.पी.के. कुलकर्णी
डॉ.पी.एम. शिंदे
डॉ.डी.यु. मोटे

संपर्क पत्ता:
अध्यक्ष, मराठी समाजशास्त्र परिषद,
द्वारा: समाजशास्त्र विभाग, नाइट कॉलेज
ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स, कोल्हापूर ४१६ ००२
www.mspmonline.com
E-mail: marathisocio@gmail.com
टंकण व मांडणी:
श्रीकांत कॉम्प्युटर्स ॲण्ड पब्लिशर्स
कोल्हापूर-०९८९०४९९४६६

टीप: या अंकातील लेखकांनी व्यक्त केलेल्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ तसेच प्रकाशक, मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

मराठी समाजशास्त्र परिषद

(नोंदणी क्र. महाराष्ट्र/२७-८३ औरंगाबाद)

द्वारा- समाजशास्त्र विभाग, नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स, कोल्हापूर.

- कार्यकारी मंडळ -

अध्यक्ष	:	डॉ. महेंद्रकुमार जाधव
सचिव	:	डॉ. अरुण पौडमल
कोषाध्यक्ष	:	डॉ. संध्या पौडमल
कार्यकारणी सदस्य	:	डॉ. ज्ञानेश्वर चव्हाण स्वा. रा. ती. म. विद्यापीठ, नांदेड
		डॉ. ज्योती पोटे मुंबई विद्यापीठ, मुंबई
		डॉ. सिंधु काकडे एस. एन. डी. टी. विद्यापीठ, मुंबई
		डॉ. प्रशांत सोनवणे उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
		डॉ. दीपक पवार रा. स. तु. म. विद्यापीठ, नागपूर
		डॉ. सुभाष पवार सं. गा. म. विद्यापीठ, अमरावती
		डॉ. विकास शेवाळे सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ, पुणे
		प्रा. दिवाकर उराडे गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली.
		प्रा. प्रविण घोडेस्वार य. च. म. मु. विद्यापीठ, नाशिक.

RELEVANT DERIVE

(International Research Journal of Sociology & Social Science Quarterly Bilingual)

INDEX

S.No.	Research Papers	Pages
1.	**Higher Education In Modern India: Challenges And Solutions** Dr .Girish Chandra Pandey, Dr.Aparna Joshi	1-5
2.	**Market , Media, Values and Women Empowerment** Dr Satyavrat Singh Rawat	6-10
3.	भारतीय समाज पर साइबर अपराध की स्थिति एवं प्रभाव डॉ. श्रीमती हेमलता बोरकर, सुनीता जांगडे	11-15
4.	मेवाड़ मूर्तिकला में मत्स्यांकन डॉ. सुशीला शक्तावत	16-22
5.	**Conceptualizing Continuity and Change in Emerging Forms of Labour Bondage in India** Dr. Jagdish Chander Mehta	23-33
6.	मानवाधिकार–के सन्दर्भ में भारतीय महिलाएँ डा0 अन्जू	34-37
7.	**Policy of collection development of National Social Science Documentation Centre of indian Council of Social Science Research with an introduction to its online collection** Dr. Ashish Deolia	38-43
8.	**Co-relation between Domestic Violence and Women Health: A Case Study** Bhard Pandey, Roly Sinha	44-54
9.	**A Study of Value Pattern among Deprived Adolescents** Dr. Prabhaskar Rai	55-58
10.	**Schemes and Structure of Mutual Funds** Dr. Andrew Prakash	59-62
11.	हिन्दी काव्य–ग्रन्थों की जीवनयुक्त प्रकृति डा0 विजय कुमार सिंह	63-66
12.	सामाजिक एकता के मसीहा : संत गाडगे महाराज प्रा डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव	67-69
13.	वैश्वीकरण के कारण राजसत्ता के बदलते चरित्र का सामाजिक प्रभाव डॉ0 मधु त्यागी	70-74
14.	**Work Stress among private sector hotel employees : A Study of Selected Five star & Four Star Hotels in Jalandhar city** Kamail Singh	75-80
15.	भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका डॉ0 कुमार यशवन्त	81-90
16.	डा0भीमराव अम्बेडकर के समतामूलक समाज की अवधारणा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य डॉ0 मंजु वर्मा	91-92
17.	**Industrial Backwardness and Rural Labour** Dr. Tejpal Singh	93-96
18.	**Famous Movement of India A Sociological .nalysis** Dr. Mayank Bhatnagar	97-101
19.	**Post Modernism: Divergent Trends in Visual Art** Dr. Sunita Gupta	102-104
20.	युवा एवं अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद Dr. Vandana	105-109
21.	**Obesity is a Most Powerful Cause of Chronic Diseases** Dr. Sushma Yadav	110-113

ISSN 2322-018X

COMMERCE * NIGHT COLLEGE OF ARTS & KOLHAPUR

सामाजिक एकता के मसीहा : संत गाडगे महाराज

प्रा.डॉ.महेंद्रकुमार आ. जाधव
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् अँड कॉमर्स
कोल्हापूर महाराष्ट्र

वास्तविकता से मनुष्य को अगर सही अर्थ में अपना विकास कराना है तो सबसे पहले उसे अपने 'स्वत्त्व' की पहचान होना जरुरी है। कई समाज सुधारकोने इस बात पर गौर किया था। वर्षो से चली आई परंपरा कुरीतियों, अंधश्रद्धा, कर्मकांड, समाज में चलनेवाला ढोंग इसके विरोध में कई आलोचना की गयी। आगरकर, महात्मा फुले, महर्षि दयानंद सरस्वती, राजाराम मोहन रॉय आदि समाज सुधारकोने सामाजिक स्थिती को सुधारने के प्रयास किए। उन्हीं की रीं ओढका चलनेवाले, मनुष्य को अपने अस्तित्त्व की पहचान करा देने वाले १९वे शताब्दी के उत्तरार्ध के महान, महाराष्ट्रा के आधुनिक संत मसिहा थे गाडगे बाबा।

संत गाडगे बाबा का जन्म २३ फरवरी १८७६ मे अमरावती जिले के शेणगाव में हुआ। उनका असली नाम था 'डेबू झिंगराजी जानोरकर'। डेबू के घर की स्थिती अत्यंत दयनीय थी। पिता झिंगराजी मद्यप्राशन में पूरी तरहा डूबे हुअे थे। मद्यप्राशन के व्यसन से ही उनका अंत हुआ। झिंगराजी ने जिस समाज मे जन्म लिया उस समाज की रोब और मानसन्मान रखने के लिए पूरी जिंदगी बिता दी। यही पर उनके घर संसार की समाज के मिट्टी में धँस गयी।

डेबू को घर की स्थिती का पूरा एहसास था। इसी कारण उन्होंने, दलित पीडित, वंचित लोगों को सच्चा मानव, परिवर्तनशिल इन्सान बनाने के लिए प्रयास किया। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी मनुष्य को बनाने के लिए व्यतित की। घर संसार जब उनका ध्यान उठ गया तब स्वयं को समाजसेवा, मानव सेवा में बहा दिया। मानव सेवा करने में उन्हें धन्यता मिली। समाज को उर्जितावस्था प्राप्त करा देने का सबसे बडा श्रेय बाबा को जाता है। इस कार्य मे उनका बहुत बडा योगदान रहा है। करीब-करीब १५ साल भटकने के बाद, भटकंती करते समय उन्होंने लोकजीवन को नजदीक से जान लिया था, पहचान लिया था, उसका अनुभव कर लिया था। सामाजिक दांभिकता, दृष्ट प्रवृत्ती, भोला-भाला समाज, सीधा-साधा समाज उन्होंने नजदिक से देखा था। ऐसे भोले-भाले समाज को देखकर उनका मन द्रवित हो गया।

डेबू मतलब गाडगेबाबा पढे-लिखे नहीं थे। अशिक्षित थे किंतु ज्ञान का भंडार उनके पास था। वे ज्ञान के सूरज थे उनका पेहराव बिल्कुल अनाडी रहाथा था। पहले लोग उन्हें पागल कहा करते थे। धोबी समाज में जन्म लेने के बावजूद भी धोबी यो दुबारा धुलवायें गये कपडे की घडी उन्हें पता नहीं थी। धोबी समाज में जन्म लेने के बावजूद धोबी के कपडे की बुनावट की छाया तक जिंदगी भर उनपर नहीं पडी थी। अलग-अलग रंगों के कपडों के टुकडों से बनी कमीज वह पहनते थे। एक हात में झाडू, दुसरे हात मे मिट्ठी का घडा, एक कान में कौडी, दुसरे कान में काँच का

COMMERCE & ARTS COLLEGE KOLHAPUR

टुकडा टँगा हुआ रहता । सिर पर मिट्टी के आधे टूटे मटके का शिरस्त्राण रहता था । इस मटके के कारण को गाडगे या गाडगं ऐसा कहा जाता है । टुटे हुअे मटके का निचला भाग बाबा अपने सर पर लेते थे इसीलिए उन्हे गाडगेबाबा ऐसा कहा जाता था । उनके इस पेहराव को देखकर लोग हँसते थे । उन्हे पागल समझते थे किंतु उनके पास बैठकर उनकी ज्ञान से प्रेरित बाते सुनते, जैसे उनके ज्ञान के भंडार से शान से भारी बात बाहर निकलगे लगी तब लोगों को भ्रम दूर हो गया 'पेहराव हो बावला, पर अंग में हो नाना कला' इसी तरह ही उनका लिबास था ।

बाबा की पहचान हुअी वह किर्तन तथा प्रवचन के कारण अनपढ, अनाडीयो के लिए किर्तन ही उनका सच्चा अस्त्र था । (किर्तन मतलब भजन गाते-गाते कभी नाचकर दिया जानेवाला प्रवचन) इसी किर्तन के द्वारा ही समाज में सामाजिक जागृती लाने का प्रयास उन्होंने किया । किर्तन जैसे अस्त्र को उपयोग उन्होंने बखुबी किया था । वे जिस गाव जाते उस गाव में जाकर पहले वहाँ की जगह साफ, सुथरी बनाते थे । धीरे-धीरे गाव के सारे लोग इकट्ठा होकर उनके साथ साफ-सफाई के काम में जुट जाते थे । और देखते-देखते पूरा का पूरा गाँव साफ-सुथरा दिखता । श्याम के समय वे गाँव के लोगों को किर्तन के माध्यम से अपने ज्ञान का अमृत पिलाते । उनका किर्तन सुनने में लोग पूरी तरह मग्न हो जाते थे ।

उनके किर्तन की विशेषत: यह थी इस किर्तन के लिए किसी तरह के वाद्य (बाज) की आवश्यकता नहीं रहती थी । रास्ते पर पडे पत्थर को बाजे के रुप में उपयोगि लाते थे । उनके सामने उपस्थित रहनेवाले हजारों अनपढ, अनाडी लोगों मे किर्तन द्वारा ज्ञान गंगा प्रसारित करने का महान कार्य उनके मुख द्वारा रहता किसी जलप्रपात की तरह । इस ज्ञानरुपी जलप्रपात में लोग जैसे नहा लेते थे । वे लोगो को कहते - 'बाबा हो यह ईश्वर मंदिर में नहीं है और नाही इस मुर्तियों मे, ईश्वर तुममे हैं, हममें है ।' ईश्वर मनुष्य के अंदर होता है । क्यों उस पत्थर की पूजा करते हो ? अगर तुम्हें ईश्वर को ढूँढना है तो मनुष्य की सेवा करो । इस सेवा से ही तुम्हें ईश्वर दिखायी देगा । भगवान के लिए तुम क्या क्या करते हो, मुर्गा, बकरा देते हो के नहीं ? सच मे क्या भगवान तुम्हारे पास मुर्गा, बकरी की माँग करता है क्या ? इस मुक जानवर को आप क्यों छलते हो ? भगवान के सामने तुम फल रखते हो, पैसे रखते हो, क्यों रे बाबा ? सचमुच मनुष्य में रहनेवाले भगवान के लिए मंदिर के भगवान से पिठ छुडायी थी । ऐसे विचार बाहर निकलने लगे थे । बाबा अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए भर उपदेश देते रहें । उपदेश देते समय यह कहते रहें 'व्यसनाधिन मत बनिए, कर्जा मत लिजिए ; कर्जे चक्र में मत रहिए, अंध, दिव्यांग की मदद कीजिए ।' रोगीयों को दवा दिजीए श्रम करें, श्रम के बिना फल की प्राप्ती नहीं होती । आलसी मत बनीए । प्राणियों पर अन्याय न करें । विलासी जीवन को त्याग कीजिए । अनपढ मत रहिए । अस्पृश्यता यह मानव जीवन के लिए कलंक है यह उन्होंने भली-भाँति जान लिया था । इसीलिए उन्होंने अस्पृश्यता विरोध रणकंदन किया ।

गाडगेबाबा, कर्मवीर भाऊराव पाटील, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर इन त्रिमुर्तियों के सहविचार थे । प्रेम, ममता का एहसास रखनेवाले ये जीव थे । डॉ.आंबेडकर तथा गाडगेबाबा इनके जीवन की घटनाओं को वर्णन करते समय प्रा.शिवाजीराव भोसले वर्णन करते समय लिखते है, गाडगेबाबा जब बिमार थे तब मुंबई के हॉस्पिटल में कानून मंत्री और दलितों के उद्धारक

COMMERCE * NIGHT COLLEGE OF ARTS & KOLHAPUR

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर उनको मिलने के लिए आए उस समय गाडगेबाबा ने कहा, 'आपका एक-एक मिनट भी मौल्यवान है, आप यहाँ क्यों आए ? आपका अधिकार बहुत बडा है।' उसपर आंबेडकर बोले, 'बाबा हमारा अधिकार दो दिन कुर्सिसे नीचे उतरे तो हमे कौन पूछेगा ? किंतु आपका कार्य और योगदान अमर है। इससे गाडगेबाबाजी का श्रेष्ठत्त्व समझमें आता है।

गाडगेबाबाजी ने जनकल्याण करने हेतू अपना पूरा जीवन बीता दिया। उनका यह कार्य लाखों के मूल्य का कार्य है। गरीबों के लिए उन्होंने अस्पताल खुलवाये। शिक्षा का कार्य शुरु किया, अन्नदान यही श्रेष्ठदान है, इसका महत्त्व जानते हुअे अन्नछत्र खुले किए। बावडीयों की खुदाई करने के लिए सहकार्य किया। तिर्थक्षेत्र की जगह पर धर्म संस्थान का निर्माण किया। शिक्षा दिलाने के लिए क्लासेस शुरु किए। अन्नदान ही श्रेष्ठदान है, यह जानते हुअे अन्नछत्र खुले किए। इस कार्य को करते समय लाखो रुपयों की राशी जमा की किंतू खुद के लिए अथवा अपने परिवार के लिए उसमें का एक पैसा भी उन्होंने कभी नहीं लिया। भटकंती करते समय एकाध पेड बीच में आता तो वह उनका निवासस्थान बनता था। जिंदगीभर झोपडा ही उनका घर रहा।

पूरी जिंदगी भर उन्होंने अविंश्रांत रह कर बिना थके जनकल्याण सेवार्थ यह काम किया। अखंड बोलना, अखंड भ्रमण, अखंड कार्य इसी कारण उनका शरीर थक गया, जीर्ण हुआ, २० दिसंबर १९५६ में गाडगेबाबा पंचतत्त्व में विलिन हो गए।

टिपणीयाँ :-

१) तर्कतीर्थ श्री.लक्ष्मण शास्त्री जोशी : मराठी विश्वकोश खंड ४ महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडल मुंबई १९७६

२) पं. महादेवशास्त्री : भारतीय संस्कृती कोश, खंड २ भारतीय संस्कृती कोश मंडळ पुणे १९७६

३) प्रा.भिडे-पाटील : महाराष्ट्र के सामाजिक सुधारणेचा इतिहास

४) प्रा. रमेश जगदारे : सम्यक भारत मासिक
प्रा.डॉ.महेंद्रकुमार जाधव : ६ डिसेंबर २००४-५ जानेवारी २०१५ वर्ष २ : अंक दुसरा

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Revised Edition

2017-18

ISSN 2278-3199
Volume - 06, Issue - 01, January - June, 2017

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary
National Research Journal of Social Sciences & Humanities

National Journal on ....

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Gondia Education Society's

SETH NARSINGDAS MOR ARTS, COMMERCE &
SMT. GODAVARI DEVI SARAF SCIENCE COLLEGE

TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

ISSN 2278-3199
Volume - 06, Issue - 01, January - June, 2017.

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities

National Journal on.....

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Chief Editor

Dr. C. B. Masram

Principal

S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar Dist. Bhandara.

Editor

Dr. Rahul Bhagat

Associate Professor & Head Department of Sociology, S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar Dist. Bhandara - 441912

Published By

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

S. N. MOR ART, COMMERCE & SMT. G. D. SARAF SCIENCE COLLEGE, TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

Email-principalsnmorcollege@rediffmail.com / rjbhagat1968@yahoo.co.in

Website - www.snmorcollege.org.in

Phone No. - 07183-233300 / 07183-233301 Mobile - 09422113067 / 09420359657

Volume – 06, Issue – 01, January-June, 2017/ ISSN 2278-3199

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities....

'Social Issues and Problems'

EDITORIAL BOARD

Chief Editor: Dr. C. B. Masram,
Principal, S. N. Mor Art, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar, Dist. Bhandara.

Editor: Dr. Rahul Bhagat,
S. N. Mor Art, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar, Dist. Bhandara.

Editorial Advisory Board -
Dr. Pradeep Aglave, Head, P. G. Dept. Dr. Ambedkar Thought, R. T. M. N. U., Nagpur.
Dr. Suresh Waghmare, Head Dept. of Soci., Rajshree Shahu Mahara; College, Latur (MS)
Dr. Jagan Karade, Head Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur (MS)
Dr. Sanjay Salunkhe, Department of Sociology, D. B. A. M. University, Aurangabad (MS)
Dr. R.N. Salve, Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur, Dist. Kolhapur.(M.S.)
Dr. Sujata Gokhale, Head Dept. of Sociology, S. N. D. T. University, Mumbai (MS)
Dr. Shivcharan Meshram, Principal, Kamla Nehru Govt. Girls College, Balaghat (MP)
Dr. B. K. Swain, Head Department of Sociology, R. T. M. Nagpur University, Nagpur.
Dr. Smita Awchar, Professor, D. B. A. Marathwada University, Aurangabad (MS)
Dr. Prakash Bobde, Ex. Professor and Head, Dept. of Sociology, R. T. M. N. U., Nagpur.
Dr. Ramesh Makwana, Department of Sociology, Sardar Patel University, Gujrat.
Dr. M. B. Rute, Principal, Santaji Mahavidhyalaya, Nagpur.
Dr. Ashok Kale, Principal, M. B. Patel College, Deori Dist. Gondia (MS)
Dr. Anil Surya, President, S. M. S. New Delhi.
Dr. Kalyan Sakharkar, Head Dept. of Sociology, P. N. College, Pusad Dist. Yeotmal (MS)
Dr. Arun Chavhan, Head Dept. of Sociology, Vidhyabharti Mahavidhyalaya, Amravati (MS
Dr. Mahendrakumar Jadhao, Head Dept. of Sociology,Night College of Arts & Commerce, Kolhapur.

Editorial Board Member -
Dr. R. K. Dipte, Dept. of English, S. N. Mor College, Tumsar.
Prof. R. U. Ubale, Dept. of Marathi, S. N. Mor College, Tumsar.
Prof. R. O. Belokar, Head Dept. of Pol. Science, S. N. Mor College, Tumsar.

Associate Editors -
Dr. Saroj Aglave, Head, Dept. of Sociology, Mahila Mahavidhyalya, Nandanvan, Nagpur.
Dr. Dipak Pawar, Head, Dept. of Sociology, Women's College, Nandanvan, Nagpur.
Dr. Nalini I. Borkar, Dept. of Sociology, Arts & Commerce Degree College, Petrolpump, (Bhandara)
Dr. S. D. Pawar, Head, Dept. of Sociology, N. J. Patel College, Mohadi Dist. Bhandara
Prof. Baban Meshram, Head, Dept. of Sociology,N. M. D. College, Gondia Dist. Gondia.
Prof. Priyadarshan Bhaware, Head, Dept. of Sociology., Badrinarayan Barwale College, Jalna
Dr. Rajendra Kamble, Head, Dept. of Sociology., Indira Gandhi College, Kalmeshwar, Nagpur
Prof. Jaindra Pendse, Head, Dept. of Sociology, Sevadal Mahila College, Nagpur.
Dr. D. T. Shende, Deptt. of Sociology, Mahatma Gandhi College, Parshiwani.

Volume – 06, Issue – 01, January-June, 2017/ ISSN 2278-3199

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities....

'Social Issues and Problems'

- CONTENTS –

Sr. No.	Tital of Paper	Authar Name	Page No.
1.	Reorienting Tribal Education	S. Vijay Kumar	...1
2.	Rapid Urbanization and incidence of Vector borne Diseases	G. S. S.Gopinath	...4
3.	Post-Renke Commission:	Vinayak Lashkar	...7
4.	Skill Development and Youth	Dr. Kawita Lende	..11
5.	A Study of Academic Achievement of Adolescents	C.P. Bankar	..14
6.	युवतीयों के स्वास्थ्य तंदुरुस्ति के लिए भोजन का महत्व	डॉ. गजेंद्रकुमार जाधव	..18
7.	भारतीय बैंकिंग की आधुनिक प्रवृत्तियाँ	इमरान कुरैशी	..20
8.	भंडारा जिले में सिकलसेल की स्थिती	प्रा. ज्योती नाकतोडे	..24
9.	नासिरा शर्मा के साहित्य में सहिष्णुता का मुल्यांकन	हरगोविंद टेंभरे	..28
10.	ग्रामीण कृषक जीवन को दर्शाता प्रेमचंद का साहित्य	डॉ. मनोज टेंभरे	..30
11.	अर्थोत्पादनातील लिंगभेद आणि महिला सक्षमीकरण	डॉ. दिपक पवार	..32
12.	स्त्री, गुन्हेगारी आणि समाज	डॉ. नलीनी बोरकर	..39
13.	भंडारा जिल्ह्यातील कृषी सिंचन व्यवस्थेचे अध्ययन	ज्ञानेश्वर हिवसे	..42
14.	नागपूर विभागातील बहरी जीवनाची वैशिष्टये	डॉ. जयंत मरके	..45
15.	अवयवदान – देहदान	डॉ. राजेंद्र कांबळे	..48
16.	पु. ल. च्या 'जावे त्यांच्या देशा' या प्रवासवर्णनातील समाज दर्शन	प्रा. राजेश दिघटे	..51
17.	भारतीय अभिजात परंपरा : उगम व स्वरूप	डॉ. संजय पाखमोडे	..53
18.	वैद्यणिक ग्रंथालयामध्ये अवांतर वाचन साहित्याचे महत्त्व	डॉ. रंजना व्यवहारे	..57
19.	भारतीय समाजातील कुमारीमातांची समस्या व स्वरूप	प्रा. श्रीराम खाडे	..59
20.	भंडारा–गोंदिया लोकसभा मतदार संघ निर्मिती आणि वर्तमान	प्रा. पितांबर उरकुडे	..65
21.	स्वयंसहाय्यता बचत गट – महिलांच्या उन्नतीचा मार्ग	डॉ. राहुल भगत	..69
22.	महिलांच्या उद्योजकतेकरीता गृहअर्थशास्त्रातील क्षेत्रे	प्रा. सुनिता राठोड	..72
23.	महाकवी तुकाराम	प्रा. संजय सिंगनजुडे	..74
24.	स्त्रीवादी लेखिकांच्या साहित्याचे अवलोकन	डॉ. विजया राऊत	..78
25.	आर्थिक विकासात श्रमप्रतिष्ठेचे महत्त्व	अर्चना देशमुख	..81
26.	महात्मा फुलेचे सामाजिक कार्यातील योगदान	डॉ. राजेन्द्र बेलोकार	..84
27.	ग्रामीण क्षेत्रातील महिलांच्या समस्या	डॉ. किशोर राऊत	..87
28.	माडिया जमातीच्या समस्या	डॉ. रामदास कुलसंगे	..90
29.	पाणलोट क्षेत्राचा भूमीउपयोजनावरील परिणाम	डॉ. अरूणा बावनकर	..92
30.	दारिद्रय निर्मूलन योजनांचे ग्रामसक्षमीकरणातील महत्त्व	डॉ. दीपक कोटुरवार	..95
31.	उच्च शिक्षणातील शिक्षकांची शैक्षणिक बाजारीकरणाप्रती भूमिका	डॉ. कल्याण साखरकर	..97

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

Volume - 06 - Issue - 01, January - June, 2017/ISSN 2278-3199

युवतीयों के स्वास्थ्य तंदुरुस्ति के लिए भोजन का महत्त्व

डॉ. महेंद्रकुमार जाम्बव, समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नाइट कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँण्ड कॉमर्स, कोल्हापूर.

प्राक्कथन :– वैश्विक स्वास्थ्य संघटना – "स्वास्थ्य का अर्थ है भारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक दृष्टी से सुस्थित अवस्था। दुर्बलता का अभाव" हमारा भारीर, भोजन, निद्रा और ब्रम्हचर्य इन तीन खंबो पर खडा है। वह ठीक रहने के लिए वायू, पित्त, कफ की समानता होने से स्वास्थ्य की प्राप्ती होती है। सुबह सुर्योदय के पहले डेढ घंटा उठने से सत्त्व गुणों की वृद्धि होती है। बुध्दि और इंद्रिय प्रसन्न होते है। भारीर ताजा बन जाता है। भोर समय अध्ययन, मनन, चिंतन और कसरत करना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। किंतु युवतियाँ अपने स्वास्थ्य संबंधि सोचती हुअी नजर नहीं आती। हाल ही में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार युवतीयों में हिमोग्लोबिन की सिर्फ 4 ग्रॅम मात्रा पायी गयी है। उसके लिए स्वास्थ्य संबंधित आहार मे प्रोटिन्स, स्निग्ध पदार्थ, पिष्टमय पदार्थ, जीवनसत्त्व, खनिज द्रव्यक्षार, पानी आदि का समावेश होता है। सही भोजन लेने से ही भारीर की उंचाई, वृद्धि, कांती वर्ण पसन्न हो जाता है। मनुश्यों को किस प्रकार का भोजन लेना चाहिए, किस तरह की कसरत करनी चाहिए इस निबंध मे संक्षिप्त रुप मे कुछ विचार व्यक्त किए गए है। इस निबंध के प्रभाव से आज की युवतीयों को भविश्यकालीन सदृढ माता बनने के लिए कसरत और भोजन का कितना महत्त्व है इसकी चिकित्सा की जाएगी। भारतीय समाज मे विविध प्रांतो में खेल की लोकप्रियता आज भी अपना महत्त्व कायम रखती है। महाराश्ट्र के महत्त्वपूर्ण खेलो की ओर मैं जानभूजकर आपका ध्यान आकर्शित करना चाहती हूँ। जो खेल सावन के गडिने से भुरु होते है उसमें गौरी–गणेश का त्योहार, दशहरा, विविध उत्सव, त्यौहार, रथयात्रा, मेला आदि समय खेल खेले जाते है। बहुजनों के लोकप्रिय खेल ऐसी मान्यता प्राप्त कर चूके है। ग्रामों मे महिला खेती–बाढी के कामों के साथ–साथ, घरकामों के साथ–साथ इन सभी खेलो का आनंद लुटाती है। उसमे अपने आप को जैसे खो देती है। इसी कारण भारिरीक श्रम के कारण मानसिक ताण कम होता है और मन प्रसन्न हो जाता। भारीर का कद पाला तथा स्वास्थ्य पूर्ण रहता है।

त्योहारों, उत्सवों के खेल खेलने से अपने आप कसरत भी होती है, तथा मित्रता के संबंध भी बढते है। जीवन की ओर देखने का नजरिया सकारात्मक रहता है। जीवन की समस्याओंके सामने हँसते–हँसते खिलाडू वृत्ति से सामना किया जा सकता है। यही खेल बहुजनों की मौज्यवान सौगात है। इन खेलों को अबाधित रखना, उसका संवर्धन करना हम सब की जिम्मेदारी है। आज इन खेलो की जानकारी हमे उपरी नोंद पर है। इन पारंपारिक खेलो की बारे में स्वास्थ्य की दृश्टि से सोचना जरुरी है। कुछ खेल के बारे में आज कल की पीढि जानती ही नहीं। गणेश उत्सव के समय जब गौरीयों का आगमन होता है उस समय कसरत भरे खेल खेले जाते है। उसमें से 'काटवट–कना' नामक खेल महाराश्ट्र में अत्यंत प्रचलित है। इस मे अँगूठे को पकडकर पिठ पर गोल–गोल घुमा जाता है और उसके साथ गीत गाए जाते है। आज कल की युवतियाँ इस तरह के खेल खेलने में भारमाती है। महाराश्ट्र के मुर्गा, पिंगा, फुगडी (दो स्त्रिओं एक दुसरे के हात पकडकर गोल घुमती है। हात कॉस में पकडे जाते है।) झूला, चुई–कुई, घुसलन, लेझीम–लेझीम नाम यह खेल हात में लेझिम लेकर नृत्य करते हुअे खेलनेवाला खेल है। यह वीर खेल है इन सभी खेलों के द्वारा संपूर्ण भारीर की कसरत होती है। किंतू आज की युवा पीढि को इसका बिल्कुल भी खयाल नहीं है। इन सभी पारंपारिक खेलो को आज की पीढि को इसका बिल्कुल भी खयाल नहीं है। इन सभी पारंपारिक खेलो को आज की पीढि भूल रही है। इस खेल को भास्त्रीय महत्व स्वास्थ्य की दृश्टि से होना अनिवार्य है। हम सभीयों को दिर्घायु बनने के लिए इस तरह के कसरत से परिपूर्ण खेलों में दिलचस्पी लेने की जरुरत है। इन खेलों के पूर्व इतिहास संबंधी जानकारी लेना भी आवश्यक है।

इन खेलों को अनाडी कहना मतलब हमारा अज्ञान है। विविध उम्र की स्त्रियों का स्वास्थ्य निरामय बनाने के लिए उनके स्वास्थ्य विषय समस्या का हल ढुँढने में इन खेलो की मदद होगी। इसकी ओर ध्यान केंद्रित करना महत्त्वपूर्ण है।

उद्देश:– 1) महाराष्ट्र की ग्रामिण संस्कृतिकी धरोहर किंतू आज की युवा पीढी के लिए अनभिज्ञ कालावधीत हो रहे महिला औके खेलो की चिकित्सा करना।

2) युवा पिढीयों को अनाडी लगनेवाले किंतू व्यक्तिमत्त्व विकास, भारीरिक, मानसिक, बौध्दिक, भावनिक स्वास्थ्य संबंधित मतलब सर्वांगिण विकास के लिए पोशक रहनेवाले खेल और भोजन संबंधीत एतहास दिलाना, जागृती करना जरुरी है।

अध्ययन पध्दती :– तथ्य संकलन के लिए अन्य दुय्यम साधनों का उपयोग किया। निरीक्षण, साक्षात्कार, क्रिडा विश्वकोश आदि का आधार लिया गया है।

निरीक्षण / गृहितके :– 1) महीलाओंके पारंपारिक खेलों मे कुछ खेल कालातीत हुये है।

2) इस खेल के बारे में अज्ञान होने की वजह से आज की पीढि से अनाडी समझकर जानबूझकर उसकी ओर से नजर हटायी जाती है।

3) महाराष्ट्र के ग्रामीण पारंपारिक खेलो की मौलिकता लुप्त होती हा रही है।

4) पारंपारिक खेलों की ओर ध्यान हटाने की वजह से महिलाओं की भारीरिक, मानसिक, भावनिक, बौध्दिक स्वास्थ्यसंबंधी प्रदान निर्माण हो रहे है।

5) महाविदयालयीन युवती अपने सूखी स्वास्थ्य संबंधी भोजन संबंधी सतर्क नही रहती है।

6) फास्ट खाना, जंक फूड, विविध पेयो की ओर वह अधिक आकर्शित हुअी। यह बहुत ही गंभीर बात है।

उपाय :– 1) इन खेलो का स्वास्थ्य के लिए अनन्य साधारण महत्त्व होने की वजह से इसका पुर्नजीवन करना आवश्यक है।

2) नई पीढि को सांस्कृतिक सौगात देने के लिए शिक्षा क्षेत्र में उसका समावेश करना।

3) समाज मे सभी प्रसार माध्यमों द्वारा इस खेल संबंधी सकारात्मकता बनाते हुए उसका एहसास दिलाकर जागृती करना आवश्यक है।

4) इस तरह के खेलों की प्रतियोगिता रखना।

5) स्वास्थ्य संबंधी मेले भरवाकर विविध पुस्तके, संगोष्ठिया इससे मार्गदर्शन करना।

संक्षिप्त :– समाजशास्त्रज्ञों के विचार से खेल यह एक सामाजिक कृती है। वह समाज की प्रतिकृती है। समाज की नींव है, खेल समाज की प्रतिश्ठा और गतिविधियों का अक्सा है। इसीलिए इस खेल का शास्त्रीय महत्त्व समझ लेना चाहिए। आज की स्थिती मे इसकी आवश्यकता है। इन खेलो में से कई खेलों के लिए 1 रुपिया भी नही खर्च होता है। भोजन के प्रति सजग रहना, स्वास्थ्यकारक भोजन लेना आवश्यक है। जिव्हा पर नियंत्रण जरुरी है। इस बारें मे जानबूझकर कहना पडता है। महिलाओं को ऐसे खेलों के माध्यम से अपने जीवन को तितलियों की तरह साफ, सुथरा, सुंदर, आनंदी जीवन बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए। और समाजहित को अच्छे कर्मो को स्विकार करने पर राश्ट्रविकास के लिए मदद हो जाएगी।

संदर्भ :–

1. भारतीय संस्कृती कोश खंड 2 पन्हा क्र. 548
2. भारतीय संस्कृती कोश खंड 2 पन्हा क्र. 588, 784, 785
3. भारतीय संस्कृती कोश खंड 2 पन्हा क्र. 382
4. भारतीय संस्कृती कोश खंड 5 पन्हा क्र. 557
5. भारतीय संस्कृती कोश खंड 5 पन्हा क्र. 684, 685

2017-18 on Line International

Online International Interdisciplinary Research Journal, (Bi-Monthly), ISSN 2249-9598, Volume-08, Jan 2018 Special Issue (01)

Experiences of women freedom fighters in Dist. Kolhapur in Maharashtra

Jadhav M. A.
Assistant Professor& Head Dept.of. Sociology Night College of Arts and Commerce
Kolhapur Maharashtra, India

Abstract

The story of the freedom fighters was quite inspiring and great from the period before Independence till the year 1942. The detailed information about the contribution of the a four great woman freedom fighters Jayabai Haveri, Bhagirathibai Tambat, Kashibai Appaji Hanabar & Indumati Korgaonkar for the freedom is briefly described here. The woman freedom fighters have the history similar to that of the great freedom fighter like Chhatrapati Shivaji Maharaj, ChhatrapatiTarani, Chhatrapati Shahu Maharaj etc.

KEYWORDS- inspiring, quite, Contribution

Introduction:

The city Kolhapur is very much purified by the existence of Chhatrapati Shivaji Maharaj. The founder of Hindavi Swaraj, Shakkarta, Chhatrapati Tararani, Chhatrapati Shahu Maharaj etc. History has been continuing with the activities of thesesuchgreat people. The story of the freedom fighting in Kolhapur is quite inspiring & great from the earlier freedom fight till 1942. It was a crime according to the British Rule to utter 'Vande Matram.' In Kolhapur the flame of the freedom went on brighter & brighter. It was never off. The result is that Kolhapur totally was an integral part of the freedom fighting. To get the freedom for India, the women in Kolhapur fought the fight with great courage with the men.

Objective :

1) Knowing information about the work &sacrifice of woman freedom fighters.
2) Sell evolution for the respect of Independence without fighting for it.

Research Methodology:

This research Paper depends on secondary source data. Which induces books & encyclopedia.

Experiences of the women freedom fighters in Kolhapur as followed:

1) Jayabai Haveri :

In the contemporary time, Jayabai was educated till std. 7th. She was very much influenced by Padmashri Deshbhaktta Rathappanna Kumbhar & Honorable Dattatraya Tambat that resulted in her inter-religious marriage with Jayrao Haveri. This was the first inter religious marriage in Kolhapur Region. Jayabai was from the backward class and Jayrao was Lingayat by religion. But Jayabai had to face many problems because of inter religious marriage. She was boy clotted by the neighbors as well as the society. But for Jayabaiit was a great chance to stand firmly as there was more pressure of the society. She stood firm.

Kolhapur was surging with anger against the British. There was an emotion of revolt against the British. In this situation, Jayabai and Bhagirathi Tambat were selected as a part of this revolt. They were to put pitch on the statue of Ex. Governor Lord Wilson – the contemporary Ex. Governor of Mumbai. Both the ladies completed their duties and filed; it was the day10th August 1942 – after noon. As the British knew the news both the ladies were arrested and declared jail for six months, even they were give one more month jail under the Defense Act of India. The family members of the both the ladies went far away from them. Both the ladies remained lonely then they worked on Charakha at night and used to sell khadi

and gained money to earn bread. Meanwhile they got financial help from Prabhakar Pant Korgaonkar.

Both these ladies reacted and revolted against the British before the court. These courageous two ladies were the first persons from Kolhapur to be in theJail to gain political freedom in thehistory of Kolhapur.

2) Bhagirathibai Tambat :

She was born in 1919. She plunged into the freedom fight with the inspiration from her husband. She never liked injustice a she harshly revolted against it; and courageous and bold as well freedom fighter Dattoba Tambat was her husband who was very much indulged in the work of Prajaparishad. She was against the British and iheir rule. She always wanted freedom for her nation and the British to quit India. When the people used to come to their home for the reason of Prajaparishad. She always was interested in the activity of freedom fight. She plunged into the freedom fight in 1942. All the volunteer of Prajaparishad were arrested.

As an answer to it, she gave bangles and blouse piece as a gift to the Magistrate Court in Shaneevar Chowk in Kolhapur. Then she was arrested for this reason.

We see the statue of Ch. Shivaji Maharajonce upon a time there was a statue of Lord Wilson, the ex- Governor of India. Both Jayabai Haveri and Bhagirathibai Tambat put pitch on the statue courageously. Both were arrested and jailed. After returning from jail they helped the other volunteers hidden. After getting freedom she thrown herself into the Sanyukta Maharashtra fight with Vimaltai Bagal – the social worker.

3) Kashibai Appaji Hanabar :

Kashibai's son 'Mallu' was the headache' to the Britishers in the freedom fighting in 1942. He caused terror, fear in the mind of the British.

The British tried to find out Mallu, but they could not. At last they picked up Kashibai to the police station, tried to abuse her. They enquired about Mallu's information i.e. Where he lived, when he came, etc. Kashibai answered the British that she hadn't seen him nearly four years a she didn't know anything about her son. Then Kashibai was brutally tortured by the British. She was naked, beaten by leather belt, thrown on the wall. Even her family members were also brutally tortured.

Later on she &her husband was also tortured a abused in a very in human manner. They put chilli powder in her private part but didn't say anything. The people felt ashamed and didn't see the discrimination. At last Kashibai at her husband were relieved. While returning back home, Kashibaibleeded, stood in the water but later on her child was aborted in the waliv. The incident surged through India. Sane Guruji pleaded Kashibai to forgive them.

4) Mrs. Indumati Korgaonkar :

She was hardly 12 years old the freedom fight of 1942. Indian leaders used to visit her house in Sawantwadi. She was from a renowned family. She revolted against the British with her relative women as well as her neighbours. She was always ahead in the work of Prabhatferi. She was arrested two times – in Vengurla as well as in Sawantwadi when she was in the court before the judge. Mr. Chandrachud asked the people but he felt interesting and asked Indubai about her age, education etc. He was about to slap her, but Little Indumati quietly showed he cheek to the judge, but the judge was ashamed, but proud of Indumati. Later on she was relieved for her education. Immediately she joined the freedom struggle and was sent to Jail for two months. In Ratnagiri jail, she met Akka Dhadam with her four daughters.

Conclusion:

In freedom struggle Indian women who fought for freedom with men i.e. Information taken from. Prof. "Bharatiyaswatantryaladhyatil Striyancheyogadan."Written by Prof. Shyamyedekar about Jayabai Haveri, Kashibai Appaji Hanbar, Bhagirathi bai Tambat. More

information is taken from the books 'TeMantarlele Divas :Mahila Swatantrya Sainikanche Patrarupi Anubhav Kathan' written by Dr. RohiniGavenkar& Dr. Nanda Apte. Besides this book "Swatantrya Sainikancha Charitrakosh" published by Maharashtra Government is also used.

Reference:

1. Shyam Yedekar- "Bharatiyaswatantryaladhyatil Striyancheyogadan."
2. Rohini Gavenkar& Dr. Nanda Apte - 'Te Mantarlele Divas : Mahila Swatantrya Sainikanche PatrarupiAnubhav Kathan'
3. "Swatantrya Sainikancha Charitrakosh" published by Maharashtra Government

S & COMMERCE * NIGH
HAPUR

■ वर्ष ३५ वे ■ अंक २२ वा ■ फेब्रुवारी - २०१८ ISSN 2230-7745

मराठी समाजशास्त्र परिषद

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे मुखपत्र

मराठी समाजशास्त्र परिषद

(नोंदणी क्र. महाराष्ट्र/२७-८३ औरंगाबाद)

द्वारा : समाजशास्त्र विभाग, नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स, कोल्हापूर

* कार्यकारी मंडळ *

(२०१६-२०१८)

अध्यक्ष	:	डॉ. महेंद्रकुमार जाधव
सचिव	:	डॉ. अरुण पौडमल
कोषाध्यक्ष	:	डॉ. संध्या पौडमल
कार्यकारणी सदस्य	:	डॉ. ज्ञानेश्वर चव्हाण स्वा. रा. ती. म. विद्यापीठ, नांदेड
		डॉ. ज्योती पोटे मुंबई विद्यापीठ, मुंबई
		डॉ. सिंधु काकडे एस. एन. डी. टी. विद्यापीठ, मुंबई
		डॉ. प्रशांत सोनवणे उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव
		डॉ. दीपक पवार रा. सं. तु. म. विद्यापीठ, नागपूर
		डॉ. सुभाष पवार सं. गा. म. विद्यापीठ, अमरावती
		डॉ. विकास शेवाळे सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ, पुणे
		प्रा. दिवाकर उराडे गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली.
		प्रा. प्रविण घोडेस्वार य. च. म. मु. विद्यापीठ, नाशिक.

ARTS & COMMERCE COLLEGE KOLHAPUR

ISSN 2230-7745

समाजशास्त्र संशोधन पत्रिका

मराठी समाजशास्त्र परिषद

वर्ष ३५ वे अंक - २२ वा फेब्रुवारी-२०१८ किंमत रु. ५०/-

■ मुख्य संपादक ■
डॉ. महेंद्रकुमार जाधव

■ कार्यकारी संपादक ■
डॉ. अरुण पौडमल डॉ. संध्या पौडमल

■ अतिथी संपादक ■
डॉ. शैलजा माने डॉ. प्रतिभा देसाई डॉ. नलिनी बोरकर

■ संपादक समिती सदस्य ■
डॉ. संजय कोळेकर डॉ. अशोक गायकवाड डॉ. शाम सोमवंशी डॉ. प्रतिभा अहिरे
डॉ. सुजाता गोखले डॉ. नंदा कंधारे डॉ. अर्जुन जाधव प्रा. प्रविण घोडेस्वार

■ संपादकीय सल्लागार मंडळ ■
डॉ. एस.एन. पवार डॉ.पी.के. कुलकर्णी
डॉ.पी.एम. शिंदे डॉ.डी.सु. मोटे

मराठी समाजशास्त्र परिषदेच्या आजीव सदस्यांना अंक विनामूल्य

टीप: या अंकातील लेखकांनी व्यक्त झालेली मते त्या त्या लेखकांची आहेत. त्या मतांशी मराठी समाशास्त्र परिषद अथवा संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही.

■ संपर्क पत्ता ■
सचिव, मराठी समाजशास्त्र परिषद,
द्वारा: समाजशास्त्र विभाग, कोल्हापूर महानगरपालिकेचे,
यशवंतराव चव्हाण (के.एम.सी.) कॉलेज, गंगावेश, कोल्हापूर ४१६ ०१२
www.mspmonline.com
E-mail: marathisocio@gmail.com

समाजशास्त्र संशोधन पत्रिका या वार्षिक नियतकालिकाचे स्वामित्त्व व इतर बाबींविषयी निवेदन

(नियतकालिकांच्या नोंदणीसंबंधी नियम ८ प्रमाणे)

१. प्रकाशन स्थळ	:	मराठी समाजशास्त्र परिषद द्वारा–समाजशास्त्र विभाग, नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स, आझाद चौक, कोल्हापूर–४१६००२
२. नियतकाल	:	वार्षिक (ISSN)
३. मुद्रकाचे नांव	:	डॉ. अरुण पौडमल
राष्ट्रीयत्त्व	:	भारतीय
पत्ता	:	कोल्हापूर महानगरपालिकेचे, यशवंतराव चव्हाण (केएमसी) कॉलेज, गंगावेश, कोल्हापूर–४१६ ०१२.
४. मुद्रण स्थळ	:	श्रीकांत कॉम्प्युटर्स ॲण्ड पब्लिशर्स, कोल्हापूर.
५. प्रकाशकाचे नाव	:	डॉ. अरुण पौडमल
राष्ट्रीयत्त्व	:	भारतीय
पत्ता	:	स्तंभ क्र. ३ प्रमाणे
६. संपादकाचे नाव	:	डॉ. महेंद्रकुमार जाधव
राष्ट्रीयत्त्व	:	भारतीय
पत्ता	:	नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स, आझाद चौक, कोल्हापूर–४१६००२
७. मालकाचे नाव	:	मराठी समाजशास्त्र परिषद
पत्ता	:	वरीलप्रमाणे

मी, डॉ. अरुण पौडमल असे जाहीर करतो की, वर दिलेला तपशील माझ्या माहिती व समजुतीप्रमाणे खरा आहे.

डॉ. अरुण पौडमल

प्रकाशक व मुद्रक

या अंकाचे लेखक

डॉ. विजय मारुलकर
निवृत्त प्राध्यापक,
एस. एन. डी. टी. महिला विद्यापीठ.

डॉ. सुनंदा भद्रशेटे
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,
उदगिर, जि. लातूर.

डॉ. किशोर राऊत
संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ,
अमरावती.

डॉ. तात्याराम सोंळगे
स्वा. सावरकर महाविद्यालय,
बीड.

डॉ. दादासाहेब मोटे
आर्टस् ॲण्ड सायन्स् कॉलेज,
अंबड, जि. जालना.

श्री. अविनाश वर्धन
संशोधक विद्यार्थी, शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापूर

प्रा. राजकुमार भगत
राजीव गांधी महाविद्यालय, सडक/अर्जुनी,
जि. गोंदीया.

प्रा. संतोष निलाखे
मिनलबेन मेहता कॉलेज,
पाचगणी, ता. महाबळेश्वर, जि. सातारा

डॉ. भरतसिंग पटले
कला व वाणिज्य महिला महाविद्यालय,
देवपूर, जि. धुळे.

प्रा. विनोद निरभवणे
कै. बी. आर. डी. कला व वाणिज्य
महिला महाविद्यालय,नाशिक रोड.

प्रा. हर्षला सुर्यवंशी
के. एस. के. डब्ल्यु सिडको कॉलेज,
नाशिक.

डॉ. शेवगोबा ढोले
श्री दत्त कला व वाणिज्य महाविद्याल,
हदगाव, जि. नांदेड.

डॉ. ज्योती पोटे
पी. डी. कारखानीस महाविद्यालय,
अंबरनाथ.

डॉ. पी. टी. शेळके
न्यू आर्टस्, कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज,
अहमदनगर.

डॉ. सतिश धनवडे
एस. एम. आय. के. बी. के. ए. के.
महिला महाविद्यालय, नाशिक.

डॉ. सुधा खडके (कडू)
लोकनायक बापूजी अणे
महिला महाविद्यालय,यवतमाळ.

डॉ. अरुण पौडमल
सचिव, मराठी समाजशास्त्र परिषद, कोल्हापूर.
२७ व्या मराठी समाजशास्त्र परिषदेच्या (जळगाव)
अधिवेशनाचा अहवाल

किंमत : ₹ 50/-

2016-17 43-49

ISSN 2277-7644

Research Journal for
Renaissance in Intellectual Disciplines

June 2017

RENAISSANCE

Chief Editor
Dr. Khanderavaji S. Kale

June 2017

ISSN – 2277-7644
International Registered, Recognized & Refereed
Research Journal in Higher Education For all Subjects.

RENAISSANCE

Research Journal For Renaissance in Intellectual Disciplines

Vol – 21, Issue- 1.
Year – 6 (Quarterly)
(April., to June.,-2017)
Estd on- April. 2012

Editorial Office

'Hira'
1320, Laxmi Nagar
Ganeshpur, Behind Sound Cast Factory, Hindalga, Belgaum. Dist- Belgaum-591108. Karnataka (India)

Contact :

09481402640

Email-
khanderavaji@rediffmail.com
shakyadeeta26@gmail.com
rrr.journal@gmail.com

WEBSITE:

www. rrrjournals.com

Price Rs. 300/-

CHIEF EDITOR

Dr. Khanderavaji S. Kale
'HIRA' 1320,Laxmi Nagar Ganeshpur.
Hindalga,Belgaum.(KARNATAKA)

EDITOR

Dr. Baumaun Prceda
Prof. of Education,
Board of Education, Bangkok. Thailand

Dr. Rupesh Devan
Prof. of Physics,
National Dong Hwa Uni.,Taiwan.

Dr. Dattatray More
Director of BCUD,
Shivaji University, Kolhapur.

Dr. Jagan Karade
Prof. of Sociology,
Shivaji University, Kolhapur,(M.S.)

Dr. M. S. Rajput
Research Coordinator
J. J. T. University Jhunjhunu, (Raj)

Dr. Vilas Kharat
Prof. of Mathematics,
Pune University, Pune.(M.S.)

CO - EDITOR

Dr. Ramchandra Nilpankar
Principal,
College of Arts, Kowad, Kolhapur.

Appasaheb Kamble
Dept. of History,
R. B. Madkholkar College, Chandgad,

Dr. Deepak Kamble
Head, Dept. of Geography,
Vivekanand College, Kolhapur

Ajaykumar Kamble
Head, Dept. of Hindi,
Art's & Commerce College, Kowad,

Dr. Arun Kumbhar
Head, Dept. of Economics,
Art's & Commerce College, Nesri

Hanumant Kuchekar
Dept. of Political Science,
Art's & Commerce College, Nesri

Dr. Vishnu Patil
Head, Dept. of History,
Art's & Commerce College, Kowad

Jyant Ghadge
Head, Dept. of Sociology,
Dr. Ambedkar College, Pethwadgaon

Dr. Ranjna Suryawanshi
Dept. of Hindi,
R. B. Madkholkar College, Chandgad

Vasant Kadam
Head, Dept. of Sociology,
Vivekanad College,Kolhapur

CONTENTS

1. Dr. Asif Babalal Waghwale
New Trend Of Foreign Direct Investment In India

4. Amar V. Godbole & Dr. U. M. Deshmukh
A Review Of Literature On Marketing Strategies Of Cellular Service Providers In India

7. Patil Jayashree P.
Farmers Suicides in Maharashtra

11. Archana Dadarao Pole
Empowerment Of Tribal Women Through Agripreneurship Development

14. Mr. Prakash Howal & Dr. Anilkumar wavare
Wage Discrimination of Unorgnised Female Housemaids

21. Supriya Mane
The Poetry Of Kamala Das: Search For Unknown

25. Madhavi Sarwade
Welfare Of Nomadic Tribal Children In Maharastra State

32. Supriya Y. Mithare
A Review Of Literature On Work Life Balance Of Emsployees

35. Dr. Sou. Shobha Arun Paudmal
Mobile Banking In India: An Overview

40. D. K. Kamble
Image of motherhood in the Autobiography of Maya Angelou's I Know Why the Caged Bird Sings

43. प्रा.बनसोडे एस. एस.
मुस्लीम समाज–एक वास्तविक अभ्यास

47. प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव
जगाला शांतीचा महान संदेश देणारे:महाकारूण्य भ.गौतम बुध्द

Page No-47 to 49
Research Paper-
Research Journal for
Renaissance in intellectual Discipline
ISSN 2277-7644,Vol-21, Issue-1, April., to June.,-2017 (Quarterly)

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE * NIGHT * KOLHAPUR

जगाला शांतीचा महान संदेश देणारेःमहाकारूण्य भ.गौतम बुध्द

प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस ॲन्ड कॉमर्स, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

आर्य संस्कृतीच्या वाढत्या प्रसाराबरोबर तिच्यात दोष उत्पन्न झाले. या जगात चांगल्या वाईटाचे बेमालून मिश्रण झालेले आढळते. आरंभी लहान दिसणारे दोष हळूहळू बळावत जातात. आर्यांनी आर्येतरांना आपणामध्ये समाविष्ट करून घेतले. दिवसेंदिवस हा संमिश्रणाचा प्रकार वाढत्या प्रमाणावर होत गेला. धर्मासंबंधी होणारे यज्ञ याग कालातराने इतके वाढले की, यज्ञाच्या निमित्ताने अनेक पशूंचा वध होऊ लागला, कर्मठपणाचे स्तोम माजले व मूळ धर्मतत्वाचा लोप होऊ लागला. यज्ञाने मोक्ष मिळतो अशी समजूत झाल्यामुळे स्वतःचे आचरण शुध्द ठेवण्यापेक्षा यज्ञ करण्यातच लोक अधिकच गुरफटू लागले. दिवसेंदिवस वाढत चाललेल्या या कश्त्रीमतेमुळे खऱ्या विचारवंताचे समाधान होईना. यावर उपाय म्हणून उपनिषदकारांनी तत्वज्ञानाने विद्वानांची तहान भागली तरी ते सामान्य जनतेच्या आटोक्या बाहेरचे होते. सामान्य जनतेस यज्ञाचे कर्मकांड असमाधानकारक वाटे व उच्च तत्वज्ञान कळत नसे. अशा स्थितीत एखादया मधल्या व सुलभ अशा विचारसरणीची समाजास भूक होती.

जातिजातितील विभाग, त्यांच्या नियमनातील विषमता, मुळ धर्मतत्वाचा लेप, आचारांचा कश्त्रिमपणा व तत्वचिंतनाची गुढता या सर्व दोषामुळे बहुजन समाज एक प्रकारच्या घुटमळणाऱ्या अवस्थेत असता महाकारूण्य तथागत गौतम बुध्दांचा जन्म झाला. लहानपणापासून ते धनुर्विधेत पारंगत होते. पुढे त्यांचे लग्न यशोधरा नावाच्या राज्यकनेशी झाले पुढे त्याना एक पुत्र झाला त्याचे नाव राहूल ठेवले. राजैश्वरांचे सुखोपभोग अनुभविणारा सिध्दार्थ वास्तवीक ख्याली खुशालीत दंग असायचा, पण सिध दार्थाचे मन या बाबतीत फारसे रमले नाही. यज्ञाने मोक्ष कसा मिळेल ? यज्ञात होणारी हत्या देवास आवडते काय ? समाज नियमनातील अन्याय देवास संमत आहे काय ? आदी गोष्टींचा ते रात्रंदिवस विचार करी. मनाचे समाधान न झाल्यामुळे त्यांची तळमळ वाढू लागली. शेवटी असे सांगतात की, एके दिवशी एका तरूणाचे प्रेत व एका महारोग्याची दशा पाहून आयुष्य हे नाशिवंत आहे असे ठरवून त्यांनी संसार सुखावर लाथ मारली व अरण्याचा रस्ता धरला. अरण्यातील एकांतवासात त्याने सहा वर्षे अध्ययनात व तपश्चर्येत घालविली. तरी त्यांची तळमेळ शांत होईना. शेवटी ते

गयेस आल्यावर एका झाडाखाली शांतपणे चिंतन करीत बसले. काही झाले तरी जागतिक दुःखाच्या कारणांचा छडा लावल्याखेरीज येथून हलणार असा त्यानी निश्चय केला. अशा स्थितीत शेवटी त्याना दिव्यज्ञान स्फूर्त होऊन त्यांची तळमळ शांत झाली. ज्या वक्षावली बसून सिध्दार्थाला दिव्य ज्ञान झाले त्यास 'बोधिवक्ष' असे म्हणतात. त्याच्या खाणाखुणा अद्यापही बुध्दगयेस कायम आहेत. त्यामळे बुध्दंगया जगातील सर्व बौध्द धर्मीयांचे पवित्र ठिकाण आहे. हयाच बोधिवक्षांची एक फांदी अशोकाची कन्या संघमित्रा हिने बौध्द धर्माच्या प्रसारार्थ सिंहलद्वीपात (सिलोन) अनुराधापूर येथे लाविली.

मोक्ष किंवा निर्वाण हे कोणत्याही बाहयोपचारानी प्राप्त होत नाही. शुध्दाचरण दया, प्रेम, परोपकार व अहिंसा या गुणावर मोक्ष मिळविणे अवलंबून आहे. सर्व धार्मिक कृत्यापेक्षा सदवर्तन हेच जास्त श्रेष्ठ आहे. या गोष्टी बुध्दास कळून आल्या. स्वतःच्या अंतकरणात बिंबलेले हे तत्व ते लोकास शिकवू लागले. त्यांचा उपदेशाचे सुत्र १. जिवीत दुःखमय आहे २. त्या दुःखाला कारण आहे. ३. त्या दुःखाचा शेवट झाला पाहिजे. ४. यासाठी योग्य मार्ग शोधला पाहिजे. लोभ किंवा आसक्ती हे दुःखाचे मूळ होय. या वृत्ती नाहिशा झाल्यावर दुःखाचा शेवट होईल. बुध्दाने आपल्या धर्माचा प्रसार करताना पुढील गोष्टीवर विशेष भर दिला. १. स्त्रीयांना बुध्द संघात भिक्षूणी म्हणून प्रवेश करण्याची परवानगी दिली अशा रीतीने त्याना वाटल्यास जन्मभर संन्यस्त वृत्तीने व स्वतंत्रतेने राहण्याचा मार्ग खुला केला. २. तसेच आपल्या पंथात प्रवेश करणाऱ्यांच्या वर्णाचा उच्चनीच भाव टाकून समतेची स्थापना केली. कोणत्याही जातीचा मनुष्य त्यांच्या धर्मात जावू शके व तसे न झाल्यावर त्याची जात नष्ट होई. ३. धार्मिक तत्वांची षिकवण संस्कृत सारख्या अवघड व थोडयाच लोकास समजत असलेल्या भाशेतून करण्याऐवजी तत्कालीन लोकभाशा जी 'पाली' तिच्याद्वारे करण्यास त्यानी सुरूवात केली. यामुळे त्यांच्या शिकवणूकीचा झपाटयाने प्रसार झाला. त्यांनी आपल्या अनुयायांना संन्यस्त वृत्तीने राहून संघ बनविण्याचा उपदेश केला. अशा रितीने धर्म प्रसाराच्या कामी सन्यासी भिक्षूंची संस्था अस्तित्वात आणण्यात त्यांचे चातुर्य दिसुन येते.

प्रत्येक अनुयायाने बुध्द धर्म व संघ या त्रयीपर दश्ढ विश्वास ठेवावयाचा असा बौध्द धर्माचा कडक दंडक आहे. अक्रोधाने क्रोध जिंकावा असाधुस (दृष्टास) साधुत्वाने जिंकावे, इतकेच काय पण आपले वाईट इच्छिणाऱ्याचेही भले करावे अशी बुध्दाची शिकवण होती. प्रत्येकाने आपले शील उच्च ठेवावे, संन्यस्त वश्त्तीने राहावे व तात्विक विषयाचे चिंतन करावे हे बुध्दांच्या शिकवणूकीचे सार होय. या त्रयीस बौध्द वाङ्मयात शील, समाधी व प्रज्ञा अशा संज्ञा आहेत. कालांतराने बुध्दांच्या मश्त्यूनंतर लौकरच हिंदू धर्मापासून बौध्द धर्मियाची फारकत झाली व बौध्द धर्माचा मोठया झपाटयाने प्रसार झाला. बौध्द संन्यासी बहुजन समाजास कळणाऱ्या साध्या गोष्टीच्या रूपाने आपली शिकवण देत. त्यामुळे ती अधिकच परिणामकारक होई. कर्मठपणास व सामाजिक विषमतेस कंटाळलेल्या लोकांना बौध्द धर्माची साधी व सदाचरणावर जोर देणारी तत्वे पटू लागली. शिवाय भुध्द आर्याच्या श्रेष्ठत्वा विरूध्द बंड करण्यास बौध्द धर्माचा राजरोस स्विकार करण्यासारखे दुसरे कोणते सुलभ साधन आर्येतराना उपलब्ध असणार? तशात बौध्द भिक्षूनी संन्यस्त वश्त्तीने त्याचा प्रसार केल्यामुळे बौध्दांचा धर्मतत्वास स्वार्थत्यागाचे तेज चढले. शिवाय अशोकादिकानी मनावर घेतल्यामुळे बौध्द धर्मास भरपूर राजाश्रय मिळाला. इतकी कारणे असल्यावर हा धर्मप्रसार झपाटयाने झाला. वेळोवेळी बौध्द लोक आपली धर्म परिषद बोलावून वादग्रस्त प्रश्नांचा उलगडा करून घेत. या वैशिष्टय पूर्ण कारणाने बौध्द धर्मियाची लोकप्रियता वाढली.

पुढे त्याच्या मश्त्यूनंतर त्यांच्या अनुयायानी राजगश्ह येथे आपली एक मोठी सभा बोलावून बुध्दांचा सर्व उपदेशांचा संग्रह केला. त्या संग्रहास 'त्रिपिटिक' हे नाव आहे याचे धम्म, विनय व अभिधम्मात बौध्द तत्वज्ञान ग्रथित केलेले आहे.

ARTS & COMMERCE NIGHT COLLEGE KOLHAPUR

संदर्भ ग्रंथ :-

१) डॉ. बी. आर. आंबेडकर : बुध्द, मार्क्स आणि धम्माचे भवितव्य : अनुवादक - रत्नाकर गणवीर, सुगत प्रकाशन, नागपूर १७, ६ डिसेंबर २००२

२) भारतरत्न भिमराव रामजी आंबेडकर : भगवान बुध्द आणि त्यांचा धम्म अनुवादक : घनशाम तळवटकर, प्राचार्य म.भि. चिटणीस, शां. शं. मुंबई १९७०

३) चां. भा. खैरमोडे : डॉ. भिमराव रामजी आंबेडकर, खंड १२, सुगावा प्रकाशन, पुणे -३०, दुसरी आवत्ती, ७ ऑक्टोंबर २०००

४) डॉ. प्रदीप आगलावे : समाजशास्त्र डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, सुगावा प्रकाशन,पुणे २००१

५) अनुवादक डॉ. विमल किर्ती : मिलिंद प्रश्न, क्षीतीज पब्लिकेशन, नागपूर, २००१

६) डॉ. धनराज डाहाट : आंबेडकर ग्रंथायन संकेत प्रकाशन, नागपूर २००५

7) Dr. B.R. Ambedkar, Riddles in Hinduism (Dr. Ambedkar Writing and Speeches, Vol. 4 Education Deptt., Govt. of Maharashtra, 1987.

2018-19

An Introduction of

Amit Educational and Social Welfare Society (Regd.)

Amit Educational and Social Welfare Society (AESWS) is a professional body, germinated in the year 2004 with a view to serve the society in realizing its objectives of Social Welfare. AESWS ever since its inception has been instrumental in organising various training and professional programmes for the weaker sections of society.

Amit International Impact Factor Journals
(Regd. Ministry of MSME Govt. of India)
Contact #09837208441,
visit www.amitdeliberativeresearch.com

DELIBERATIVE RESEARCH

R.N.I. No. PBIL/2009/27081

ISSN : 0976-1136

ICRJIFR, IMPACT FACTOR 9.8901

Indexed ProQuest

Peer Refereed International Multidisciplinary Quarterly Bilingual

DELIBERATIVE RESEARCH JOURNAL

Editor-in-Chief
Amit Jain
M.Com, Ph.D, MSW, LLB

Vol.- 39
Issue. - 39, July-Sept., 2018

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE * KOLHAPUR

DELIBERATIVE RESEARCH
(A Quarterly Bilingual International Journal)

INDEX

S.No.	Research Papers	Pages
1.	वित्तीय समावेशन तथा ग्रामीण विकास डॉ. सुधा जायसवाल	1-5
2.	Birth Registration: The "First Right" Of The Child Dr. Manish Dwivedi	6-13
3.	पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं का सबलीकरण : एक सामाजिक अध्ययन डॉ. महेंद्रकुमार जाधव	14-18
4.	भारत में लोकतंत्र–ट्रैक 2 Democracy In INDIA & Track 2 प्रताप दान	19-21
5.	राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका एवं सहभागिता डॉ. कंचनप्रभा	22-24
6.	Current Situation : Higher Education In India: Reflections On Some Critical Challenges Sanju Gond	25-32
7.	Cyanosilylation Of Aldehydex Catalyzed By Sodium Hydroxide Subhash	33-37
8.	FCRA Formality And Policy Damini Soni	38-43
9.	आधुनिक (20वीं शताब्दी के) संस्कृत काव्यों में राजनीति परक चेतना डा. अंजना मिश्रा	44-52
10.	Autobiographical Note In The Poetry of Ruskin Bond Dr. Vishal	53-55
11.	ग्रामीण समाज में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की भूमिका Dr. Madhu Tyagi	56-61
12.	Participation Of Women In Panchyati Raj Institutions-A Sociological Study Of Eastern Uttar Pradesh. Sanjay Kumar Gaurh	62-65
13.	शिक्षा का अधिकार : उत्पत्ति, अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ डॉ० भेदपाल गंगवार	66-75

ISSN : 0976-1136

पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं का सबलीकरण : एक सामाजिक अध्ययन

डॉ. महेंद्रकुमार जाधव
अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस एंड कॉमर्स, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

सन 1992 में संविधान की 73 वें संशोधन के अनुसार पंचायती राज व्यवस्था में महिलाएँ, अनुसूचित जाति – जनजाति, अन्य पिछडा वर्ग तथा दुर्बल घटकों को आरक्षण दिया। इसारी लोकशाही विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया में वंचित घटक पहुंचे, नतीजतन राजनीतिक प्रक्रिया में इन घटकों का सहभाग बढा। राजनीति में अधिकारी मिलने से राजनीतिक दृष्टि से वंचितों का सबलीकरण होने में बढोत्तरी हुई।

संशोधन की पद्धतियाँ : प्रस्तूत शोधनिबंध सहायक संदर्भों पर आधारित है। इसमें मुख्यतः विभिन्न ग्रंथ, सरकार की रिपोर्ट, वेबसाईट आदि से तथ्यों का आधार लिया है।

संशोधन का उद्देश्य : 1. महिलाओं को सामाजिक क्षेत्र में अधिकार मिलने से क्या सबलीकरण में लाभ हुआ या नहीं? इसका अध्ययन करना। 2.महिला सबलीकरण की विभिन्न बाधाओं का अध्ययन करना? 3. महिलाओं का राजनीति में सहभाग बढाने हेतु कौन–कौनसी सूझाव हैं? इसका अध्ययन करना।

महिला सबलीकरण – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विश्व के अन्य समाजों की तरह भारतीय समाज में भी पुरुष प्रधान संस्कृति निहित है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से जीवन के हर क्षेत्र में सत्ता एवं अधिकार पुरुषों के हाथों में रहा है। महिलाओं को सत्ता और अधिकारी से वंचित रखा है। नारी का कार्यक्षेत्र सिर्फ 'चूल्हा एवं बच्चा' तक ही माना गया। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक अधिकारों को ठुकराने से महिलाओं का स्थान पुरुषों की तुलना में निम्न रहा। उन्हें अज्ञानी, अनपढ एवं अबला माना गया।

प्राचीन तथा मध्ययुग के भारत में राजसत्ता थी। उस दौरान राजनीतिक क्षेत्र में पुरुषों का ही वर्चस्व था। महिलाओं को राजनीति में हिस्सा लेना मना था। राजा की मृत्यु के बाद यदि राजपुत्र की उम्र कम हो तो विधवा रानी राजपुत्र की गद्दी पर बैठकर राजकारोबार संभालती थी। उन्हें प्रधान, सेनापति, सरदार तथा पुरुष अधिकारों की सलाह माननी पडती थी। रजिया सुलतान, चितौड की रानी कर्नावती, अहमदनगर की चांदबिबी, म्हैसूर की रानी चैनम्मा, बांग्ला की रानी भवानी आदि कुछ महिलाओं ने राजसत्ता संभाली है। साथ ही जिजामाता, अहिल्याबाई होळकर, आनंदीबाई पेशवा, तारारानी, झांसी की रानी आदि महिलाओं ने तत्कालीन राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई है। इन कुछ उदाहरणों को छोडकर प्राचीन काल से अँग्रेजों की सत्ता शुरु होने तक भारतीय महिलाएँ राजनीति से दूर ही रही है।

अंग्रेज सरकार के कार्यकाल में महिलाओं को शिक्षा का अवसर मिला। पढी–लिखी महिलाएँ नौकरी तथा व्यवसाय करने लगीं। समाज और राजनीति में हिस्सा भी लेने लगीं। महात्मा गांधी जी के हाथों में स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व आने के बाद महिलाओं का राजनीति में सहभाग धीरे–धीरे बढने लगा। ॲनी बेझेंट, सरोजिनी नायडू जी ने राष्ट्रीय सभा के अध्यक्षता की बागडोर संभाली. सरलादेवी, मादाम कामा जी ने

क्रांतिकारी आंदोलन में हिस्सा लिया। राजकुमारी अमृत कौर तथा अन्य दो महिलाओं ने गोलमेज परिषद में अपना सहभाग दर्शाया। सन 1937 के आँचलिक चुनावों में तकरीबन 50 महिलाओं को जीत हासिल हुई। विजयालक्ष्मी पंडीत मंत्री बनीं तथा अनुसयाबाई काळे और मिलानी सिप्पी का विधानसभा की उपसभापति पद पर चयनित हुए। सन 1942 के आंदोलन में अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, उषा मेहता आदि महिलाओं ने भूमिगत रहकर आंदोलन चलाया। आजाद हिंद सेना के कॅप्टन लक्ष्मी के नेतृत्व में महिलाओं का दल गठित हुआ। इस तरह विरासत ने राजनीति से बाहर किए महिलाओं ने राजनीति में अपना सक्रिय योगदान देना शुरु किया। यह योगदान महज कुछ उच्चशिक्षित और शहरी महिलाओं तक ही सीमित रहा। सामान्य महिलाएँ राजनीति से दूर ही रहीं।

स्वाधीनता के बाद संविधान में पुरुषों के साथ महिलाओं को भी समानता का राजनीतिक अधिकार दिया गया। इससे महिलाएँ राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय हिस्सा लेने लगीं। विधायक, सांसद, मंत्रियों तक की बागडोर संभालने लगीं। पंचायती राजव्यवस्था में एक भी महिला उम्मीदवार चुनाव नहीं जीतने पर महिला सदस्य के रुप में स्वीकृत करने का प्रावधान कई राज्यों ने किया। स्वाधीनता के बाद राजनीतिक अधिकार मिलने तथा 50 फीसदी आबादी महिलाओं की होने के बावजूद महज कुछ महिलाओं को ही राजनीति में [illegible] मिलते नहीं। [illegible] में [illegible] महिलाओं को [illegible] अधिकारियों के निर्णयों का ही साथ देना पडता था। संक्षेप में स्वाधीनता के बाद भी महिलाओं का राजनीति में सहभाग कम ही था। इसे गौरतलब करते हुए महिलाओं का राजनीति में सहभाग बढाने, राजनीतिक दृष्टि से उन्हें सक्षम बनाने के लिए उन्हें आरक्षण देने की बात चली। नतीजतन सन 1992 में संविधान के 73 वें संशोधन में पंचायती राज तथा 74 वें संशोधन में नगर के स्थानीय निकायों में 1/3 सीटें महिलओं को आरक्षित की गई। परिणामस्वरुप महिलाओं सबलीकरण में बढोत्तरी हुई।

महिला आरक्षण :

विधानसभा में महिलाओं के आरक्षण की बात अंग्रेजों के सत्ताकाल में भी चली थी, लेकिन इस निर्णय से अंग्रेजों के 'तोडो और राज करो' की नीति को बढावा मिलेगा, साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन में फूट होगी, इस डर से महिला आरक्षण को तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं ने विरोध किया। बाद में सन 1931 में ऑल इंडिया वूमेन्स इंडियन एसोसिएशन, नेशनल कांउसिल ऑफ वूमेन आदि महिला संगठनाओं ने वोट का अधिकार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, प्रशासकीय पद आदि के अधिकार महिलाओं को देने की मांग की, लेकिन लोकशाही व्यवस्था में आरक्षण की मांग समानता के अधिकार के खिलाफ होने से महिला प्रतिनिधियों ने आरक्षण की मांग को ठुकराया। डॉ. सरोजिनी नायडू जी ने आरक्षण को दोयम दर्जा का करार दिया। सन 1937 में प्रशासन सुधार आयोग व्दारा गठित जैन समिति ने महिला और अनुसूचित जाति, जनजाति के लिए पंचायती राजव्यवस्था में आरक्षण देने की सिफारिश की। भारतीय महिलाओं का स्तर जानने के लिए सन 1974 में गठित समिति को दृष्टिगोचर हुआ कि संसद, विधानसभाएँ तथा पंचायतों में महिला सहभाग बढाने के लिए 'महिला आरक्षण' की सिफारिश की। इसके बाद महिला आरक्षण की मांग ने जोर पकडी और सन 1992 में संविधान के 73 वें संशोधन में पंचायती राजव्यवस्था में और 74 वें संशोधन में नगर निकाय स्थानीय संस्था महिलाओं को 1/3 सीटें आरक्षित रखने का प्रावधान किया। साथ ही सरपंच गांव की मुखिया, पंचायतों में महिला सदस्यों की संख्या बढी। महिलाओं को राजनीतिक नेतृत्व करने का मौका मिला। नतीजतन पंचायती राज का पुरुषप्रधान चेहरा बदल गया और महिला सबलीकरण की नींव डाली गई।

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

महिला आरक्षण का लाभ :

1. राजनीति में सहभाग बढा : संविधान के 73 वें संशोधन के अनुसार 24 अप्रैल 1994 से नई पंचायती राजव्यवस्था शुरु हुई और इसमें महिलाओं की संख्या बढी। देश में सात लाख 68 हजार 592 महिला ग्रामपंचायत सदस्य, 35 हजार 282 महिला पंचायत समिति सदस्य और चार हजार 30 महिला जिला परिषदों की सदस्य बनी। महाराष्ट्र राज्य में एक लाख 182 महिला ग्रामपंचायत, तीन हजार 524 महिला पंचायत तथा 567 महिला जिला में सदस्य बनीं।

2. **नेतृत्व का अवसर :** महिला आरक्षण की वजह से ग्रामीण महिलाओं को पंचायती राजव्यवस्था में, साथ ही विकास कार्यक्रम तथा कार्यवाही कार्यक्रमों में नेतृत्व करने के अवसर प्राप्त हुए। आरक्षण के कारण देश की 75 हजार महिला सरपंच, लगभग एक हजार 700 महिला पंचायत समिति की सभापति, 158 महिला जिला परिषदों की अध्यक्ष बनीं। महाराष्ट्र में आठ हजार 500 महिला सरपंच, 98 महिला पंचायत समिति की सभापति और 10 महिला जिला परिषदों की अध्यक्षता के रुप में बागडोर संभाली है।

3. **भय, संकोच एव उदासी दूर :** राजनीति हमारे बस की बात नही है। यह क्षेत्र पुरुषो का, उनके वर्चस्व का तथा गुंडागिरी का क्षेत्र है। इस भय से महिलाएँ राजनीति से दूर [illegible] पंचायती राज में दर्शाया। यह महिलाएँ सभा में उपस्थित नहीं, बल्कि कागजातों पर घर बैठेही मुहर लगाकर हस्ताक्षर किया करती थीं। फिलहाल आरक्षण में महिलाओं का सहभाग 1/3 होने से उनका भय, संकोच एवं उदासी की भावना दूर हुई। पढी-लिखी महिलाएँ आत्मविश्वास के साथ पंचायतों में संचार करने लगीं हैं। कुछ महिलाएँ पूरी ताकत के साथ पुरुष वर्चस्व को चुनौतियाँ दे रही है। राजनीतिक क्षेत्र में वे अपना स्थान बना रही हैं। कर्नाटक के पंचायतों में महिला प्रतिनिधियों की संख्या 40 फीसदी से भी आगे है। गुजरात के कुछ महिलाओं ने ग्रामसभा में ही पुरुष वर्चस्व को चुनौती देते हुए गांवो में विकास योजनाएँ चलाई। महाराष्ट्र में कुछ ग्रामपंचायतों के चुनावों में मतदाताओं ने महिलाओं का पैनल ही चुना और कुछ ग्रामपंचायतों में महिलाओं को निर्विरोध चुना है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं का राजनीति में सहभाग सिर्फ संख्या से नहीं, बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी बढ गया है।

4. बुनियादी समस्याओं का समाधान :

पंचायत के महिला सदस्य एवं पदाधिकारियों ने ग्रामीण इलाकों की बुनियादी समस्याओं को हल करने में प्राथमिकता दी हुई दृष्टिगोचर होती है। पीने का पानी, घरेलु ईंधन, जानवरों का चारा, बच्चों की शिक्षा, गांवो की सफाई, स्वास्थ्य की सुविधाएँ आदि बुनियादी सुविधाओं को उपलब्ध करने के लिए वे प्रयासरत है। गांवो में शराब बंदी तथा जुआ अड्डे हो, इसलिए वे आंदोलन चला रहे हैं। गरीब एवं जरूरतमंद मिहलाओं के रोजगार के लिए शिलाई मशीन, मिर्च कांपड मशीन देने के लिए योजनाएँ चला रही है। पंचायतो का कारोबार पारदर्शक तथा लोगों के लिए उपयोगी साबित हो, इसलिए महिला सदस्य प्रयासरत होने की बात दृष्टिगोचर होती है। यह परिवर्तन समय की मांग है।

महिला सबलीकरण में बाधाएँ :

आरक्षण के कारण महिला सबलीकरण को चालना मिली है, बावजूद इसके सबलीकरण की प्रक्रिया धीमी है, क्योंकी महिला सबलीकरण में निम्नांकित बाधाएँ हैं

ज्ञान की कमी : आरक्षण के कारण पंचायतों में महिलाओं का सहभाग बढने के अवसर प्राप्त हुए हैं, फिर भी ग्रामीण इलाकों की महिलाओं को इस अवसरों का पता

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

ही नहीं है। इस कारण यह महिलाएँ राजनीति से कोसो दूर हैं। इस कारण आरक्षण का लाभ बडे–बडे भतीजावादी राजनेताओं के परिवार की महिलाओं को होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इससे ग्रामीण राजनीतिक क्षेत्र में भाई–भतीजावादी प्रवृत्ती मजबूत होने लगी है।

2- **पुरुषों का वर्चस्व** : आरक्षण के कारण महिलाओं को पंचायतों प्रतिनिधित्व एवं अधिकार के पद मिलने के बावजूद असल में इन महिलाओं के परिवार में से ही कोई पुरुष उदा. पति, देवर, ससुर आदि कारोबार संभालते हुए दिखाई देता है। कई महिला पदाधिकारी सिर्फ नाम के लिए, उनके अधिकार पुरुषों ने ही अपने हाथों में लिया हुआ दृष्टिगोचर होते हैं।

3. **पुरुषों का असहयोग** : महिलाओं को आरक्षण मिलना कई पुरुषों के आँखों की चुभन है। सरपंच, सभापति, अध्यक्ष यह ओहदे महिलाओं के लिए आरक्षित रखने से उनके अवसर चूक गए यह भावना पुरुषों में निहित हैं। इस प्रवृत्ति के नेतागण महिलाओं को परेशान करने,विकासात्मक योजनाओं में बाधा डालने तथा उन्हें असहयोग करने का प्रयास करते हैं। महिलाओं का नेतृत्व उन्हें जचता नहीं है। यदी पिछडे वर्ग की महिला हो, तो उनका नेतृत्व पुरुषों के साथ उच्च जाति की महिला भी स्वीकार नहीं करती। पिछडे वर्ग के महिला सबलीकरण में इस तरह से मुख्यतः दो लिंगभेद तथा जातिभेद बाधाएं।

4. **गरीबी** : अधिकांश ग्रामीण परिवार गरीब हैं। इस कारण ऐसे परिवार की महिलाओं को 'चुला एवं बच्चा ' संभालकर खेतीबाडी में मजदूरी करनी पडती है। इससे उन्हें राजनीति में सहभाग लेने के लिए समय ही नहीं मिलता।

5. **अनपढ** : ग्रामीण इलाकों में अनपढ महिलाओं की संख्या अधिक है। इस कारण यदि उन्हें राजनीति में अवसर मिले तो भी उन्हें उनके अधिकार, कर्तव्य, कानून के बारे में ज्ञान नहीं रहता। इससे वे परी क्षमता के साथ काम नहीं कर सकते। परिणामस्वरुप राजनीति में अवसर मिलने पर भी अनपढ महिलाओं को पुरुषों पर ही निर्भर रहना पडता है।

6. **दूसरों पर निर्भर** : अधिकांश महिला आर्थिक दृष्टि से पुरुषों पर निर्भर रहती है। इसके अलावा पुरुषप्रधान संस्कृति में रुढि–परंपराओं की सीमिएँ है। घरबार संभालकर उन्हें घर से बाहर निकलना आसान नहीं होता। इस कारण उनकी राय पर पुरुषो का प्रभाव रहता है। परिणामता : वे स्वतंत्र रुप से राजनीति में सहभाग नहीं ले सकते। महिलाओं को राजनीति में सहभाग लेने के लिए परिवार से ही विरोध होता है।

सुझाव :

महिलाओं का राजनीतिक प्रकिया में सहभाग बढाने के लिए तथा अधिक सक्षम बनाने के लिए निम्नंकित सुधायो को गौरतलब किया जा सकता है :

1- **सावधानियाँ** : महिलाओं में राजनीतिक गुर बताने के लिए प्रबोधन की जरुरत है। सम्मेलन, शिबिरों का आयोजन करना चाहिए।

2- **मानसिकता में बदलाव** : पुरुषों ने अपनी संकोचित मानसिकता को बदलना चाहिए स्त्री–पुरुष समानता के अधिकार का महत्व उन्हें बताने के लिए विशेष कार्यकमों र आयोजन करने चाहिए।

3. **स्त्री शिक्षा** : ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा देना चाहिए, जिससे उन्हें अधिकारों व पता चले।

4. **स्वावलंबन** : ग्रामीण महिलाएँ आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनना जरुरी है, जिससे वे स्वतंत्र रुप से निर्णय ले सकती है।
5. **रुढी परंपरा से मुक्ती** : रुढी–परंपरा में बंधी महिलाओं को मुक्त करना चाहिए। नया ज्ञान, नए विचार, नई कल्पनाओं की पहचान होनी चाहिए। इसके लिए सरकार, स्वंसेवी संस्था, सामाजिक कार्यकर्ते, महिला संगठन आदि संस्थाओं ने अगुवाई करनी चाहिए।
6. **प्रशिक्षण** : महिलाओं को उनके लिए बहार किए सांविधानिक अधिकारों की पहचान कराने के लिए, राजकारोबार से अवगत होने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन करना जरुरी है।

पाद टिपणीयाँ :

1- सिंह सीमा, पंचायती राज महिला सशक्तिकरण, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2010
2- यादव डॉ. किशन, पंचायती राज में महिलाओं की स्थिती : एक राजनैतिक अध्ययन, शब्द – ब्रम्ह अंतराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका , सितं 2016
3- www.wikipidia.com
4- https://rdd.maharashtra.gov.in

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

A Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
SJIF Impact Factor : 6.21 ISSN : 2277-8721
Vol. VIII Special Issue – I, March 2019

REFLECTION OF EDUCATION IN LITERATURE

साहित्यातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब

■ EDITORIAL BOARD ■

Prin. (Dr.) Arjun Rajage
Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. Girish More
Department of Marathi, Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. Uttam Patil
Department of English, Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Mr. Shankar Dalavi
Department of Hindi Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. S.B. Biradar
Department of English, SVM College, Ilkal (Karnataka)

Dr. Sabiha S. Sayyad
Department of Urdu, Night College of Arts and Science, Ichalkaranji

RAJARSHI SHAHU ARTS AND COMMERCE COLLEGE, RUKADI
Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 118 Maharashtra (India)
E-mail: rajshahurkd@yahoo.com, Website: www.rajshasuruk.in

Sr. No.	Title	Author	Page No.
98	शिक्षणामुळे प्रभावित स्त्रीसुधारणा आणि मराठी साहित्य	डॉ. सविता सुनील केंजळे	288
99	ग्रामावकाशातील जनिच्या शिक्षणाची संघर्षमय करूण कहाणी : 'झिम् पोरी झिम्'	प्रा.लक्ष्मण व्यंकट बिराजदार	291
100	दलित आत्मकथनांतील शैक्षणिक संघर्ष	डॉ. सतीश कामत	294
101	'तळ ढवळताना' या काव्यसंग्रहातील शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण	डॉ. अशोक नामदेव शिंदे	297
102	वाणीकिडे : शिक्षणव्यवस्थेतील अनैतिकता, भ्रष्टाचार आणि शोषण	शैला आनंदराव क्षीरसागर	301
103	'परिस्थितीला दिवस जातात तेव्हा...' मधील शिक्षणाचे महत्व	डॉ. प्रमोद भीमराव गारोडे	304
104	'जुबा' कादंबरीतील शिक्षक	डॉ. वैशाली तातोबा चौगुले	307
105	साहित्य अकादमी पुरस्कारप्राप्त मराठी कादंबरीतील शिक्षण	डॉ. गिरीश मोरे	310
106	आचार्य विनोबा भावे यांचे शिक्षणविचार	डॉ.महेश नारायण गायकवाड	313
107	साहित्याची स्त्रीवादी समीक्षा	कु.दिव्यांजलीकुमार माने डॉ. सी.पी.सोनकांबळे	316
108	फाटेमुंढरीची शाळा : आदिवासी जीवनाचा डोळस समूहशोध	डॉ.प्रभाकर रामचंद्र पवार	320
109	शंकर पाटलांच्या कथेतील 'शाळा'	प्रा. डॉ. माधवी खरात	323
110	गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोर यांचे शैक्षणिक तत्त्वज्ञान	विजया प्रशांत पवार	326
111	मराठी कवितेतील शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण	डॉ. कल्याणी शेजवळ.	329
112	शिक्षण माणसाला सर्वार्थाने संपृक्त बनवते	डॉ. प्रशांत नागावकर	332
113	दलित, वंचित, आदिवासी, भटके–विमुक्त अल्पसंख्याक यांच्या शिक्षणामुळे मराठी साहित्यात उमटलेला आवाज	डॉ. सयाजीराव छबुराव गायकवाड	335
114	'सर्व प्रश्न अनिवार्य' कादंबरीतील शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण	अनिता एकनाथ आंबोकर	338
115	संघर्षशील तरूणाची प्रेरणादायी कहाणी	डॉ. विनोद कांबळे	341
116	अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्यांचे समाजशास्त्रीय विश्लेषण	प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार जाधव	344
117	'जोहार' कादंबरीतील शिक्षण व्यवस्थेचे चित्रण	प्रा. डॉ. रफीक सूरज मुल्ला	348
118	दलित स्त्री आत्मकथनातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब	डॉ. स्मिता दावरे	350
119	'मरणकळा' व 'तीन दगडाची चूल'मधील शिक्षणाचे प्रतिबिंब	डॉ. निता भिसे दावरे	356
120	शिक्षण व्यवस्था आणि मराठी कादंबरी	प्रा. विजय शिंदे श्री. संतोष बोंगाळे	359
121	शैक्षणिक ताण–तणावाचे व्यवस्थापन	प्रा. बाबासो निवृत्ती उलपे	362
	HINDI SECTION		
122	हिंदी साहित्य में चित्रित शिक्षा क्षेत्र में शोषण, उत्पीडन, भ्रष्ट व्यवस्था तथा अनैतिकता	डॉ. बलवंत जेऊरकर	366
123	एक और द्रोणाचार्य में शिक्षण व्यवस्था की कुरूपता	डा. नागरत्ना के	369
124	'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित शिक्षा की दशा एवं दिशा	श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे प्रा. डी. एस. घुटुकडे	372
125	'जूठन' में प्रतिबिंबित शिक्षा और वर्तमान	डॉ. सविता चोखोबा किर्ते	375
126	'नभग' खंडकाव्य में समाज परिवर्तनकारी शिक्षाप्रणाली	प्रा. एस. आर. दळवी	378
127	हिंदी साहित्य में चित्रित धर्म और शिक्षा के अंतः संबन्ध	डॉ.संतोष बबनराव माने	381

अण्णा भाऊ साठे यांच्या कांदबऱ्यांचे समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव
नाइट कॉलेज ऑफ आर्टस अॅड कॉमर्स,कोल्हापूर

COMMERCE * NIGHT COLLEGE OF KOLHAPUR

अण्णा भाऊ साठे ह्याचा जन्म १ ऑगस्ट १९२० साली सांगली जिल्ह्यातील वाटेगाव या छोट्याशा खेड्यात एका गरीब कुटूंबात झाला. घरी अठरा विश्व दारिद्रय असल्यामुळे उदरनिर्वाहासाठी ते मुंबईला गेले. मुंबईमध्ये मांटुगा येथील लेबर कॉलनीत रहायला गेले. ते ग्रामीण भागातून आले असल्यामुळे त्यांचा लेखनात ग्रामीणबाज ठासून भरलेला असावचा हे प्रकर्षाने जाणवते. त्यांनी सातत्याने लिहित रहाव म्हणून त्यांना कम्युनिष्ठ पार्टीने एक स्वतंत्र खोली दिली होती. अण्णांना इथेच वैचारीक व तात्वीक बैठक मिळाली. मुंबईच्या गिरणीत काम करत असताना त्यांचा लेखणीतुन स्वातंत्र्याचा चळवळीच्या अफाट जनसागरात गुंतलेला लढाऊ माणूस हा प्रमुख घटक साहित्यातुन उभा केल्याचे दिसून येते. ग्रामीण पददलित लाचारीच जीवन जगणारी माणंस त्यांच्या लेखणीचा विषय झाली. तत्कालीन काळी दलित पीढीत नागावलेल्या जनतेविषयी इतक्या पोटतिडकीने लिहिणारा साहित्यिक म्हणून त्यांची ख्याती होती. अण्णांच्या अंगी पोटतिडकीने सळसळणारी ध्येयदृष्टी होती. आतडी पिळवटून यातीत तटातट तुटावीत अशा प्रकारच्या कादंबऱ्या त्यांनी लिहिल्या आहेत. त्यांनी स्वत:च्या खास शैलीतील कांदबऱ्यातून ओघवते तत्कालीन ग्रामीण जीवनाचे दर्शन घडवले आहे. खरंतर अण्णा भाऊ साठे प्रथम शाहीर होते. नंतर कथाकार व तदनंतर कादंबरीकार असा त्यांचा लेखनाचा साधारणत: प्रवास होता.

अवघ्या ४९ वर्षाचे आयुष्य लाभलेल्या अण्णांनी आजपर्यंत ४८ पुस्तके लिहिली त्यामध्ये त्यांचा ४० कांदबऱ्या आहेत. अण्णांनी स्वकर्तुत्वाने आपले नाव साहित्य क्षेत्रात अजरामर केले हे वास्तव आहे. केवळ मातंग समाजातील असल्यामुळे महाराष्ट्राचा साहित्य क्षेत्रात ते अज्ञात राहिले हे उघड सत्य आहे. अण्णांचा घराण्याला कोणत्याही प्रकारच्या शिक्षणाचा वारसा नसताना अवघे दोन ते तीन वर्षे शाळेत जावून अक्षरे गिरवून इतका मोठा स्वकर्तुत्वान साहित्यिक महाराष्ट्रात जन्मास आला हे महाराष्ट्राचे भाग्यच म्हणावे लागेल.

वारणेचा वाघ- ही कांदबरी अण्णांनी त्यांचे स्नेही माननीय अजित बी. सपताळ यांना अर्पण केलेली आहे. सदर कांदबरी अन्याय, अत्याचाराच्या विरोधात वाचा फोडणारा तरूण म्हणजे सतु भोसले याचे चित्र उभे केल्याचे दिसुन येते. अत्याचार, जुलुम करणाऱ्या सावकार, जमिनदार व ब्रिटिशाविरूद्ध करणारा या कादंबरीचा नायक सतु भोसले होय. खरे तर संपूर्ण वारणा खोऱ्यातील तमाम स्त्रीया त्यांच्या बहिणी त्याला भरपूर आयुष्य मिळावं म्हणून मनोभावे प्रार्थना करतात. संपूर्ण वारणा खोऱ्याच व सतु भोसलेच्या व्यक्तिमत्वाची सूक्ष्मपणे भेदक मांडणी या कादंबरीत केली आहे.

अलगुज-अण्णांनी सौ. उषाताई डांगे याना सादर केलेली ही कांदबरी. ही कादंबरी नायिका प्रदान असून ही नांद गावच्या गणू मोहित्यांची मुलगी रंगू आणि तिचा प्रियकर बापू यांचा निखळ प्रेमाची कथा आहे. अण्णांनी नेमक्या कोणत्या शब्दात रंगूचे वर्णन केलेले आहे ते प्रत्यक्ष कादंबरी वाचल्यावर जाणवते. प्रेमासाठी प्रियकर बापू बरोबर रंगू पळून जाते. या घटनेमुळे संपूर्ण गावात तणावपूर्ण व संघर्षाचे वातावरण निर्माण झाले. गावातील मंडळीनी पोलिस केसीस पर्यंत मजल मारली होती शेवटी पोलिस इन्स्पेक्टरनी बापू व रंगू या जोडगोडीचे लग्न लावण्यास आघाडीवर होते. अशा स्वरूपाची प्रेममय कथा असणारी ही कादंबरी आहे.

वारणेचा खोऱ्यात-ही कांदबरी प्रामुख्याने १९४२ च्या ऑगस्ट क्रांतीचा लढ्यावर आधारलेली आहे. अण्णा स्वत: सातारा जिल्ह्यातील 'ऑगस्ट क्रांती' उठावाशी संबंधित होते निसर्ग सृष्टीने बहरलेल्या सातारा जिल्ह्यातील डोंगर, नदया, नाले, माणसे आदीचे सुंदर सुक्ष्म वर्णन या कादंबरीतुन केल्याचे दिसुन येते.

चित्रा- अण्णांनी तीर्थरूप आईस सादर केलेली ही कांदबरी आहे. या कांदबरीचा मुख्य विषय म्हणजे औद्योगिक क्षेत्रात व अफाट लोकसंख्येच्या गजबजलेल्या मुंबई शहरातील वाढता वेश्या व्यवहारातील ताणतणाव चर, संघर्षावर

माकडीचा माळ– ही कांदबरी सन १९६३ मध्ये प्रकाशित झाली. सदर कांदबरीचा मूळ गाभा म्हणजे सुगीचा दिवसात गावाचा बाहेर पाय टोकून निर्वाह करणाऱ्या फिरत्या जमातीचा तांड्याचे मराठी भाषेत पहिल्यादांच चित्रित झालेले जीवनदर्शन आहे. साप गारूडी, डोंबारी, नंदीवाले, फासेपारधी, दरवेशी, शिकलगर आदींचा फिरत्या जमातींचे पहिल्यांदाच चित्रण घडलेले आहे. त्यांचे वेगवेगळे धर्म, रीतीभाती प्रथा परंपरा, जगण्याचे व्यवहार नागरी लेखकाला हे सर्व नवीन आहे. भटक्या विमुक्त जाती जमातीचे चित्रण ह्या कादंबरीत रेखाटले आहे.

अण्णा भाऊ साठे यांच्या कांदबरीचे समाजशास्त्रीय विश्लेषण

समाजाच्या विकासात व्यक्तिचा विकास असतो आणि व्यक्तिचा विकास म्हणजे त्याच्यामधील 'सत' चा विकास हा विकास व्यक्तिबरोबर समाजाला ही मोठ करतो म्हणून व्यक्ति-व्यक्तिचा मिळून बनलेला समाज हा गुणवत्तापूर्ण कसा होईल या विषयीचे सुक्ष्म विस्तृत विचार अण्णांचा साहित्यातुन दिसुन येते. अण्णांच्या कांदबऱ्यांची भाषा खास त्यांचा जडणघडणीची आहे. त्यांच्या कांदबऱ्याना लोक कलेचा व लोकभाषेचा आधार असल्याचे दिसुन येते. अण्णांच्या कांदबऱ्यातील निसर्ग वर्णन किंवा व्यक्तिचित्रे मोठी रेखीव आहेत सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे राष्ट्रीय, सामाजिक, राजकीय लढ्यात त्यांनी स्वतःचे दायीत्व निष्ठेने आयुष्यभर सांभाळले.

सर्वसामान्य माणसे मग ती कष्टकरी जनता असो किंवा ग्रामीण भागातील गरीब शेतकरी त्यांनी आपल्या अवतीभोवतीचा वावरणारा समाज स्वतःच्या लेखनात परिपूर्णतेने उभा करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. त्या समाजाच्या सुख दुःखाशी हितसंबधाशी स्वतःची नाळ जोडून घेतली. शहरी विभागातील मजूर, हमाल, खाटीक, भिकारी, दारूवाले, वेश्या व्यवसायांना दलाल, खुनी, दरोडेखोर गुंड अशा प्रकारची माणसे त्यांचा लेखनाचा विषय होता. समाज केवळ भौतिक दृष्टीनेच समृद्ध घेऊन चालत नाही तर नैतिक दृष्ट्या ही त्यास अधिष्ठान असावे लागते अशी त्यांची हमी होती.

अण्णांनी कादंबरी विश्व हे जीवननिष्ठ दृष्टिकोनातून सुख-दुःख आशा, आकांक्षा, ईर्षा, संघर्ष या सर्वांचे व्यापक दर्शन घडविले आहे. सखोल व्यापक जननिष्ठा उरी बाळगून जीवनातील नवे जिव्हाळ्याचे विषय, नवी आव्हाने जागरूकपणे रूपबद्ध करीत समाज परिवर्तनाचे साधन म्हणून मोठ्या जिद्दीने ईर्षेने साहित्य रूपे घडविले आहेत. कांदबरीमध्ये आशय समृद्ध असे रूपबंधन घडविले आहेत. परिवर्तनाच्या उर्मीला क्षितीज दिले. दलित साहित्याला एक प्रकारे प्रेरणा दिल्याचे दिसुन येते. त्यांचे साहित्य ग्रामीण प्रादेशिक आणि दलित यांचा अंतबाह्य स्वरूप रंगात गुदमरून जाऊन ही त्या पलीकडे गेल्याचे दिसते. स्वातंत्र्याच्या चळवळीने भारलेला मार्क्सवादी दीक्षा घेतलेला सभोवतालच्या सामाजिक जडणघडणीत प्रमुख हिस्सा असलेला. क्रांतीसुर्य महात्मा फुले भारतीय घटनेचे शिल्पकार डॉ. आंबेडकर याची प्रेरणा सांगणारा त्यांचे विचार आढळून येतात. या दोन महापुरूषांचा वारसा घेऊन उभे राहिलेले मराठी साहित्य संस्कृतीची परंपरा नाकारणारे पहिले बंडखोर साहित्यिक होते.

२ मार्च १९५८ मध्ये दलित साहित्य संम्मेलनाचा उद्घाटन भाषणात अण्णा म्हणाले होते की, ''हे जग, पृथ्वी शेषाच्या मस्तकावर नसून दलितांच्या तळहातावर तरलेली आहे'' अशा या दलितांचे जीवन खडकातुन झिरपणाऱ्या पाझराप्रमाणे असते. ते जवळ जावून पहा मग लिहा. जगातील सर्वश्रेष्ठ कलावंतानी वाङ्मय हा जगाचा तिसरा डोळा मानला आहे आणि तो डोळा सदैव पुढे व जनतेबरोबर असणे जरूर आहे. यावरून आपणांस स्पष्ट दिसुन येते की, समाजातील प्रत्येक घटकातील व्यक्तिचा किती सूक्ष्म अवलोकन सखोल चिकित्सक नजरेने केलेला अभ्यास, समाजाविषयीची नाळ, समाजाविषयीची सामाजिक बांधीलकीची भावना प्रेम माया आपुलकी देशाभिमान यांचे मिश्र चित्रण त्यांच्या कांदबऱ्यातुन अधोरेखित होते.

संदर्भ ग्रंथ

१) वारणेचा वाघ: लेखक अण्णा भाऊ साठे, सुरेश एजन्सी, पुणे.
२) अलगुज: लेखक अण्णा भाऊ साठे, मॅजेस्टीक प्रकाशन, मुंबई ४.
३) चित्र: लेखक अण्णा भाऊ साठे, सुरेश एजन्सी, पुणे.

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

ISSN 2278-3199
Volume - 09, Issue - 01, January - June, 2020

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary
National Research Journal of Social Sciences & Humanities...

National Journal on ...

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Gondia Education Society's

SETH NARSINGDAS MOR ARTS, COMMERCE &
SMT. GODAVARI DEVI SARAF SCIENCE COLLEGE

TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

ISSN 2278-3199
Volume - 09, Issue - 01, January - June, 2020.

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities

National Journal on.....

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Chief Editor

Dr. C. B. Masram

Principal

S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College,
Tumsar Dist. Bhandara.

Editor

Dr. Rahul Bhagat

Associate Professor &Head Department of Sociology,
S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College,
Tumsar Dist. Bhandara - 441912

Published By

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
S. N. MOR ART, COMMERCE & SMT. G. D. SARAF SCIENCE COLLEGE,
TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

Email-principalsnmorcollege@rediffmail.com / rjbhagat1968@yahoo.co.in
Website - www.snmorcollege.org.in
Phone No. - 07183-233300 / 07183-233301 Mobile - 09422113067 / 09420359637

Volume : 09, Issue : 01, January - June, 2020/ ISSN 2278-3199

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities....

'Social Issues and Problems'

EDITORIAL BOARD

Chief Editor: Dr. C. B. Masram,
Principal, S. N. Mor Art, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar, Dist. Bhandara.

Editor: Dr. Rahul Bhagat,
S. N. Mor Art, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar, Dist. Bhandara.

Editorial Advisory Board -

Dr. Pradeep Aglave, *Ex. Head, P. G. Dept. Dr. Ambedkar Thought, R. T. M. N. U., Nagpur.*
Dr. Suresh Waghmare, *Ex. Head Dept. of Soci., Rajshree Shahu Maharaj College, Latur (MS)*
Dr. Jagan Karade, *Head Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur (MS)*
Dr. Sanjay Salunkhe, *Department of Sociology, D. B. A. M. University, Aurangabad (MS)*
Dr. R.N. Salve, *Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur, Dist. Kolhapur (M.S.)*
Dr. Sujata Gokhale, *Head Dept. of Sociology, S. N. D. T. University, Mumbai (MS)*
Dr. Shivcharan Meshram, *Principal, Kamla Nehru Govt. Girls College, Balaghat (MP)*
Dr. B. K. Swain, *Head Department of Sociology, R. T. M. Nagpur University, Nagpur.*
Dr. Smita Awchar, *Professor, D. B. A. Marathwada University, Aurangabad (MS)*
Dr. Prakash Babde, *Ex. Professor and Head, Dept. of Sociology, R. T. M. N. U., Nagpur.*
Dr. Ramesh Makwana, *Department of Sociology, Sardar Patel University, Gujrat.*
Dr. M. B. Bute, *Principal, Santaji Mahavidhyalaya, Nagpur.*
Dr. Ashok Kale, *Ex. Principal, M. B. Patel College, Deori Dist. Gondia (MS)*
Dr. Anil Surya, *President, S. M. S. New Delhi.*
Dr. Kalyan Sakharkar, *Ex. Head Dept. of Sociology, P. N. College, Pusad Dist. Yeotmal (MS)*
Dr. Arun Chavhan, *Head Dept. of Sociology, Vidhyabharti Mahavidhyalaya, Amrawati (MS*
Dr. Mahendrakumar Jadhao, *Head Dept. of Sociology,Night College of Arts & Commerce, Kolhapur.*

Editorial Board Member -

Dr. R. K. Dipte, *Dept. of English, S. N. Mor College, Tumsar.*
Prof. R. U. Ubale, *Dept. of Marathi, S. N. Mor College, Tumsar.*
Prof. R. O. Belokar, *Head Dept. of Pol. Science, S. N. Mor College, Tumsar.*

Associate Editors -

Dr. Saroj Aglave, *Head, Dept. of Sociology, Mahila Mahavidhyalya, Nandanvan, Nagpur.*
Dr. Dipak Pawar, *Head, Dept. of Sociology, Women's College, Nandanvan, Nagpur.*
Dr. M. V. Kolhe, *Principal, Br. Sheshrao. Wankhede College, Mohapa, Disi. Nagpur.*
Dr. Nalini I. Borkar, *Dept. of Sociology, Arts & Commerce Degree College, Petrolpump, (Bhandara)*
Dr. P. H. Gajbhiye, *Head, Dept. of Sociology,N.P. Shivaji College, Mowad Dist.Nagpur*
Prof. Priyadarshan Bhaware, *Head, Dept. of Sociology.,Badrinarayan Barwale College, Jalna*
Dr. Rajendra Kamble, *Head, Dept. of Sociology., Indira Gandhi College, Kalmeshwar, Nagpur*
Prof. Jayendra Pendse, *Head, Dept. of Sociology, Sevadal Mahila College, Nagpur.*
Dr. Prakash Sonak, *Head, Deptt. of Sociology, Yeshoda Girls College, Nagpur.*

Volume – 09, Issue – 01, January - June, 2020/ ISSN 2278-3199

'Social Issues and Problems'

- CONTENTS –

Sr. No.	Title of Paper	Author Name	Page No.
1.	From Marginalization to Marginalization.....	Dr. Pradeep Meshram	...1
2.	Untouchable: A Mirror to Indian Society	Dr. R. K. Dipte	...6
3.	Educational Thoughts of Dr. Ambedkar	Dr. Hemant Koli, Mr. Hasan Tadvi	...10
4.	The Havoc of Pandemic Covid-19....	Dr. Rajshri Gajghate	...14
5.	Development of Small Scale Industries	Dr. Smita Lade	...17
6.	दूरदर्शन में दिखाई जानेवाली स्त्री प्रतिमा.....	प्रा. किरण फसवान	...21
7.	वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिती	डॉ. राजेंद्र वानरे	...24
8.	मनोवैज्ञानिक कल्याण और मनोवैज्ञानिक कल्याण में संबंध	डॉ. रीता [illegible]	...29
9.	फुले, शाहू, आंबेडकरांचा समतावादित विचार.....	डॉ. नारायण कांबळे	...30
10.	कोरोना (कोविड-१९) चा भारतीय समाजावरील परिणाम	डॉ. दिपक पवार	...35
11.	[illegible] व शिक्षणपद्धतीतील बदलाची गरज	डॉ. ज्योती जोशी	...39
12.	भारतातील महिलांवरील अत्याचार व उपाय	डॉ. अन्सारी एस. बी.	...40
13.	संगीत: मानवी जीवनातील नवी दिशा....	मुरलीधर तारे	...42
14.	सांप्रदायिक हिंसाचार : एक अध्ययन	डॉ. रामलाल लहे	...46
15.	महाराष्ट्रातील शेतकरी आत्महत्यांची सद्यस्थिती....	डॉ. सुनिल झाडे	...51
16.	युवा, युवकांच्या समस्या संदर्भीय सिद्धांत....	डॉ. महेंद्रकुमार जाधव	...56
17.	स्त्री आणि कौटुंबिक हिंसाचार.....	प्रमिला [illegible]	...58
18.	शिवाजी दृष्टिकोनातून [illegible] महिला....	डॉ. प्रमिला पुजारी	...62
19.	सायबर गुन्हा	डॉ. राजेंद्र कांबळे	...65
20.	विकासासाठी आहारात [illegible] व [illegible] उपयोग...	डॉ. सोनाली [illegible]	...67
21.	मानवाधिकार आणि अन्न सुरक्षा कायदा	डॉ. संतोष [illegible]	...69
22.	लिंगभेद व जातीव्यवस्थेमध्ये असलेली गतिशीलता	डॉ. प्रमिला [illegible]	...72
23.	[illegible] पोषण आहार योजना व महिला [illegible]...	प्रा. [illegible]	...75
24.	कामगार कायदे आणि वर्तमान परिस्थितीतील आव्हाने....	डॉ. प्रवीण [illegible]	...76
25.	विदर्भातील अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या विविध समस्या....	प्रा. [illegible]	...78
26.	[illegible] महिला [illegible] व [illegible]	प्रा. [illegible]	...81
27.	[illegible] ग्रंथालयातील ई-स्रोत व्यवस्थापन : एक सर्वेक्षण	आनंद [illegible], सुनिल [illegible]	...83
28.	[illegible]	प्रा. [illegible]	...87
29.	कोरोना विषाणू (कोविड-१९) आणि स्थलांतरित कामगार	डॉ. [illegible]	...89
30.	ग्रामीण भागाची [illegible] आणि त्यातून निर्माण झालेले प्रश्न	प्रा. आर. बी. [illegible]	...92
31.	कोविड-१९: जागतिक महामारी	डॉ. [illegible]	...95
32.	[illegible] महिलांची [illegible] विषयक जागरूकता....	प्रा. [illegible]	...98
33.	कोरोनाची सद्यस्थिती, समस्या व आव्हाने	डॉ. [illegible]	..100
34.	कोरोनाचे संकट, स्थलांतरित मजूरांपुढील आव्हाने....	डॉ. [illegible]	..103
35.	कोरोना व सामाजिक समस्या एक अध्ययन	डॉ. [illegible]	..107
36.	[illegible] : आधुनिक युवकांची [illegible]	डॉ. राहुल [illegible]	..110
37.	कौटुंबिक हिंसाचारापासून महिलेचे संरक्षण	ओमप्रकाश [illegible]	..113

५) वैफल्यतीचे सार्वजनिक कार्यक्रम :– सगळे शेतकरी एकाच नावेतील प्रवासी आहेत. सगळेच संकटात आहेत. अशा वेळेस एकमेकाला सावरण्याची जबाबदारी शेवटी प्रत्येकाची आहे. दुःख कोणी ऐकले तरी सांगणाऱ्याला हलके वाटते असे म्हणतात. दुसऱ्याचे दुःख ऐकले तर ऐकणाऱ्याच्या मनाला आधार वाटतो. शेतकऱ्यांना मनात आपल्या समोरील संकटाची तुलना इतरांच्या संकटाशी करून पाहिली पाहिजे. त्यातून मार्ग दिसायला लागतो. गावागावात शेतकऱ्यांच्या वैफल्यतीचे कार्यक्रम झाले तर कदाचीत खचलेल्या गमावलेली माणसे एकत्र येतील. त्यांना आधार देता येईल. शेतकऱ्यांमध्ये संकटाचा सामूहिक मुकाबला करण्याचा आत्मविश्वास यावा.

६) आत्मचिंतन :– शेतकऱ्यांविषयी कणव व्यक्त करणाऱ्यांना नुसत्या शब्दांच्या बुडबुड्या उडवून चालणार नाही. साबणाच्या आणि टूथपेस्टच्या किमतीच्या बाबतीत कोणी खळखळ करीत नाही. पण दुध, साखर, किंवा कांदा महागला तर आरडाओरडा केली जाते. शेतीमाल स्वस्त मिळाला पाहिजे. किंबहुना तो आपला हक्क आहे असे अनेकांना वाटते. जे लोक असे मानतात, आरडा ओरड करतात ते शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येला हातभार लावत असतात. हे ध्यानात घ्यायला हवे. या बाबीचा अंतर्मुख होवून विचार करायला हवा. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्याच्या संदर्भात आपण कितपत जबाबदार आहोत याचा विचार सुरु झाला तर ती या आत्महत्या रोखण्याची खरी सुरवात ठरेल शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या कर्जमाफी किंवा सरकार थांबवू शकत नाही. आत्महत्या करणार नाही म्हणण्याचे धाडस त्यातून सिद्ध होऊ शकेल. हे धाडस आले की मग आत्महत्यांचा प्रश्न शिल्लक राहत नाही.

संदर्भ सुची

१. आगलावे प्रदिप, संशोधन पद्धतीशास्त्र व तंत्रे, विद्या प्रकाशन नागपूर (२०००)
२. Bajpai S. R., Method of Social Survey and Reseaech, Kitab Ghar, Acharyanagar, Kanpur (1996)
३. भांडारकर पु. ल., सामाजिक संशोधन पद्धती, महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ, नागपूर (१९९६)
४. बोधनकर सुधीर एस., भोसले (आर्थिक व सामाजिक चळवळी), श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर २००७.
५. Chaudhari D. Paul, IntRoduction to social work, Atmaram & Son's, Delhi n' 1976.
६. Desai A. R., Peasant Struggles in India after Independence, Bombay Oxford University n' 1986.
७. देसाई दत्ता, महाराष्ट्रातील दुष्काळ, मनोविकास प्रकाशन, पुणे १९८७.
८. धनागरे द. ना., साप्ताहिक माणूस, पुणे १९८५.
९. दुधाणे संतोष, दैनिक सकाळ, पुणे आवृत्ती ८ ऑगस्ट, २०११.
१०. जोशी शरद, बळीचे राज्य येणार आहे, जनशक्ती वाचक चळवळ, शेतकरी प्रकाशन अलिबाग २०१०.
११. जोशी शरद, शेतकरी संघटना : विचार आणि कार्यपद्धती, शेतकरी प्रकाशन, अलिबाग (रायगड) १९८२.
१२. कुलकर्णी पी. के., सामान्य समाजशास्त्र, मंगेश प्रकाशन, नागपूर २०००.
१३. मेश्राम सुरेश, समाजकार्यासाठी समाजशास्त्र, श्रम प्रकाशन, नागपूर २००५.
१४. Mathew George, New Economic Policy Social Development and Sociology, Socialogical Bulletions V. 11 (1), Mar 1995.
१५. मेश्राम सुरेश, प्राथमिक सामाजिक संशोधन पद्धती, श्री. कृष्णचंद्र एजन्सी, नागपूर २०००.
१६. वाडमेकर पुरुषोत्तम, सामाजिक आंदोलने, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे १९८८.
१७. पळवेकर सुभाष, मंत्र यातना : विदर्भ यात्रा, स्वतः, अमरावती २००५.
१८. पळवेकर सुभाष, ज्वलंत शेतमजूर समस्या व शेती उत्पादन, स्वतः, अमरावती १९९६.
१९. पाध्ये रमेश, शेतकरी आंदोलन, सुलभ प्रकाशन, मुंबई १९८५.
२०. सिंह सुरेंद्र, भारत में समाजकार्य का क्षेत्र, न्यू रॉयल बुक कंपनी, वर्मा आर. बि.एस., लखनऊ २००१.
२१. साळुंखे श्रीकांत, महाराष्ट्रातील शेतकरी चळवळ, श्री. सुयश प्रकाशन, परभणी १९९६.
२२. शेपर्ड जॉन एम., सोशिओलॉजी, वेस्ट पब्लिशिंग कं. न्युयार्क, १९९०, (फोर्थ एडिशन)
२३. हलकारे प्रज्ञा, एकात्मिक समाजकार्य, श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर २००६.
२४. वसिष्ठ आशिष, दैनिक लोकमत, २० डिसें. २०१२.
२५. यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक, सामाजिक परिवर्तन आणि सामाजिक चळवळी, (पुस्तक क्र. ३) २००२.
२६. Websites, www.cabdirect.org
२७. websites, http://www.bookganga.com

Volume – 09, Issue – 01, January - June, 2020/ ISSN 2278

गुन्हा, गुन्ह्याच्या उत्पत्ती संबंधीचे सिद्धांत आणि गुन्ह्यांना पायबंद घालण्याच्या परिणामकारक पद्धती

प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव, सहयोगी प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नाईट कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड कॉमर्स, कोल्हापूर

प्रस्तावना:– सर्वसाधारणपणे 'गुन्हा' हा समाजाइतकाच प्राचीन आहे. समाजात जेव्हापासून व्यक्तिगत हिताला महत्व आले तेव्हापासुनच समाजातील अन्य लोकांच्या हितास अवरोध निर्माण करून समाज असंगत मार्गाने स्वहिताची पूर्ती करण्याची पद्धत काही लोकांनी अनुसरली. ह्या प्रवृत्तीतुनच गुन्हा आणि गुन्हेगारी प्रवृत्ती वाढू लागली. आपल्या समाजात कायद्याविरुद्ध वागणूक म्हणजे गुन्हा असे समजण्यात येते. याचा अर्थ असा की कायदा जर अस्तित्वात नसेल तर तेच अपकृत्य समाजाला कितीही घातक असले तरी गुन्हा म्हणून मानण्यात येणार नाही. 'गुन्हा' या शब्दाचा अर्थ निश्चित करताना ही गोष्ट लक्षात ठेवली पाहिजे की, देशादेशात व कालानुरूप गुन्ह्याचा अर्थ व व्याप्ती बदलत जातात. एका समाजात गुन्हा ठरणारी गोष्ट दुसऱ्या समाजात गुन्हा ठरणार नाही. किंवा एकाच समाजात एखादे वेळी गुन्हा म्हणून न समजली जाणारी गोष्ट कालांतराने गुन्हा म्हणुन मानली जाण्याचा संभव आहे. उदाहरणार्थ मुंबई राज्यात १९४६ साली द्विभार्या प्रतिबंधक कायदा अंमलात आला, त्यानुसार पहिली पत्नी हयात असताना दुसऱ्या स्त्रीशी विवाह करणे कायद्याविरुद्ध मानण्यात येऊ लागले. परंतु हा कायदा अस्तित्वात येण्यापूर्वी एकाच वेळी अनेक पत्नी असणे हे कृत्य गुन्हा म्हणुन दंडास पात्र नव्हते. थोडक्यात गुन्हा ही सापेक्ष संकल्पना आहे. त्यामध्ये स्थान व कालमानापरत्वे बदल दिसुन येतो. तसेच गुन्ह्याचे स्वरूप ही कालसापेक्ष असते. ज्या गोष्टी करण्यास कायद्याने मनाई केली आहे आणि ज्या केल्यास कायद्याने शिक्षेची तरतूद केली आहे त्या गोष्टींना गुन्हा असे म्हणतात.

संशोधनाची उद्दिष्टे:– १) गुन्हा म्हणजे काय हे समजुन घेणे. २) गुन्ह्याच्या उत्पत्तीसंबंधीचे सिद्धांत समजुन घेणे. ३) गुन्ह्यांना पायबंद घालण्याच्या पद्धतींचा अभ्यास करणे.

संशोधन पद्धत:– सदरचा संशोधन निबंध हा दुय्यम साधन सामग्रीवर आधारित आहे. ह्यामध्ये दुर्मिळ ग्रंथांचा वापर केला आहे.

गुन्ह्याच्या उत्पत्तीसंबंधीचे सिद्धांत:– गुन्ह्याची कारणे काय या संबंधीच्या आपल्या ज्या कल्पना आहेत त्यांची एकदा उजळणी व फेरतपासणी करणे हे समाजशास्त्राच्या दृष्टीने महत्वाचे काम आहे. गुन्हे घडण्याची प्रत्येक जी जी कारणे आहेत ती अजून समाधानकारकरित्या निश्चित करता आलेली नाहीत. पूर्वीच्या शास्त्रज्ञांच्या मते या कारणांचा तपास करणे ही एक सोपी गोष्ट होय. आधुनिक शास्त्रज्ञांच्या मते ही एक गुंतागुंतीची समस्या आहे. परंतु गुन्ह्यांची संपूर्णरित्या कारणमीमांसा करणे अजुन शक्य झाले नाही.

गुन्ह्याच्या उत्पत्तीसंबंधीची प्राचीन मते:– मानव गुन्हेगारी करण्यास प्रवृत्त का होतो किंवा त्या ठायी पापप्रवृत्ति कशामुळे निर्माण होते ह्याची जुन्या पंडितांची उपपत्ति अशी की, गुन्हेगार हा मूलतःच दुष्ट प्रवृत्तीचा, अधोगामी असतो. काही माणसांना आपल दुष्ट प्रवृत्तीची जाणीव असते, म्हणून ते निरनिराळ्या मोहावर ताबा मिळविण्याचा प्रयत्न करतात. त्यामुळे त्यांचा हातुन गुन्हा घडत नाही. दुसरी काही माणसे अशी आहेत की, त्यांना आपल दुष्ट प्रवृत्तीची चांगली जाणीव असते. परंतु असे असूनही ते पापमार्गाचा बुद्धी परस्पर अवलंब करतात म्हणजे गुन्हेगाराचे जीवन ते आपणहुन पसंत करतात. थोडक्यात गुन्हेगार म्हणजे पापप्रवृत्ती नुसार समाजद्रोही किंवा बेकायदेशीररीत्या कृत्य करणारा माणूस होय. दुष्ट लोकांची संगत, दारिद्र्य आणि इतर बाबतीतील अनुपता इत्यादी घटक हे पंडीत अमान्य करीत नाहीत. परंतु या ऐहिक संकटांना व्यक्तीने, … परिस्थितीत पडुनच तोंड दिले पाहिजे किंवा प्रसंगी प्राणाला … लागले तरी चालेल परंतु आपल्या संस्कृतीच्या चाकोरीच्या … वर्तन करू नये असे जुन्या पंडिताचे मत.

एखादा मनुष्य गुन्हेगारी करू लागला म्हणजे असे समजण्यास हरकत नाही की, त्याला त्याच्या कर्तव्याची तरी जाणीव नाही. … तशी जाणीव असुनही तो मुद्दामच अपकृत्य करीत आहे … दृष्टीकोन जुन्या पंडीताचा आहे. असे आपणास नमुद केले … तरी आजही बऱ्याच विद्वानांनी या मताला दुजोरा दिला आहे. उदाहरणार्थ एखादी अज्ञानी भोळ्या किंवा अबुद्धीमान गुन्हेगाराला … शिक्षा दिली जाते तिच्या मानाने एखाद्या सराईत व अट्टल गुन्हेगाराला दिली जाणारी शिक्षा किती तरी कडक स्वरूपाची असते. बालगुन्हेगारांबद्दल ही न्यायालयांचा असा एक समज रूढ असल्याचे … … … … मुलांना आपली कर्तव्ये काय आहेत याची जाणीव नसते. किंवा त्यांची … संस्कारक्षम असल्यामुळे त्यांच्यावर दुष्ट व दुराचारी लोकांच्या … … परिणाम होतो.

जुन्या पंडितांच्या या मत प्रणालीचा परिणाम गुन्हा व गुन्हेगार यांचा बाबतचा उपाययोजनेवर ही झाल्याखेरीज राहिला नाही. एखाद्या गुन्हेगारीला आपल्या कर्तव्याची जाणीव नाही, किंवा जाणीव असुनही त्याने गुन्हेगारी जगात स्वेच्छेने पदार्पण केले हे तत्व मान्य केले की, त्याला आपल्या कर्तव्याची बरोबर जाणीव करून देण्याचे किंवा समाजकंटकाचे जीवन फार कठीण व असह्य असते याची जाणीव करून देण्याचे काम अर्थातच समाजावर येऊन पडते. आपणाला आज जे गुन्हे अगदी क्षुल्लक वाटतील अशा गुन्हेगारीबद्दल ही फार कडक शिक्षा देण्यात येत असत.

दंड अथवा शिक्षा देण्यामागे दोन हेतु असत. अ) गुन्हेगाराची सुधारणा करणे. ब) समाजाचे रक्षण करणे हे दोन हेतु साध्य होण्याकरीता लोकांवर वचक बसविणे आवश्यक असते, आणि गुन्हेगारांना कडक शिक्षा करून त्यायोगे सुप्त गुन्हेगार प्रवृत्ती असलेल्या लोकांचे मनात शिक्षेविषयी भिती निर्माण करणे या एकच मार्गाचा याकरीता अवलंब करावा लागतो. याशिवाय आणखी एक अशी धार्मिक समजुत होती की गुन्हेगाराला कडक शिक्षा दिल्यामुळे तो पापमुक्त होतो. या मतानुसार गुन्हा म्हणजे एक प्रकारचे पापच समजले जाई आणि हे पाप जर नष्ट करावयाचे असेल तर पापी माणसाने भयंकर यातना व क्लेश सहन केले पाहिजेत. त्यामुळे गुन्हेगार जितकी तीव्र शिक्षा उपभोगी किंवा सहन करी, तितके त्याचे पाप अधिक प्रमाणात नाहीसे झाले असे समजावे आणि गुन्हेगार या जगात पापमुक्त झाला की मरणोत्तर जीवनात त्याला साहजिकच याचा फायदा झाल्याखेरीज राहणार नाही. या सिद्धांताद्वारे शिक्षेचा कित्येक प्रकाराने समर्थन केले जाई.

गुन्ह्याविषयी अलीकडे बदलण्याऱ्या म्हणजे आधुनिक दृष्टिकोनावर या धार्मिक समजुतीवर आधारलेल्या सिद्धांताचा काय परिणाम झालेला दिसतो. गुन्हेगाराची सुधारणा घडवून आणण्यासाठी जे सुधारक प्रयत्न करीत आहेत त्यांचे निरीक्षण असे की, शिक्षेमुळे गुन्हेगारांचा वागणुकीत मुळीच सुधारणा होत नसुन, समाजातील सुप्त गुन्हेगारावर ही तिचा परिणाम होत नाही. म्हणजे प्रस्थापित गुन्हेगारांना जबर शिक्षा दिल्यामुळे त्यांचा मनात शिक्षेविषयी जे एक भितीचे वातावरण

निर्माण व्हावयास पाहिजे तसे ते मुळीच होत नाही. अर्वाचीन विचारवंतांच्या दुसरे काहीतरी खऱ्या अर्थाने कार्यक्षम व परिणामकारक असे उपचार पद्धती शोधुन काढावी असे या सुधारकांना प्रामाणिकपणाने वाटते. शिक्षेने गुन्हेगार सुधारू शकत नाहीत यावर जुन्या पंडितांचा ही विश्वास आहे. तथापि गुन्हा पाप असुन गुन्हेगारांना कायद्याचे पालन होण्याकरीता त्याला कडक शिक्षा करणेच योग्य वा अपरिहार्य आहे असे ते प्रतिपादन करतात.

गुन्ह्याच्या उत्पत्तीसंबंधीची आधुनिक मते:– जुन्या पंडितांना गुन्ह्याच्या उत्पत्तीसंबंधीची विचारसरणी आणि आधुनिक पंडितांची त्या संबंधीची विचारसरणी यामधील भेद लक्षात घेणे अगत्याचे आहे. आधुनिक पंडितांची मते सर्वच बाबतीत तंतोतंत लागु पडतात असे म्हणणे चुकीचे असले तरी, गुन्हा उत्पत्तीचा समाजशास्त्राच्या दृष्टिकोनातून अभ्यास करणाऱ्या बहुतेकांना त्यांची मते मान्य आहेत. गुन्ह्याच्या उत्पत्तीचे विश्लेषण करताना आधुनिक विचारवंतांना जी गोष्ट प्रथम आढळून आली ती अशी की, इतर वर्तन प्रकार ज्या मार्गाने दृढ होतात त्याच मार्गाने गुन्हा हा वर्तन प्रकार ही दृढ होतो. व्यक्तीने त्याच्या संस्कृतीशी आंतरिक संबंध पक्के होत जातात व या संबंधाच्या अनुषंगाने त्याच्या आपल्या परिस्थितीशी प्रक्रिया होत असतात. यापैकी काही प्रतिक्रिया त्याचेकडून निश्चित केल्या जातात, व त्या प्रक्रिया म्हणजे त्या व्यक्तीच्या व्यक्तिमत्वाचे वैशिष्ट्ये होऊन बसतात, म्हणजे त्याचे विशिष्ट वर्तन प्रकार कायम स्वरूपाचे व निश्चित असे होतात. आपणाला हे वर्तन प्रकार जन्मतःच अवगत नसतात. संस्कृतीशी व परिस्थितीशी आपल्या ज्या आंतरक्रिया घडतात त्यातुन हे वर्तन प्रकार दृढ होतात. अनुभवाद्वारे ते आपण शिकतो. गुन्हा हा वर्तन प्रकार इतर वर्तन प्रकाराप्रमाणेच परिस्थितीजन्य असतो तेव्हा आपणाला असे सुचवायचे आहे की, मनुष्य गुन्हेगार प्रवृत्ती घेऊन जन्माला येत नाही. दुसऱ्या शब्दात सांगावयाचे झाल्यास 'मनुष्य जन्मतःच गुन्हेगार नसतो' त्याचे सर्व अनुभव जमा करुन शेवटी तो गुन्हेगाराचे जीवन जगविण्याचे ध्येय निश्चित करतो. परंतु या विधानाचा चुकीचा अर्थ लावला जाणार नाही याची खबरदारी घेणे आवश्यक आहे. गुन्हेगार प्रवृत्ती निर्माण होण्यास अनुकरण हा घटक प्रभावी असला तरी केवळ अनुकरणानेच मनुष्य गुन्हे करू लागतो असे म्हणता येणार नाही. व्यक्ती अभिरुची महत्वकांक्षा व वर्तन प्रकार यांची वाढ एका विवक्षित दिशेने होऊ लागते, आणि त्यातुनच पुढे गुन्हे करण्याची प्रवृत्ती बनत जाते.

वृद्ध गुन्हेगाराच्या वर्तन प्रकाराचे अनुकरण केल्यामुळे नवोदित गुन्हेगार गुन्हे करतात असे म्हणणे योग्य नाही हे स्पष्ट होते. गुन्हेगार प्रत्यंत गुन्हा कसा करावा हे शिकत नाहीत, तर वर्तन प्रकार, स्थिर प्रवृत्ती, मुल्ये ही शिकतात आणि यांचाच परिणाम गुन्हेगारी वृत्ती होण्यास आदर्शभुत आहे असे मानण्यात येते. योग्य तऱ्हेने विशिष्ट समंत मार्गांनी आपली ध्येय गाठणे अथवा आपल्या दैनंदिन गरजा पुरविणे माणसाला अशक्य होते त्यावेळी तो कुमार्गाचा अवलंब करतो. आणि त्याच तत्वानुसार गुन्हेगारांना आपले खुंटलेले व्यक्तिमत्व विकसित करण्यास वाव दिला जातो. आपल्या आशा–आकांक्षाची व दैनंदिन गरजांची पूर्ती होवून स्वतःच्या विकासास पूर्ण संधी मिळाली की कुमार्गापासून ते साहजिकच परावृत्त होतात. मात्र येथे एक गोष्ट लक्षात ठेवली पाहिजे आणि ती ही की, आत्मविकास अथवा व्यक्तिविकास होण्यास त्या व्यक्तीची संस्कृती तशी संपन्न असावी लागते. नाहीतर त्या व्यक्तीच्या नैसर्गिक शक्तीना योग्य मार्गदर्शन व संधी न मिळाल्यामुळे त्याचा तो विघातक गोष्टीसाठी उपयोग करीत. वर्तनप्रकार, स्थिर प्रवृत्ती, मुल्ये यांचा शेवट 'गुन्हा' या स्वरुपात माणसाच्या वर्तनात होऊ लागला की, कालांतराने हाच वर्तन प्रकार दृढमुल होऊन बसतो.

गुन्हेगारांच्यात व्यक्तिगत काही ही भेद अथवा अपवाद असले तरी, गुन्हेगारांचा एक गट या दृष्टीने विचार केल्यास असे आढळून येईल की, शारिरीक व मानसिक दृष्ट्या ते अगदी सामान्य व सर्वसाधारण असे म्हणतात. आरोग्य, शारिरीक बळ आणि मानसिक बळ या दृष्टीने गुन्हेगारांचा विचार केल्यास ते सर्वसामान्य माणसाप्रमाणेच असतात असे आढळून येते. त्यांचे वर्तन हे मात्र सर्वसामान्य प्रकारचे नसते याबाबत शास्त्रज्ञात असे काही मतभेद आहेत. प्रो. गिलीन यांनी आपल्या ग्रंथात याचा उल्लेख केला आहे. ते म्हणतात की, एका मताचे मते गुन्हेगारामध्ये काही मानसिक विकृती असते तर मताचे मते गुन्हेगारांची बुद्धी इतर लोकांच्या बुद्धीपेक्षा तीव्र असते, तर काही इतर शास्त्रज्ञांचे म्हणणे असे की, गुन्हेगारांचा बुध्यांक फारच कमी असतो.

गुन्हेगारी वर्तन आणि बुध्यांक यांचा काहीसा संबंध असल्याचे प्राचीन अभ्यासकांनी मान्य केले आहे. सर्वसाधारण लोकांच्या बुध्यांकाबरोबर तुलना केली असता गुन्हेगारांचा बुध्यांक निश्चित कमी असतो हे मत अधिक लोकप्रिय झाले आहे. परंतु हे मत चुकीचे आहे आणि ही चूक घडण्याची कारणे दोन प्रकारची आहेत. पहिली चूक अशी की, हे शास्त्रज्ञ असे गृहित धरतात की, गुन्हेगार म्हणजे ज्याला शिक्षा झाली आहे तो परंतु असे कित्येक आरोपी असतात की, ज्यांनी प्रत्यक्ष गुन्हे केलेले असतात परंतु ते शाबीत होऊ शकत नाहीत व म्हणून त्यांना त्या आरोपातून मुक्त करण्यात येते. दुसरी चूक अशी की, बुद्धीमत्तेचे मापन निश्चिततरित्या करता येते यावर या शास्त्रज्ञांना विश्वास वाटतो. बुद्धीमत्ता ही फार गुंतागुंतीची बाब असून तिचे साध्या सोप्या पद्धतीनी मापन करता येते व ते अचूक असते असे म्हणणे गैर आहे.

त्यामुळे गुन्हेगार आणि बुध्यांक यांचा निश्चित संबंध आहे असे आपण मान्य करू शकत नाही. म्हणून गुन्ह्याचा प्रतिबंधक उपाय योजताना कमी बुद्धीच्या या विकृत मनोवृत्तीच्या गुन्हेगारांचे निर्मुलन करावे या कार्यपद्धती वर ही आपण विश्वास ठेवू शकत नाही.

काही शारिरीक दोषामुळे मात्र गुन्हे करण्यास प्रवृत्त झाल्याची उदाहरणे सांगता येतील. परंतु त्याला सुद्धा एक विशिष्ट परिस्थितीची आवश्यकता असते. उदा. एखाद्या शारिरीक व्यंगामुळे नोकरी किंवा अन्य कामधंदा मिळत नसेल, आणि त्यामुळे सभ्य न्याय मार्गांनी उपजीविका करणे अशक्य झाले असेल तर मात्र गुन्हा करण्याची वृत्ती निर्माण होणे शक्य आहे. शारिरीक दोषामुळे मनुष्याचा जगाकडे पहाण्याचा दृष्टिकोन दुषित होण्याचा संभव असतो. जग म्हणजे आपला शत्रू आहे अशी त्याची भावना होते. स्वतःच्या असमर्थतेची ही त्याला तीव्र जाणीव होऊ लागते. यामुळेच त्याचे भावनात्मक जीवन त्याला जगाशी जडजोड करण्यास अपात्र ठरवते. भावनेची घडी विस्कटल्यामुळे त्या व्यक्तीच्या हातुन जे विकृत वर्तन प्रकार घडतात त्यापैकीच गुन्हा हा एक वर्तन प्रकार असतो.

गुन्ह्यांना पायबंद घालण्याच्या परिणामकारक पद्धती:– गुन्हा घडण्यापुर्वीच काही उपायांचा अवलंब केल्यास गुन्ह्यांना प्रतिबंध केल्यासारखे होईल असे प्रतिबंधात्मक उपाय अनेक प्रकारचे आहेत. उपायांचा सरास उपयोग करता येत नाही. त्यांचा उपयोग करता येईल अशी क्षेत्रे फार कमी आहेत. गुन्हा प्रतिबंधक उपाययोजनेचा या जनमताचा प्रतिकुल परिणाम झाल्याखेरीज राहत नाही. प्रतिबंधक उपाय योजताना, ते ज्या संस्कृतीच्या लोकांकरिता उपयोगात आणावयाचे असतात त्यांची संस्कृती विचारात घ्यावी लागते.

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

परिस्थिती या ज्ञानाचा अभाव आणि गुन्ह्यासंबंधीच्या संशोधनविषयीची लोकांची उदासीनता या प्रतिकूल गोष्टींना तोंड द्यावे लागत असल्यामुळे गुन्हा प्रतिबंधक योजनांचे क्षेत्र फार मर्यादित असे झाले आहे त्यांचा थोडक्यात उल्लेख पुढीलप्रमाणे आहे. १. एखाद्या व्यक्तीत गुन्हेगार प्रवृत्तीची वाढ करण्यास कोणते घटक अनुकूल आहेत याचा अभ्यास करून घरातील कौटुंबिक मंडळी व संभाव्य अपराधी यांचे संबंध अधिक सलोख्याचे व्हावेत म्हणून मुलांना मार्गदर्शन करणारी चिकित्सा केंद्रे उघडणे. २. उनाड मुले व संभाव्य अपराधी यांचे बाबतीत संशोधन करण्यास मदत करणाऱ्या शाळा प्रमुखांची नोंद करणे. ३. बाल गुन्हेगार व बाल अपराधीकरता स्वतंत्र न्यायालये व तज्ञ कामगार यांची योजना करणे. ४. अपराध प्रवृत्तीची नवीन वस्तणे सापडल्यास त्यांना लगेच प्रसिद्धी देणे. ५. अनाथाश्रम काढणे त्यांची संख्या वाढविणे. ६. कमी सवलती मिळणाऱ्या लोकांकरिता वसाहतीची व करमणुकीची साधने उपलब्ध करणे. ७. रेडिओ, वर्तमानपत्रे, चलचित्रपट यांच्याद्वारे अपराध प्रवृत्तीस उत्तेजन मिळू नये म्हणून त्यांच्या कार्यक्रमावर व बातम्यांवर नियंत्रण घालणे. ८. कौटुंबिक संबंध अधिक दृढ करणारे कार्यक्रम आखणे. ९. गुन्ह्याच्या समस्येवर लोकांनी ही आपले लक्ष केंद्रित करून ती समस्या सोडविण्याकरीता त्यांचे सहकार्य लाभावे म्हणून तसा प्रसार करण्याकरिता मंडळीची स्थापना करणे. १० लोकांतील विघातक प्रवृत्तींना आळा घालण्याकरता मानसिक आरोग्य टिकविणाऱ्या योजना अंमलात आणणे.

संदर्भ ग्रंथ

१. भा. कि. खडसे: भारतीय समाज आणि सामाजिक समस्या, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, नागपूर.
२. पी. के. कुलकर्णी: भारतातील सामाजिक समस्या, विद्या प्रकाशन नागपूर, १९९८.
३. Ram Ahuja: Rawat Publication, Indian Social Problem Jaipur, 2002.
४. G. R. Madan: Indian Social Problem, Allied Publications Pvt Limited, 1966.

स्त्री आणि कौटुंबिक हिंसाचार: एक सामाजिक अध्ययन

उर्मिला नारायण टोहने, एम. ए. समाजशास्त्र, एम. एस. डब्ल्यु., सेट, द्वारा. पी. नान्नवडे, १६, शिवनगर, नागपूर ०८.

प्रस्तावना:— भारतीय समाज विविधतेने नटलेला आहे. भारतीय समाजामध्ये स्त्रीयांच्या संदर्भात दोन दृष्टीकोन आढळून येतात. एक म्हणजे स्त्री आणि पुरुष यांना समान समजण्यात येते. किंबहुना काही बाबती मध्ये स्त्रीयांना पुरुषापेक्षा श्रेष्ठ समजण्यात येते. त्यांना देवतेचे प्रतीक समजुन दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी इ. पुज्य मानण्यात येते. तर दुसऱ्या बाजुला हीन समजून त्यांना सर्व अधिकारां पासुन वंचित ठेवण्यात येते. दर दिवशी वर्तमानपत्रे उघडलेले की, आपल्याला स्त्रीयां वरील अत्याचारांच्या अनेक बातम्या दिसतात. कुठे हुंडाबळी, कुठे बलात्कार, तर कुठे लैंगिक छळ इ. प्रकारे स्त्रीयांवर होणारे अत्याचार पाहीले तर, स्वातंत्र्याच्या अर्ध शतकानंतरही आपण स्त्री पुरुष समानता प्रस्थापित करू शकलो नाही. स्त्रीयांना कमी लेखणे हा दृष्टीकोन पारंपारिक असला तरी तसूभरही नाही. स्वतंत्र भारतामध्ये घटनात्मक लिंगभेदाबाबत बरेच कायदे असलेतरिही मात्र सामाजिक लिंगभिन्नता सर्वत्र पाळली जाते. त्यामुळे स्त्रीयांवरील अत्याचाराची संख्या कमी होत नाही. विविध प्रकारे स्त्रियांची पिळवणुक केली जाते. स्त्रीयांचा प्रवास दिव्यातुन जातो असे दुर्दैवाने म्हणावेसे वाटते. एकंदरीत महिलांबाबत सामाजिक स्थितीचा आढावा घेतांना आपनास आजही भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये महिलांबाबत निम्न पातळी मानसिकतेचे दर्शन घडुन येते व यामुळे दिवसेंदिवस महिलांची स्थिती बिघडतच जात आहे असे निदर्शनास येते.

समाजव्यवस्थेमध्ये महिलांना विविध भुमिका पार पाडतांना त्यांना विविध स्तरावर विभिन्न अन्याय व अत्याचारांना बळी पडावे लागते. महिलांवरिल अन्याय व अत्याचार कुटूंबातुन सुरू होवून सर्वच स्तरावर त्यांना निम्न व अन्याय.अपमानजनक स्थितीला सामोरे जावे लागते. सामाजीक, आर्थिक, शैक्षणिक, आरोग्य किंवा राजकिय संदर्भ किंवा व्यवहाराबाबत नेहमी महिलांची अवमानना व निम्न स्थान देण्याच्या भारती जनमानसिकतेमुळे त्यांची भावना, क्षमता, ज्ञान, कौशल्य यांचे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दमन होत असल्याने दिसून येते. स्त्री ही कोणत्याही वयातील, वर्गातील, जाती, धर्मातील किंवा कोणत्याही आर्थिक स्तरातील असली तरीही, तिला अन्यायजनक स्थितीला समोरे जावे लागते व बहुतेकदा या अन्यायजनक स्थितीला विरोध करतांना किंवा सहन करतांना बहुतेकदा तीच्याबाबतीत शारीरीक, मानसिक, भावनिक, सामाजिक, आर्थिक छळ आणि हिंसाचार होतांना दिसुन येते. प्रत्येक राष्ट्राने महिलांकरिता संरक्षणात्मक अनेक कायदे केलेले आहेत परंतु जागतिक पुरुषप्रधान संस्कृतीच्या प्रभावाने महिलांना मात्र आजही निम्न व दुय्यम स्थान समजण्याची पुरुषप्रधान मानसिकता कमी झालेली दिसत नाही.

स्वतंत्र भारतामध्ये महिलांच्या संरक्षणात्मक भारतीय घटनेव्दारे अनेक कायदे व तरतुदी केलेल्या आहेत ज्यामध्ये विवाहसंदर्भात कायदेशिर विवाह, शुन्य विवाह, हुंडाविन्मुलन, घरगुती हिंसाचार, कायदेशिर घटस्फोट, पोटगी, १८ वर्षाखालिल मुलांच्या ताबा व संगोपन व त्यांना खर्चप्राप्तीचा हक्क, पती व पालकांच्या संपत्तीमध्ये समान हिस्सा. कामगार महिलांबाबत महिलांचे कामाचे तास व कार्यस्थिती, महिलांच्या मातृत्व रजा व रजेअंतर्गत वेतन, कार्यस्थळी लिंगभेद व लैंगिक अत्याचार संरक्षण अधिकार, आरोग्य विमा व सामाजिक संरक्षण हक्क. मागासवर्गिय व अपंग महिलांसाठी कायदा करून स्त्रियांना न्याय, समता व भेदभाव दुर करणारे कायदे अस्तित्वात आहेत. कौटुंबिक हिंसाचार कायदा २००५ हा पारीत केला असून २६ ऑक्टोंबर २००६ पासुन याची अंमलबजावणी सुरू झालेली आहे तरी सुद्धा स्त्रियांवरील कुटुंबामध्ये कुटुंबाबाहेर हिंसाचार वाढत असल्याने विदारक चित्र आज आपनास दिसुन येते.

महिलाबाबत सामाजिक धारणेची ऐतिहासीक पार्श्वभूमी:— इतिहास पूर्व संस्कृति मध्ये स्त्रियांच्या उत्पादनातील आणि पुनरुत्पादनातील योगदान अत्यंत मोलाचे होते. कृषीप्रधान समाजाला स्त्रियांची सफलता पवित्र मानली गेली होती.स्त्रियांना स्वः चा जोडीदार स्वयंवराद्वारे निवडीचे स्वतंत्र असलेल्या काळातही, एका परीटाच्या सांगण्यावरून सीतेचा त्याग करणारा राम, भर राज्य सभेत द्रौपदीला विवस्त्र करणारा दुर्योधन, कर्ज फेडण्या साठी तारामतीला विकणारा हरीशचंद्र इत्यादी अनेक उदाहरणे दिसुन येतात. वैदिक

Impact Factor - 6.293

ISSN-2349-638x

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue No.71

Significance Of Fairs And Festivals In Human Life

Chief Editor

Pramod P. Tandale

IMPACT FACTOR

SJIF 6.293

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

PRINCIPAL
NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE
KOLHAPUR

Sr. No.	Name of the Researcher	Title of The Paper	Page No.
112	प्रा. सौ. लक्ष्मी विष्णु भंडार	विज्ञान, कृषी जीवन व ग्रामीण विकास	377
113	श्री. डी.के. डाके	सिंधुदुर्ग जिल्हयाची सांस्कृतिक परंपरा – एक अभ्यास	380
114	महादेव ज. जाधव	होळी व मोहरम या सणांमधील श्रध्दा आणि अंधश्रध्दा	382
115	सौ.सविता नामदेव नांदवडेकर	हिंदू धर्मातील सण व उत्सव यातील स्त्रियांचे स्थान	386
116	श्रीमती स्मिता रावसाहेब पुजारी	भारतीय सण-उत्सवातील रोजगारसंधी	390
117	डॉ.सर्जेराव पांडुरंग चव्हाण	कोल्हापूर शहरातील माध्यमिक शाळेमधील इ.10 वी च्या विद्यार्थ्यांना सण व उत्सवांचे धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व विकसन करून त्यांच्या अध्ययनावर होणारी परिणामकारकता अभ्यासणे.	395
118	डॉ.सविता अशोक व्हटकर	गौरीच्या गाण्यातील संस्कृती	398
119	डॉ. अपर्णा कुचेकर	हिंदी आदिवासी केंद्रित उपन्यासों में चित्रित पर्व, उत्सव तथा त्यौहार	401
120	प्रा. डॉ. मोहन सावंत	प्रेमचंदके 'गोदान' उपन्यास में कृषक संस्कृति	404
121	वर्षा लिंबराज कांबळे	त्यौहारों के बदलते आयाम	406
122	डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव	राजपूतों के त्यौंहार और उत्सवों का समाजशास्त्रीय अध्ययन	410
123	डॉ. अे. जी. मगदूम	भारतीय सण - उत्सव आणि कृषी व्यवसाय	416
124	प्रा.डॉ.एकनाथ बाबुराव आळवेकर	'चैत' कादंबरीतील सण उत्सवाचे चित्रण	421
125	प्रा. वसंत बजरंग भागवत	माहिती जतन व संवर्धनातील ग्रंथालयांची भूमिका	423
126	डॉ. नयना श्रीकृष्ण गायकवाड	सण उत्सव व संस्कृतीचे जतन	426
127	श्री गणेश दादू गायकवाड	आजचे सण, समाज आणि पर्यावरण	429
128	प्रा.हसीना अत्तार	उत्सव का साहित्य में प्रतिबिंब	432
129	प्रा. श्रीदेवी बबन वाघमारे	भारतीय त्यौंहारों का मौसम और खानपान से संबंध	435
130	डॉ. कविता अजीतसिंह सुल्हयान	कुंभ मेला- एक धार्मिक महापर्व	437
131	डा. वर्षा गायकवाड	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में मेले और त्योहार	440

राजपूतों के त्यौंहार और उत्सवों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

- डॉ. महेंद्रकुमार आ. जाधव
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
नाइट कॉलेज ऑफ आर्ट्स ॲण्ड कॉमर्स,कोल्हापूर

प्राक्कथन

किसी भी समाज अथवा देश की संस्कृती को पहचानने के लिए उसके अंतर्गत झाँकना जरूरी होता है। उस समाज के तथा देश के सामाजिक जीवन की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है। सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब उस समाज के अथवा उस देश के खेल, त्यौहारों और उत्सवों आदि के द्वारा दिखायी देती है। इस दृष्टि से राजपुतों की सामाजिक जीवन की यथायोग्य जानकारी देने हेतू प्रस्तुत शोध निबंध को तैय्यार किया गया है। उनकी बहुत सी बातें हिंदुओं के त्यौंहारों जैसी दिखायी देने के बावजूद भी उनमें एक अलग सी विशेषता दिखायी देती है। राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र इस राज्यों में राजपुत लोग रहते हैं। राजपुत लोग हिंदी, हरियाणवी, भोजपुरी, गुजराती, मैथिली, मारवाडी, मेवाडी, उर्दू, पंजाबी, डोंगरी और पहाडी ये भाषांए बोलते हैं।

उद्देश्य

1) राजपूत लोगों में त्यौंहार कैसे मनाये जाते है इसका अध्ययन करना।
2) राजपूत लोगों में उत्सव कैसे मनाये जाते है इसका अध्ययन करना।
3) त्यौंहारों तथा उत्सव के माध्यम से राजपूतों के सामाजिक जीवन का अध्ययन करना।

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत संशोधन प्रपत्र तैय्यार करने के लिए दुय्यम स्त्रोत (Secondary Source) पद्धती को अपनाया गया है। इसमें ज्ञानी लेखको के ग्रंथों का संदर्भ दिया गया है। आधार लिया गया है।

राजपूत लोग अपने त्यौंहार निम्नप्रकार से मनाते है।

1) स्त्रियों का अन्नपूर्णा दर्शन : पुरूषों की तरह ही स्त्रियाँ पुरूषों से भी अधिक त्यौंहार मनाने की इच्छाशक्ती की प्राकृतिक प्रसन्नावस्था में अपने भी त्यौंहारों को मनाने की जिज्ञासा रखनेवाली स्त्रियाँ इसी दौरान त्यौंहार मनाने की इच्छा रखना यह अत्यंत स्वाभाविक है। स्त्री स्वातंत्र्य प्रिय राजपूत समाज इन चैत्र गौरी के समारोह द्वारा पूरी की है। राजपूतों समाज में कर्पूरगौर तथा शंकर यह पुरूषों के आराध्य है तथा गौरी पार्वती स्त्रियोंकि आराध्य देवता है। राजपूतों की देवी गौरी के एक हात में कमल तथा दुसरे हात में शंख धारण किया हुआ होता है। समस्त जीवसृष्टी के जीवन को प्रफुल्लित रखनेवाली होती है। देवी पार्वती के हात में स्थित कमल की तरह हर एक को अपना जीवन सदैव ताजा और रसभरीत विकसित रखना है। ऐसे भाव देवी पार्वती के हात के कमल से सूचीत होता है। जीवन के आनंद को लेते समय किसी प्रकार की भौतिक देवी किसी तरह की विपत्ती मनुष्य के जीवन पर आयी तो उसे सदैव लढने के लिए तैयार रहना चाहिए ऐसे शंख के द्वारा प्रतीत होता है। शंख से युद्ध की ललकार प्रतीक होता है तथा युद्ध की ख्याती को प्रसारीत करने का द्योतक ऐसे वाद्यों को ध्वनित करता है। किंतू चैत्र महीने में राजपूत स्त्रियाँ जिस गौरी की उपासना करती है उसका स्वरूप जीवन-मृत्यु से संबंधित न होकर। जीवसृष्टी में सभी प्राणिमात्रा का पालन-पोषण करनेवाली, जीवों का जीवदान देनेवाली अन्नपूर्णा होती है यह स्पष्ट होता है।

गौरी रूपी अन्नपूर्णा का दर्शन लेने के उद्देश्य से अपने-अपने खेत खलिहान की पैदास, सृष्टि ने परिधान किया हुआ हरा भरा माहौल, हरे भरे वन उपवन, खेत फल फुलों से भरा हुआ खलिहान, सुशोभित हरी-भरी प्रकृती को देखने के लिए ग्रामों की सभी स्त्रियाँ इकट्ठा किसी सुंदर उपवन अथवा वन की ओर प्रस्थान करती हैं। सभी जीवसृष्टि को जीवनदान देनेवाली सृष्टि के भंडार अपनी आँखों में भरकर उसका अवलोकन करती है।

विभिन्न रंगो के फुलों की मालाएँ और आभूषणों को बनाकर एक दुसरे को पहनाती है और अत्यंत हर्ष उल्हास से आनंद से पेडो पर झूले बाँधकर झोंके लेते हुअे मधूर गाने गाती है और घंटो उसी उपवन में अपना समय बिताती हैं। इस प्रकार से झोंकों को आनंद लेकर थकी हुअी राजपूत स्त्रीयाँ वही पर उपहार करके प्रसन्नमन से अपने घर प्रस्थान करती है।

2) गौरीपूजन : गौरीपूजन समारोह में राजपूत स्त्रियाँ गाँव के बाहर के खेतो में से मिट्टी लाती है। और उस गौरी की दो प्रतिमा तैय्यार करती है और उसकी प्रतिष्ठापना करती है। उसके साथ काली मिट्ठी में धान के बीजों को लगाया जाता है। वह बीज जैसे अंकुरीत होकर थोड़ा सा बड़ा हो जाता है। उसके बाद राजपूत स्त्रियाँ हात में हात डालकर र्दद-गिर्द उगे हुअे पौधे को बीच में रखकर उसके गोल घुमते हुअे फेरे ले लेती है। उसके बाद नये-नये पौधों को पुरूषों में बाँट लेती है। पुरूष उन पौधों को अपने पगडी में लगाकर गर्व से और अभिमान से चलते हैं। इस पूरे समारोह में स्त्रियाँ गौरी स्तृती स्त्रोत गाती रहती है। गाते समय वह अपने पती के दिर्घायू उसके कल्याण की कामना करती है। उससे उनकी उनामय काया प्रदान करके की और सदा सौभाग्यवती रहने की माँग करते हुअे प्रार्थना करती है। और गौरी से आशिर्वाद लेती है।

3) छोटी गौरी, रंभापूजन, अरणषष्ठी आदी : वैशाख महिने के गुरू होते ही छोटी गौरी का पिछले त्यौहार की तरह जैसे छोटी आवृत्ति की जाती है। महाराष्ट्र की स्त्रियों के वटसावित्री के व्रत की तरह का व्रत वैशाख शुद्ध चतुर्थी के समय मनाती है। सदा सुहासन रहने के साथ-साथ वैधव्य न आने की कामना करती है। जेष्ठ महीने में अप्सरा की नायिका रंभा की पूजा की जाती है। युद्ध भूमी में हुतात्मा हुअे वीरों का स्वागत करके स्वर्गमंडल तक को जानेवाली यही अप्सरा होती ऐसा मानते हुअे इस नायिका की पुजा बडे ही प्रेम और भक्ति भाव से और बडे ही थाट बाट से किया जाता है। जैष्ठ महीने का दुसरा महत्वपूर्ण त्यौहार होता है। यह त्यौहार भी स्त्रियों का ही त्यौहार होता है। संतती की इच्छा रखनेवाली कामिनीयाँ इस दिन अरण्य में जाकर कुछ विशिष्ठ वनस्पती का भक्षण करती है।

4) दिपावली : हिंदू समाज के बाकी हिंदूओं की तरह राजपूतों में दिपावली का त्यौहार मनाया जाता है। राजपूतों में दिपावली का त्यौहार अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सामान्यत बाकी के हिंदूओं की तरह ही वे दिपावली का त्यौहार मनाते है। कार्तिक शुद्ध चतुर्दशी में जलयात्रा के समारोह में उदयपूर के राणा अथवा उसके मंत्री, सरदार व आम नागरिक सभी मिलकर जुलूस निकाल है और किसी तालाब पर जाकर वरूणदेव की पूजा करते है। पानी पर दिए छोडे जाते है। पूरे का पुरा तला उज्वल दीप ज्योती से प्रकाशित दिखायी देता है। भगवान विष्णू अपनी चातुर्मास की निद्रा से जागृत होते है ऐसी इतकी मान्यता होती है। दुसरे दिन पूर्णीमा के समय मकर संक्रांति का त्यौहार मनाया जाता है।

राजपुत लोग अपने उत्सव निम्नप्रकार से मनाते है :

1) अहेरिया का उत्सव : बसंत ऋतु के आगमन के बाद वृक्षों में नये पत्ते का निर्माण होने लगता है। जाडों का मौसम बीत जाने के बाद, वनश्री के साथ सभी जीवसृष्टि जब तरोताजा दिखायी देती लगती है। उसी समय इस समारोह का आयोजन किया जाता है। बसंत ऋतु को सभी ऋतुओं का राजा कहा जाता है। बसंत के आगमन के शुभ और प्रसन्न काल में उनकी त्यहती मृगया का संमारोह रखने का उसका प्रारंभ करने का समारोह मनाने का आयोजन बसंत ऋतु के औचित्य पर किया जाता है। मेवाड के राणा सहीत अन्य राजा-महाराजा अपने पुरोहित दवारा मुहरत देखकर एक अच्छा शुभ दिन तय करते है। उस शुभ दिन के अवसर पर अपने परिवारवालों के साथ जंगल में शिकार करने के लिए जले जाते है। इस दिन की हुअी शिकार को वे मुहरत की शिकार ऐसा संबोधित करते है। इस दिन की गयी शिकार शुभ रहेगी या अशुभ यह देखकर ही साल भर की जानेवाली शिकार शुभ रहेगी या अशुभ इसकी मिमांसा करते है। आनेवाला साल शिकार के लिए शुभ

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

रहेगा या अशुभ यह इसी दिन पर निर्भर रहता है। यही कारण होता है कि इस शुभ दिन कि शिकार करते समय पूरी शक्ति और शौर्य के साथ करने की इच्छा रखते है। शुभ शिकार होने के लिए प्रयास करते रहते है।

अहेरिया समारोह के मुहरत को तय करके सभी राजपूत राजे और निमंत्रित सरदार उनकी सेना को शिकार करने के लिए ले जाते है। इस समय व बसंती वर्ण का पोशाख परिधान करते हुए अपने अपने घोडेपर संवार होते है। छोटे-बडे सभी राजपूत अपने-अपने शस्त्राओं से सुसज्जित होकर संवार होते हुअे सवारी करते है। हर-एक राजपूतों में अपने साहस और पराक्रम से दुसरों को पीछे रखने की मनीषा होती है। अहेरिया की शिकार का मृग मतलब वराह होता है। वराह की शिकार के बिना दुसरी कोई भी शिकार करना उन्हें पसंद नहीं है। एक बार जब यह जंगल में चली जाती है तो घमासान हो जाता है। और हर कोई सुर्यप्रकाश के जीतना तेज से चमकनेवाले भाले को हात में लेकर तैय्यार हो जाते है।

शिकारीयों की पूकार को सुनकर सभी वराह बिथरकर दौडने लगते हैं। बिथरकर इधर-उधर दौडनेवाले वराहों के पिठ पर पीछो हर कोई अपने घोडे जल्द गती में दौडाता है। एकबार जब वह किसी वराह का पीछा करना शुरु कर देते है तो उरो खत्म किए बिना छोडते नहीं है। उसके लिए उन्हें किसी भी खायी, हो चहाने हो, नदी नाले बीच में जो भी आए उसे पार करते हुअे वे अपने निशान को साधने में जुट जाते है। पेड पौधे हो या अन्य अडचणे उन्हें लांघकर वे वराह की शिकार के लिए दौडते रहते है। किंतू वराह का खत्म करना उसकी शिकार करना उन्हें मारना यही उनका मकसद रहता है। इस अहेरिया के समारोह के समय बिल्कुल ही उन्मादित होकर पूरे जोश और उल्लास से अपनी मृग का पीछा करते है। सैंकडो मृग राजपुतों की इस मृगया तृष्णा शिकार हो जाते है। पूरे वन में खून और मांस की दलदल दिखायी देने लगती है। अहेरिया के दिन बहुत से मृग भी आक्रमक हो उठते है। और पलटकर वार करते है। अपनी शिकार करने के लिए आए हअे पर तिव्रता से वार करके उन्हें पूरी तरह से जख्मी बना देते है। कुछ राजपूत इनके वार से बली पड जाते है। कई राजपूत जख्मी भी हो जाते है। इस पर से शिकार करने के लिए आए हुअे राजपूतों पर पलटवार कर खायी में पेड झुंड में सुरक्षित जगह का मार्ग ढुँढने लगते है। किंतु बहुत से राजपूतों को जख्मी करनेवाने वराहों को छोडकर कोई जा पाएगा व घोडे के साथ से सही निशाणा साधते हुअे पूरे जोश के साथ तीर चलाते है वह वराह के पीठ में से निकलकर जमीन पर पहुँचे बिना नहीं रहता है। एक ही मृग पर प्रहार करते समय गलत निशाना लगने के कारण कभी-कभी एक दुसरे पर घाव लग जाता है। इस अहेरिया के समारोह के समय कभी-कभी कईयों के हात पैर टूट जाते है। कईयों की आँखे फूट जाती है। कई राजपूत सदा के लिए अपाहिज बन जाते है। कुछ राजपूतों की जाने भी इस समारोह के दौरान चली जाती है। फिर भी राजपूत लोक यह परंपरा छोडने के लिए तैय्यार नहीं है। आज भी वे यह परंपरा छोडने के लिए तैय्यार नहीं है। युवा पीढी की अविष्यकाल के शौर्यगाथा की बीज इस समारोह में है। अपने शरीर पर अनासक्त होकर अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए वह कोई भी आपत्ति को सहन करने की शिक्षा इस समारोह द्वारा उनका सहजता से मिल जाती है।

अग्निदिव्य पार करके पुरी युवा पीढी इसमें अग्निपरीक्षा देती है। इसीसे उनकी शौर्य गाथा, उनकी सहिष्णुता, निस्वार्थता तथा साहसों का स्वर्ण अत्याधिक उज्वल दिखायी देने लगता है। अपने शरीर पर जख्म रखना यह उनके लिए गौरव की बाते होती है।

राजपूत स्त्रियाँ इस अहेरिया के समारोह में भी सम्मिलित होती है। इस समय जो युवक सबसे अधिक साहसी तथा शौर्य दिखायी देता है, तथा अद्भूत कर्म करके दिखाता है। राजपूत कुँवारियाँ उनपर प्रेम करने लग जाती है। अहेरिया के वन का उद्देश्य ही यही होता है। युवावों को अधिक साहसी बनाने की पाठशाला साथ ही हिंसा धर्म का पालन करने का पाठ पढाया जाता है। साहसी कृत्यों की वजह से स्त्रियाँ तथा कुमारिकाओंको प्रभावित करनेवाले युवकों पर आसक्त होकर युवतियाँ वहीं से अपने प्रेम की शुरुआत करती है। इसमें कोई शक नहीं है। अहेरिया समारोह के समय सिर्फ पुरुष ही अपना शौर्य दिखाते है ऐसा नहीं बल्कि साहसी युवतियाँ भी अपने युवा होने का शौर्य और ओज दिखाती है। साहसी युवतियाँ भी अपने रक्त तेज से और शौर्य से पुरुषों को

प्रभावित करती है। इसी प्रकार समान साहस और समानशील युवक युवतियों में सख्य भाव निर्माण होता है, तथा जन्म जन्मांतर के लिए अपना-अपना बनाना चाहते है। उनका एक दुसरे के साथ रिश्ता भी तय किया जाता है।

अहेरिया की शिकार गौरी की मतलब शिवानी की संतुष्टी के लिए की जाती है। वराह की शिकार कर देवी गौरी को वराह भोग बहुत ही प्रिय होता है। वराह का भोग गौरी को प्रिय होने के कारण राजपूतों को भी वराह का प्रसाद अधिक प्रिय है। राजपूत राजा द्वारा अथवा राजपुत्र ने मारे हुअे वराह का मांस पकाया जाता है और उसके बाद गौरी का भोग लगाकर फिर प्रसाद के तौर पर बॉटा जाता है। सभी लोग इस भोजन का टथेच्छ आस्वाद लेते हैं। दिनभर मृग की शिकार के लिए दौड भाग करनेवाले थके हारे वीरों को गौरी का प्रसाद तरोताजा बना देता है। कुछ पल आराम करके श्रम परिहार की गप-शप लडाते है और संध्या के समय अपने-अपने घर वापस चले जाते है। उसके बाद अहेरिया के समारोह मे जिन वीरों ने अपनी वीरता दिखायी हुअी होती है उस उद्भूत शौर्य क गाथाओं को चारों और फैल जाती है। वे प्रशंसा के धनी होते है। इसी प्रकार अहेरिया समारोह में राजपूतों की वीरता, उनका साहस, उनका शौर्य रादैव रखकर उनको सच्चे योद्धा बनाया जाता है।

2) बसंतोत्सव : सामान्य तौर पर देखा जाय तो हिंदूओं के समारोहो की तरह राजपूतों के होने चाहिए किंतु देशकाल परत्वे एक ही धर्म में अलग अलग रीतिरिवाज अथवा त्यौहार-उत्सवों का निर्माण होता है। एक हिंदू समाज में राजपूत, बंगाली, महाराष्ट्रीय अथवा गुजराती शाखाओं में उनका एक अलग सा रूप दिखायी देता है। राजपूतों मे यह उत्सव इतने होते है कि इसके बारे मे यह कहावत है कि, 'सात वार और नौ त्यौहार' यह बाते कही जाती है। उसकी कुछ विशेषता यहाँ पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। बसंत आगमन के शुभकाल मे देश की युवा पीढीयों मे जुगुप्सा का संचार होने के लिए अहेरिया नाम का उत्सव/समारोह मनाया जाता है। यह समारोह मे बाकी समारोह मे यह विशेष तौर पर मनाया जाता है। उसी बसंत काल का दूसरा समारोह है बसंतोत्सव।

बसंतोत्सव यह सामान्य हिंदू समाज में है। किंत राजपुतों मे जिस विराट रूप मे मनाया जाता है। वह शायद ही अन्य किसी जगह अगर वह मनाया भी जाता होगा तो भी राजपूतों के संपर्क से ही। राजस्थान मे यह उत्सव बसंत पंचमी के दिन मनाया जाता है। चालीस दिन तक उनका यह उत्सव शुरू रहता है। राजपूतों मे जानपद का महात्म्य कितना प्रबल होता था लोकतंत्र तत्व किस प्रकार विकसित होता गया यह उनके उत्सवों की ओर देखने से ही उसकी कल्पना आ जाती है। गरीबों के गरीब मे से लेकर अमीर से भी अमीर लोग इस समारोह मे सम्मिलित होते है। सभी प्रकार के लोग इसमें सहभागी होते है। 'संगछध्व संवदध्वं सं वो मानसिं जानताम' यह वैदिक मंत्र इस उत्सव मे चरितार्थ कर दिखाया जाता है। छोटा बडा, अमीर-गरीब, ग्रामवासी-नगरवासी, राजा-रंक, धनी-चाकर आदि सभी प्रकार के भेदभाव को भूलाकर सभी एक दुसरों मे घुल मिल जाते है। अलग-अलग प्रकार की चित्र विचित्र रंगबीरंगी वस्त्र पहनकर घूमना उनको अच्छा लगता है। आनंद, खुशी, चैन, विलास की जीतने भी साधन होते है उन सभी चीजों का मनचाहा आनंद ले लेते है इस उत्सव मे सभी तरह की बाते होती है। इस उत्सव में नशीले पदार्थों का भी सेवन किया जाता है। वह बहुत ही आनंद से और स्वच्छंदता से इस उत्सव मे प्रवाहित होते है। अमीर लोग भी गाँव के आम लोगों के साथ ढोल-ताशे बजाते हुअे टोली टोली बाहर आने लगते है। कामदेव के शक्ति की स्तुति सुमने अत्यंत बहारदार गीतों को गाते हुअे राजमार्ग से संभ्रमण करते है। उन गीतों के शब्द मे गाँवों का वर्णन होते हुअे भी उसमे जो अर्थ निकलता है वह सृष्टि की मनोहारी रूप का भाव उसमे भरा हुआ होता है। बसंत ऋतु के आगमन में नाचना, गाना, खेलना, बहलना आदि स्वच्छंदता के माहौल मय मोदमय विश्व में मदमस्त रहते है। बसंतोत्सव के समय राजपूतों मे मदमस्तता और स्वच्छंदता छायी रहती है। राजपूतों मे हर कोई दुसरे की स्वच्छंदता का और स्वतंत्रता का आदर करते रहते है। राजा से लेकर रंक तक सभी तरह के लोग इस महोत्सव में सामील होते है। उच्च-नीचता का भाव लुप्त हो जाता है। कभी भी अपनी गुहा को न छोडनेवाला नगरवासीयों के साथ मिल जुलकर न

ARTS & COMMERCE NIGHT COLLEGE KOLHAPUR

रहनेवाला वनवासी भिल्ल, मीर, मोना आदि जंगली जातीयों के लोगों में भी प्रकृति की प्रसन्नता, बसंत ऋतु के दर्शन से वे प्रभावित होकर अपनी मर्यादा को त्यागकर विनिर्मुक्त वृत्ति से शहर में आकर इस उत्सव में सम्मिलित होते है। चंपा-चमेली की मालाएँ गले में पहनकर और पगडी में तुर्रे लगाकर नाचने गाने वालों की टोली में शामिल हो जाते है।

3) मानुसप्तमी का उत्सव तथा सूर्य की उपासना : बासंती यह प्रकृती के देवता समझी जाती है। चालीस दिन में सभी प्रकार की उपासना की जाती है। रथसप्तमी के दिन उदयपूर की राणीयाँ उनके सरदारों को लेकर राजमहल से सूर्यमंदिर तक प्रस्थान करती है। सूर्यमंदिर तक बहुत बडा जुलुस निकलता है। सूर्यदेवता की पूजा अर्जा हो जाने के बाद जुलुस समाप्त हो जाता हैं। जयपूर के दरबार में आठ घोडे के रथ बाँधकर जुलुस निकाला जाता है। रथसप्तमी को राजपूत लोग भानुसप्तमी कहते है। रघुवंश के आद्य कुलदैवत इस नाते से उदयपुर के लोग लव के वंशज तथा जयपूर के राजे कुश के वंशज होने के बारे में सिद्ध करने की इच्छा रखनेवाले होते हैं। सूर्योपासना का महत्व राजपूतों में बहुत अधिक महत्व होता है। बसंत ऋतु के समय प्राकृतिक सृष्टि आनंदमय दिखायी देती है तो उसी समय अपनी कुलदेवता की उपासना सूर्यवंशी राजा करते है। राजपूतों को राजपूत वीरों की सबसे बडी अपने संपूर्ण जीवनकाल में यह महत्वाकाक्षा रहती है कि, तरने के पश्चात सूर्य लोग में समा जाना।

'सूर्यपोल' शहर में प्रवेश करने का प्रमुख दरवाजा 'सूर्यमहाल-राजमहल का प्रमुख दिवाणखाना 'सुर्यगोपुर-राजमहल का सबसे ऊँचा गोपुर व्यवहारा में उपयोगी लानेवाली इन विभागों को दिए गए सूर्य के नाम से ही राजपूतों की सुर्योपासना प्रियता की कल्पना आ जाती है। रुधिरप्रियता के कारण राजपूतों के ध्वज का रंग केशरी लाल होता है। सूर्योपासना के कारण बाल उषा के क्षितिज पर उन्मेषित होनेवाले बालखी के प्रतिबिंब को उन्होंने अंकित किया हुआ है। सूर्य की कृपादृष्टि से सृष्टि में प्रफुल्लता आती है। बसंत ऋतु के उत्सव के समय बासंती का मत प्रकृति की देवता का स्वच्छंद पूजन किया जाता है। दूसरी ओर सूर्य की स्फुर्ति अंतर्भूत रहती है।

4) फाग : चालीस दिन के इस उत्सव के अंतर्गत प्रकृति की स्वच्छंद उपासना, सूर्यपूजन इसके साथ-साथ 'फाग' का अंतर्भाव होता है। उसका न्यायिक पृथक विवरण करने की आवश्यक होती है। नये बसंत का स्वागत बडे हर्षोउल्लास के साथ स्वागत करने लगते है उसी क्षण फागुन की आहट महसूस होती है। वद्य प्रतिपदा से फागुन के महिने की शुरुआत वे मानते है। महाराष्ट्र में फागुन की शुरुआत शुद्ध प्रतिपदा से होती है। किंतु राजस्तान में पंधरा दिन पहले वद्य प्रतिपदा से उनका नया महिना शुरु होता है। महाराष्ट्र के पंचांग के अनुसार माद्य वद्य प्रतिपदा से फागुन की शुरुआत होती है तथा वद्य प्रतिपदा से चैत्र की शुरुआत मानी जाती है। अर्थात वसंत पंचमी ही महाराष्ट्र के पंचांगानुसार माघ शुद्ध पंचमी में आ जाती है तथा उनके पंचांगानुसार फागुन के शुरुआत होने के दस दिन पहले मतलब चालीस दिन का बसंतोत्सव मनाया जाता है। अर्थात बसंत पंचमी का स्वागत करनेवाले लोग आठ-दस दिन यह आनंद ले लेते है। उसी क्षण फग की शुरुआत होती है। जो उन्हें कई अधिक प्यारा लगता है। यह उनका आनंदीत उत्सव होने के कारण वे और भी अधिक उल्हासित होते है। नववसंत आगमनम में नावोन्मेष से वे स्वयं को विकसित दिखायी देते है।

फाग के गुरु होते ही गाना बजाना रंगों की लाल गुलालों की बरसात होती है। जग-जगह पर लोगों के झुंड के झुंड आकर एक दुसरे पर लाल गुलाल बिखरते है। रंग बरसते है। यह पूरा महिने भर तक चलता है। अलग-अलग रंगों कि पिचकारियों को भर-भरकर एक दुसरे पर रंग डालते रहते है। फाल्गुन शुद्ध अष्टमी के दिन विशेष फाग माना जाता है। उस दिन राजपूत राजा अपने अंत:पुरा में जाकर स्वतंत्रता से अपनी राणियाँ उपपत्नीयों के साथ पूरी हर्षोउल्लास और आनंद से स्वच्छंदता से फाग उत्सव मनाया जाता है।

5) पूर्णिमा की होली : अष्टमी के फाग से अधिक पूर्णिमा के समय की जानेवाली होली अत्याधिक मनोवेधक होती है। राज दरबार के ढोल ताशे जोर-जोर से बजने लगते है। सभी सरदार अपने अपने पेहराव पहनकर घोडे

COLLEGE OF ARTS COMMERCE & NIGHT COLLEGE KOLHAPUR

पर सवार होकर राजमहल के सामने खडे रहते है। हर एक सरदार अपने साथ रंगों की पिचकारी, रंगों से भरे बडे-बडे बर्तन और गुलाल के तबक ले जाते है। सभी लोगों के इकट्ठे होने के बाद घोडे पर से स्वार होकर रंग खेले जाते है। दूसरे पर रंगों की पिचकारी मारना तथा, पिचकारियों को चुकाना ऐसे खेल खेले जाते है। विशेष रूप से उदयपूर में इस होली के दिन घोडे पर सँवार होकर रंग खेलने का दृश्य बडा ही अनोखा और बहारदार होता है। घोडे पर रंग खेलने के बाद राणाजी के साथ सभी लोग जलसे से घोडे पर सँवार होकर रंगशाला ओर प्रस्थान करते है। यह रंगशाला चारों ओर फैला हुआ विस्तिर्ण दिवाणखाना होता है। उस जगह ठहरकर एक घंटे तक होली के गीत गाये जाते हैं। पूर्व साहसी पुरुषों के स्मृति स्मरण करते हुअे गीत गाये जाते हैं। इन गीतों के माहौल में चित्र विचित्र पेहराव डाले हुअे विदुषकों की झुंड बीच में आकर फिर से रंगों कि बरसात करने लगती है। इसी प्रकार फिर से रंगो का खेल शुरू हो जाता है।

इसी प्रकार रंग खेलने के पश्चात सरदारों को राणाजी की ओर से दावत दी जाती है। और अंत में उन्हें खांडा और नारियल भेंट स्वरूप दिया जाता है। रात के समय सभी जगह पर होली जलायी जाती है। सभी नगरवासी उसके उपर गुलाल आदि फेंककर होली की पूजा करते है। और पूरी रातभर उस होली के नजदीक बैठकर गीत गाने लगते है।

निष्कर्ष

राजपूतों की पूरी जानकारी के अनुसार यह प्रतीत होता है कि, राजपूत जाती यह बहुत बडे पैमाने पर उत्सव मनाती है। बार-बार हजार, ग्यारह सौ साल तक परकियों ने आक्रमण होने के बावजूद भी उनके आघात को सहते हुअे तथा उनका विरोध करते रहे किंतु फिर भी उन्होंने अपने उत्सव और त्यौहारों को कभी भी अनदेखा नहीं किया। समय के साथ अपनी परिस्थिती पर अपनी लढवय्यी वृत्ति और अपनी शौर्य वृत्ति को उन्होंने सदा बनाये रखा। कई समस्याओं का सामना समस्यों की जंजाल में हुअे राजपूतों ने अपनी परंपरा को बनाए रखा। सामाजिक जीवन में राजपूत दृढमूल, रूढीवादी दिखता है किंतु वे प्रत्यक्षत: स्वच्छंदी, विलासी, तगडा, आनंदी और उपभोग प्रिय व्यक्ति है ऐसा कहना पडेगा। उसके मन की यही विशेषता के कारण उसे विभिन्न तरह के त्यौहार और उत्सवों की चाहत है। और आज तक उन्होंने इस प्रकार धर्म संस्कारों का अच्छे से पालन किया है।

पदटिपणीयॉं

1) Col. Todd: Annals and Antiquities of Rajasthan.
2) Dr. Balkrishana: Shivaji The great.
3) Harwilas Sarada: Hindu Superiority.
4) Sir John Woodroffe: Is India Civilised?
5) श्री. जगदीशचंद्र गुहिलोत: मारवाड का इतिहास.
6) प्रो. इंद्र: मांगल साम्राज्य का इतिहास.
7) कुलपती चि. वि. वैद्य: मध्ययुगीन भारत भाग 1, 2 व 3.
8) रा. ब. गौरीशंकर ओझा: राजपुताने का इतिहास खंड 1, 2 व 3.

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2021

ISSUE No- 291 (CCXCI) D

Women's Empowerment Issues and Challenges

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Asst. Prof. Baliram Pawar
Head, Department of Sociology
Mahatma Phule Mahavidyalaya
Kingaon Latur Maharashtra

Editor
Dr. Anerao Madhav Marotrao
Head, Department Of Sociology
Lokmanya Mahavidyalaya, Sonkhed
Tq. Loha Dist. Nanded.

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

2020-21

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 291 (CCXCL) D
ISSN : 2278-9308
April 2021

22	विदर्भातील शेतकरी आत्महत्येचे समाजशास्त्रीय चिकित्सक अध्ययन (विदर्भातील शेतकरी आत्महत्येचे पुरूष व महिला आत्महत्येचे कारणे व उपाय) डॉ.अनिल पी.जैन / प्रा.लक्ष्मण मारोतराव वानखेडे	78
23	पंचायतराज आणि स्त्रियांची भूमिका प्रा. डॉ. ए. बी. वानखडे	82
24	महिला आणि मानवाधिकार डॉ. अनिता ए. सार्वे	85
25	ग्रामीण भागातील महिलांचे सशक्तीकरण डॉ.मारोती घोडींबा कच्छवे	89
26	मानवी हक्क आणि महिला कविता वा. ऊईके	93
27	महिला सबलीकरण: शासकीय उपाय — योजना एक अभ्यास डॉ. अनुजा वि. पाचरे / डॉ. सीमा ना. बागुल	97
28	समाज और नारी डॉ. अनुपमा	105
29	भारत मे महिला सशक्तिकरण का मूल्यांकन डॉ.योगेन्द्र कुमार	113
30	महिला वृद्धांबाबतचे शासनाचे धोरण व विविध योजना प्रा. (डॉ). रविंद्र वाघ / प्रा. सौ. सुवर्णा कऱ्हाड	117
31	आत्महत्या : स्त्री हिंसेचे बदलते स्वरूप मुबीन जमिरअली सय्यद	124
32	महाराष्ट्रातील पंचायतराज व्यवस्थेत महिला सरपंचांची भूमिका : एक संशोधनात्मक अभ्यास प्रा. महेंद्रकुमार जाधव	127
33	Women's Role In Panchayat Raj System **Dr. Kemparaju**	132
34	A Study On Role Of Traditional Birth Attendants Among The Hajong Community Dhemaji District,Assam **Suman Kousik**	135
35	Library Automation In Academic Library **Nilam Bambroo**	139
36	Women Empowerment Through Government Schemes For Developing Entrepreneurial Skills **Prof. Sampada S. Lavekar**	144
37	Female Literacy Are Role In Tourism –A Case Study Of Nashik **Prof. Ahire Vijay Deoman**	148
38	Role of Women Empowerment In Indian Economy **Dr. Mithila B .Wakhare**	153
39	With Wings, Not To Fly But To Shelter: Analysing Women Around The Disabled In Select Malayalam Narratives **Sayoojya C. S.**	159
40	Right To Education & Women Status **Dr. Rani Sarode**	164
41	Domestic Violence In The Era Of Gender Justice In India **Dr. Sushma Sharma**	167
42	Planning Library Automation In Academic Libraries **Dr. Namdev Kishanrao Rathod**	176
43	Women Empowerment And Self -Perception: A Study With Special Reference To The Mothers Having Special Child And Normal Child **Dr. Jyotsna Srivastava**	181

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 292 (CCXCL) D
ISSN : 2278-9308
April, 2021

महाराष्ट्रातील पंचायतराज व्यवस्थेत महिला सरपंचांची भूमिका : एक संशोधनात्मक अभ्यास

प्रा. महेंद्रकुमार जाधव
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नाइट कॉलेज ऑफ आर्ट अँण्ड कॉमर्स, कोल्हापूर

प्रस्तावना :

महाराष्ट्र राज्याची निर्मिती १ मे १९६० साली झाली व मुंबई ही महाराष्ट्राची राजधानी झाली. मे १९६२ मध्ये जिल्हा परिषद व पंचायत समिती गठीत करण्यात आली. बलवंतराय मेहता यांच्या शिफारसीनुसार त्रिस्तरीय पंचायतराज पद्धतीचा महाराष्ट्राने अवलंब केला. राज्यकर्त्यांनी नवीन स्थापन झालेल्या पंचायतराजला जास्त प्रमाणात अधिकार दिले. स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे हे तीन स्तर खालीलप्रमाणे

ग्राम पातळी..... ग्रामपंचायत
तालुका पातळी..... पंचायत समिती
जिल्हा पातळी..... जिल्हा परिषद

राज्यकर्त्यांनी नविन स्थापन झालेल्या ग्राम पंचायत, तालुका पंचायत समिती, यांना योग्य ते अधिकार देण्यात कमतरता केली नाही. पंचायतराज संस्थामध्ये महिलांसाठी ३० टक्के जागा राखीव ठेवण्याचे ठरविले. ७३ व्या घटनादुरूस्ती ला अनुसरून ग्रामपंचायत प्रशासनामध्ये जागा राखीव ठेवल्या जातात. हा एक सोशल इंजिनियरिंगचाच भाग आहे की जे लोक पिढ्यानपिढ्या राजकीय सत्तेपासून वंचीत राहिले आहेत, अशांना सत्तेत सामावून घेऊन त्यांचे निर्णय प्रक्रियेत म्हणने ऐकून घेऊन सरपंच पदी पोहचविने.

या पार्श्वभूमीवर आपल्याला जळगाव जिल्ह्यातील विंटनेर, बवतमाळ जिल्ह्यातील मेटीखेडा, पुणे जिल्हयातील ब्रम्हनगर, उस्मानाबाद जिल्ह्यातील विराटगाव येथील यशस्वीतेच्या गोष्टी दिसतील. त्याचवेळी कोल्हापूर जिल्ह्यातील सांगवडे आणि अब्दुललाट, नाशिक जिल्ह्यातील पंजाबाडी आणि जळगाव जिल्ह्यातील पिलखोड येथील महिला सक्षमीकरणाच्या अयशस्वीतेच्या गोष्टी दिसतील. अशाप्रकारे आम्हांला महिला सक्षमीकरणाचे यशस्वीतेचे आणि अयशस्वीतेचे संमिश्र चित्र दिसते. घटनादुरूस्तीने ग्रामपंचायत प्रशासनातील महिला समोर एक आव्हान उभे केले आहे. महाराष्ट्रात या आव्हानाची काही प्रमाणात तरी पूर्तता झालेली दिसते. ग्रामपंचायत प्रशासनातील अशिक्षितपणा व अनुभवाची कमी या पार्श्वभूमिवर, ग्रामपंचायत यशस्वीपणे चालविण्यासाठी सखोल प्रशिक्षणाची गरज आहे, असे सुचवावे लागेल. राज्यकर्त्यांनी नवीन स्थापन झालेल्या पंचायतराजमधील ग्रामपंचायती, पंचायत समिल्या आणि जिल्हा परिषदेला जास्त प्रमाणात अधिकार दिले. वास्तवात राज्याने ७३ व्या घटनादुरूस्ती अगोदरच पंचायतराज संस्थामध्ये महिलांसाठी ३० टक्के आरक्षण ठेवले होते.

ग्रामपंचायत सदस्यांची संख्या गावातील लोकसंख्येवर अवलंबून असते. येणेप्रमाणे १५00 किंवा त्यापेक्षा कमी लोकसंख्या असलेल्या गावातील ग्रामपंचायत सदस्यांची संख्या ७ असते, १५०१-३000 लोकसंख्या असलेल्या गावातील ग्रामपंचायत सदस्यांची संख्या ९ असते, ३001 ते ४५00 लोकसंख्या असलेल्या गावातील ग्रामपंचायत सदस्यांची संख्या ११ असते, ४५०१ ते ६000 लोकसंख्या असलेल्या गावातील ग्रामपंचायत सदस्यांची आणि ७५०१ + अधिक लोकसंख्या असलेल्या गावातील ग्रामपंचायत सदस्यांची संख्या १७ असते. यापैकीच ३३ टक्के जागा

महिलांसाठी राखीव असतात व २५ टक्के जागा ह्या ओ. बी. सी.साठी राखीव असतात. S.C आणि S.T साठी देखील त्याच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात जागा राखीव असतात.

पंचायत समित्यांचे गठन महाराष्ट्र जिल्हा परिषद आणि पंचायत समिती अधिनियम १९६१ अन्वये झाले. १७५00 पेक्षा जास्त लोकसंख्या नसलेल्या गावासाठी एक प्रतिनिधी असतो. प्रत्येक जिल्हा परिषदेमधून पंचायत समितीवर दोन सदस्य निवडून पाठविले जातात.

१. महाराष्ट्रातील पंचायतीराज ची पार्श्वभूमी

स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर १९५८ मध्ये मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम पारित करण्यात आले. यानुसार जमिनीचे रेकॉर्ड व महसूल जमा करण्याचे काम गावाला व पंचायतीला देण्यात आले. महाराष्ट्र राज्याची स्थापना १ मे १९६० होऊन मुंबई ही महाराष्ट्राची राजधानी झाली. महाराष्ट्र राज्याचे त्यावेळचे मुख्यमंत्र्यांने बलवंतराव मेहता यांच्या अध्यक्षतेखाली एक समिती नेमली. या समितीने १९६१ साली आपला अहवाल सादर केला. या समितीच्या शिफारसीनुसार महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती अधिनियम १९६१ लागू करण्यात आला व १ मे १९६२ पासून पंचायतराज व त्या अंतर्गत त्रिस्तरीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांची पद्धती स्विकारण्यात आली. याचा फायदा असा झाला की बऱ्याच पुढाऱ्यांना जिल्हा परिषदामार्फत गाव पातळीवर कामे करण्याची संधी मिळाली. प्रदेशिय विकेंद्रिकरणाच्या या प्रक्रियेत नवीन पुढारीपण उदयास आले. महाराष्ट्रामध्ये असे बरेच उदाहरणे आहेत की ज्यांची सुरुवात जिल्हा परिषदेतून होऊन अंत विधानसभेत आणि संसद भवनात झाला. याचेच ज्वलंत उदाहरण म्हणजे माजी मुख्यमंत्री सुधाकरराव नाईक, विलासराव देशमुख, शंकरराव काळे, बाबासाहेब विखे- पाटील इ.

महाराष्ट्र हे पंचायतराज संस्थांबद्दल प्रगतीशिल असलेले राज्य म्हणून ओळखल्या जाते. इथे त्रिस्तरिय पंचायती राज पद्धतीचा अवलंब केलेला आहे. ग्रामीण जनतेच्या प्रत्यक्ष संपर्कात असणारी आणि तिच्या जास्तीत-जास्त जवळ पोहोचणारी स्थानिक स्वराज्य संस्था म्हणून ग्रामपंचायतीचाच उल्लेख करता येइल. सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाचा जनतेला प्रत्यक्ष व जास्तीत जास्त लाभ मिळवून देण्याचे साधन म्हणूनही ग्रामपंचायतीकडेच पाहिले जाते. पंचायत राज्याचा पायाभूत घटक या दृष्टिने ग्रामपंचायतीला विशेष महत्त्व आहे.

१.१ महाराष्ट्राचा अभ्यास

विजय चोरमारे यांनी पश्चिम महाराष्ट्रातील पूणे सातारा सांगली सोलापूर आणि कोल्हापूर या पाच जिल्हयातील जिल्हा परिषद पंचायत समिती आणि प्रत्येक तालूक्यातील एकेक ग्रामपंचायतीतील अशा २२५ सदस्यांना निवडले. त्यांच्या अभ्यासामध्ये त्यांनी Random Sample Method चा वापर करुन २२५ स्त्रियांचया मुलाखती घेतल्या. पैकी ५० टक्के सदस्य जिल्हा परिषदेमधिल (५१ सदस्य), २५ टक्के पंचायती समिती (५६ सदस्य), आणि बाकीचे ११८ हे प्रत्येकी तालुक्यामधून एक असे निवडले. विजय चोरमारे यांनी काढलेले निष्कर्ष पुढीलप्रमाणे - १. साक्षरता २. विषेश प्रशिक्षण ३. सुरक्षितता ४. ज्ञानाचा हक्क ५. शिक्षण. वरील दिलेल्या सूचनांचा वापर करुन त्यांचा आत्मविश्वास वाढवता येईल.

अर्चना कांबळे यांनी आपल्या पचांयतराज संस्थामधील स्त्रियांचे नेतृत्व: एक समाजशास्त्रीय अभ्यास या पीएच. डी. प्रबंधामध्ये खालील निष्कर्ष काढले आहेत.

१. काही ध्येय उद्देश स्वरस्य नसतांना देखिल मोठया प्रमाणात पंचायत राज संस्था मध्ये स्त्रिया सहभागी झाल्या.

२. पंचायतराज मध्ये स्त्रियांना सहभागी होण्यास त्यांचे पती, जवळचे नातेवाईक व राजकीय पुढारी कारणीभूत आहेत.

३. जरी स्त्रियांमधील नेतत्व करणाऱ्या स्त्रिया या निर्णय घेण्याच्या प्रक्रियेत सामिल असल्या तरी खऱ्या अर्थाने निर्णय क्षमतेपर्यंत त्यांची मजल गेली नाही.

४. अनुसूचित जाती/जमातीतील स्त्रियांच्या समोर मोठे आव्हान उभे आहे.

१.२ यशस्वी महिलासरपंचाची उदाहरणे

१. विटनेर (जि. जळगाव) - या गावात बऱ्याच वर्षापासून सत्तेचा उपभोग घेणाऱ्यांकडून महिलांना त्रास सहन करावा लागला होता. इंदीरा पाटील या गावच्या सरपंच झाल्या. तिच्या विरोधात जेवढे पुरुष उभे होते त्या सर्वांचे डिपॉझीट जप्त झाले. ही गोष्ट स्त्रियांनी काय मिळवले आहे या बद्दलचा आदर्श घेण्यालायकीचे उदाहरण म्हणता येईल. या गावची लोकसंख्या दोन हजार असून त्यापैकी बरेच लोक गरीब व मजूर आहेत. हे गाव असे आहे की ज्यामध्ये १२७ पुरुषांनी आपल्या मालकीच्या जमिनी महिलांच्या नावावर केल्या आहे. हे स्त्रियांचे मनोधैर्य सामाजिक सुरक्षिततेसाठी महत्वपूर्ण आहे.

२. मेटिखेडा (यवतमाळ जिल्हा) - २४० घरे असलेल्या या गावात ९० ठिकाणी पाण्याचे नळ व २४ गोबरगॅस प्लॅंट आहेत. या गावाने छोट्या उद्योगांना आकर्षित करण्यासाठी खादी ग्रामोद्योग मंडळाला ४ एकर शेती दान केली आहे. गावातील लोकांना रोजगारांच्या संधी मिळवून दिल्या.

३. वाघनगर (जिल्हा पूणे) – या गावचे सदस्य बिनविरोध निवडून आल्यामुळे शासनाच्या १० हजार रुपये बक्षिसांचे मानकरी ठरले. या रकमेतून त्यांनी गावच्या विकास कामाकरिता दवाखाना, मार्केट, शाळा बांधण्यात खर्च केले. या सुविधामुळे गावाचा चेहरामोहराच बदलून टाकला. संपूर्ण गावच्या लोकांनी ग्रामपंचायत सदस्यावर जो विश्वास दाखविला त्या जोरावर सदस्यांनी देखील आपली नैतिक जबाबदारीने, प्रामाणिकपणे गावाच्या विकासासाठी कार्य केले ही बाब विशेष उल्लेखनिय आहे.

१.२.२ अयशस्वी महिला सरपंचांची उदाहरणे

१. कोल्हापूर जिल्ह्यातील सांगवडे ग्रामपंचायत: सौ. वंदना सोनापा कोळी ह्या सांगवडे गावच्या सरपंच होत्या. तिचे कन्नड भाषेतून इयत्ता तिसरीपर्यंत शिक्षण झाले होते. तिला मराठी लिहता व वाचता येत नव्हते. तिला फक्त मराठीतून सही करता येत होती. ती गृहिणी होती. तिचा पती हा शेतीचे काम करायचा. कुटुंबाची परिस्थिती गरीबीची होती. ती मिटिंग ला फक्त हजर राहत होती. परंतु तिच्या पक्षातील पुढारी व तिचा पती बाकीचे महत्वाचे कामकाज करत असत. जी भूमिका सरपंचाने साकारायची असते ते तिच्यामधील असलेल्या अशिक्षितपणामुळे, आर्थिक कमकुवतेमुळे आणि सार्वजनिक जीवनात वावरण्याचा अनुभव नसल्यामुळे तिला तिची भूमिका साकारता आली नाही. तिचा पती ज्याचे फक्त प्राथमिक शिक्षण झाले होते तो कार्यालयात सरपंचा प्रमाणेच हजर राहायचा व ग्रामपंचायत कामकाजात ढवळाढवळ करायचा.

पुढे एका ग्रामसभेत इतिहासच घडला ग्रामसभेमध्ये फक्त त्या दिवशी कागदोपत्रीच काम झाले. भ्रष्टाचाराचे आरोप ग्रामसेवकावर ठेवण्यात आले. त्या दिवशी ग्रामसेवक ग्रामसभेला हजर नव्हता. प्रभारी ग्रामसेवकाच्या उपस्थितीत ग्रामसभेचे कामकाज पार पडले. अमित स्पीनिंग मिल बद्दल गावकऱ्यांनी टॅक्स वसूलीच्या बाबत तक्रार केली. इथे ग्रामसेवक व काही सदस्यांवर भ्रष्टाचाराचे आरोप ठेवण्यात आले. प्रदुषण व इतर मुद्यांवर देखिल चर्चा करण्यात आली. सभेमध्ये सरपंच कोण आहे याबद्दल विचारणा करण्यात आली. तेव्हा सरपंच पती उठून उभे राहिले. गावकऱ्यांनी त्यांना खाली बसविले. ग्रामसेवकांनी सांगितले की सरपंच वंदना कोळी आहे. ती उठून उभी राहिली हात जोडून वंदन केले व खाली बसली. तिने तोंडातून एक शब्द देखील काढला नाही. पुढे सहा महिन्यांच्या कालावधी बैठकित अविश्वास प्रस्ताव मांडल्या गेला. या बैठकीला सरपंच व आणखी एक महिला अनुपस्थित होती. सदर बैठक करवीर तालुक्याचे तहसीलदार यांच्या अध्यक्षतेखाली घेण्यात आली. अविश्वासाचे मुद्दे सरपंच व तिचा पती यांनी केलेल्या मनमानी कारभार व ग्रामपंचायत विकास कार्यात अडथळे निर्माण करण्याबाबत होते. सरपंच व तिच्या पतीवर भ्रष्टाचाराचे व कामकाजात अडथळा निर्माण करण्याचे आरोप ठेवण्यात आले. याच आरोपावर

अविश्वास प्रस्ताव पारित करण्यात आला. सरपंचाचा प्रभारी कार्यभार उपसरपंच यांच्याकडे देण्यात आला. प्रभारी सरपंचाचा कार्यभार उपसरपंचानी सांभाळला. स्थायी समितीने तक्रारकर्ते व सरपंचाचे गहाणे ऐकून घेतले. तद्नंतर सरपंचाला त्याच्यावर ठेवण्यात आलेल्या आरोप फेटाळण्यास संधी देण्यात आली. सभेच्या अंती सरपंच वंदना कोळी यांनी कबूल केले की त्यांचा पती हा ग्रामपंचायत कामकाजात ढवळाढवळ करायचा.

१.३ कोल्हापूर जिल्ह्यातील अब्दुललाट ग्रामपंचायत

या ग्रामपंचायतीमध्ये भ्रष्टाचाराचे आरोप सरपंच सुवर्णा भोजे व ग्रामसेवक यांच्याकर ठेवण्यात आले. सुवर्णा भोजे ही शाळेत शिक्षिका होती व तिचे शिक्षण S.S.C, D.Ed, असे होते. तिच्यावर ३,२९,२०० रुपयाच्या ग्रामसचिवालय व शाळांच्या दोन खोल्यांच्या बांधकामात झालेल्या घोटाळ्याचे आरोप ठेवण्यात आले. इथे मूद्दा असा मांडण्यात आला की, बांधकामाचा कंत्राट देण्याचा अधिकार नसतानाही देखील ग्रामपंचायतीने कंत्राट दिला. कंत्राट देतानासुद्धा कंत्राटाच्या निविदा मागविण्यात आल्या नव्हत्या. तसेच वस्तूंची खरेदी करताना देखील कोटेशन मागविण्यात आले नव्हते. कामाचे मूल्यांकन न करताच चेक काढण्यात आले होते. एका व्यक्तीच्या नावावर चेक काढून दुसऱ्या व्यक्तीच्या नावावर खर्च दाखविण्यात आला होता. ग्रामपंचायतीच्या महिन्यात एकदा होणाऱ्या बैठकीत देखिल ह्या खर्चाला मान्यता घेण्यात आली नव्हती.

भ्रष्टाचाराम कारणीभूत ठरलेल्या व्यक्तीपैकी रिटायरड ग्रामसेवक यांच्यावर रु.६९,९६६/- चा घोटाळा करण्याचा आरोप ठेवण्यात आला तर तत्कालिन ग्रामसेवक व सरपंच सुवर्णा भोजे वर प्रत्येकी १,००,५३३ व १,६९,६०० चा घोटाळा करण्याचा आरोप ठेवण्यात आला. हा निर्णय जिल्हा परिषदेच्या स्थायी समितीने घेतला. त्यानंतर संपुर्ण कामाची पुर्न तपासणीची मागणी करण्यात आली हे काम अधुरे पडले आहे. दरम्यानच्या काळात ग्रामपंचायतीसाठी निवडणुका झाल्या आणि नवीन कार्यकारीणी स्थापन झाली.

१.४ नाशिक जिल्ह्यातील/ पंजावाडी ग्रामपंचायत

नाशिक जिल्ह्यातील येवला तालुक्यातील पंजावडी ग्राम पंचायतीमधील महिला सरपंच द्रौपदी छगन भगत हिने तिच्या समोर ठेवण्यात आलेल्या काही कागदावर अंगठ्याचे ठसे मारले. या कागदापैकी एक कागद त्यांच्या राजीनाम्याचा होता. जो त्यांच्या कुठल्यातरी वैऱ्याने ठेवला होता. जेव्हा भगतवाईला कळले की येवला पंचायत समिती त्यांच्या राजीनाम्यावर विचार करित आहेत तेव्हा त्यांनी कोर्टात थाव घेतली. हे प्रकरण देखिन स्थगित पडले आहे.

१.५ जळगाव जिल्ह्यातील पिलखेड ग्रामपंचायत

ग्रामपंचायत निवडणूकीने मराठा आणि माळी समाजातील वैमनस्याला वाचा फोडली. दोन गटाच्या सदस्यांना पुढे करण्यात आले. एक मराठा गटाचा होता तर दुसरा माळी गटातर्फे दुसऱ्याच जातीचे प्रतिनिधित्व करणारा होता. या निवडणुकीमुळे दोन गटातील वैमनस्य फार वाढले. या दोन्ही गटात अत्यंत कटूता निर्माण झाली. या निवडणूकीचा परिणाम असा झाला की, माळी लोकांनी मराठ्यांवर मात करून त्यांच्या स्वाभीमानाला ठेच पोहोचवली. आकस्मितपणे सरपंचाचे पद अनुसुचीत जमातीच्या सदस्यांसाठी राखीव असल्यामुळे दोन्ही वैरी गट थंडावले. कोळी समाजातील एक महिलेची सरपंचपदी निवड करण्यात आली. माळी समाजाच्या नेत्यांनी पडद्या आड राहून सुत्रे हालवून पंचायतीवर नियंत्रण ठेवण्याचा प्रयत्न केला. महिला सरपंच व तिचा पती दोघेही अडाणी असल्यामुळे हया गोष्टीचा मराठ्यांनी देखिल फायदा घेतला. परंतु ह्या दोन गटातील वैमनस्य इतक्या थराला गेले की इतिहासात पहिल्यांदाच दोन जातीत सामाजिक वैमन्स्य निर्माण झाले. आपआपसातील मतभेदाच्या वातावरणामुळे ग्रामपंचायतीच्या कामकाजावर वाईट परिणाम झाला. ह्या परिस्थितीचा फायदा ग्रामसेवकाने घेतला आणि इंदिरा आवास योजना व तत्सम योजनासाठी आलेल्या पैश्यामधून ७ लाख रुपयाची अफरातफर केली. ग्रामसेवकाने हे काम

दोन गोष्टीवरून केले. एकतर दोन गटातील वैमनस्य आणि दुसरे म्हणजे सरपंच व तिचा पतीच्या अडाणीपणाचा फायदा. ग्रामसेवकाने सरपंचावर दबाव आणून सरकारी कामकाजाचे चेक आहेत म्हणून बऱ्याच चेकवर व कागदपत्रावर तिचे अंगठे घेतले, पंचायतमधील दुसऱ्या सदस्यांच्या दुर्लक्षपणामुळे ग्रमसेवक अफरातफर करू शकला.

जेव्हा हा घोटाळा उघडकीस आला तेव्हा गावातील लोकांचे व ग्रामपंचायतीमधील सदस्यांचे डोळे उघडले, तेव्हा लोकांनी मराठा आणि माळी समाजाच्या दोन गटांना गावाच्या भलाईसाठी एकत्र आणण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्या आपआपसातील मतभेदामुळे गावाला त्रास सहन करावा लागेल असे त्यांना पटवून दिले. त्यांच्या आपसी मतभेदामुळे गावाला त्रास सहन करावा लागेल असे त्यांना पटवून दिले. त्यांच्यामधील ऐक्यामुळेच गावचा विकास होऊ शकेल असे त्यांना पटवून दिले. तेव्हा कुठे मराठा आणि माळी समाजाचे दोन गट एकत्र येऊन त्यांनी ग्रामपंचायतमध्ये झालेल्या घोटाळ्याची तक्रार वरिष्ठ पातळीवर केली. तक्रारीची दखल घेत शासनाने हिशोब तपासणीसाठी एक शिष्टमंडळ पाठविले. या शिष्टमंडळाने घोटाळा शोधताना महत्वाचा भेऊन ग्रामसेवकावर ठपका ठेवला. या घोटाळ्याचा ग्रामसेवकावर खटला चालविला जात आहे. हा खटला अत्यंत धिम्यागतीने चालू होता. यानंतर ग्रामपंचायत सदस्यांनी सरपंचा विरुद्ध अविश्वासाचा ठराव आणला. परंतु त्यांना यात यश आले नाही. एक तर महिलामधून अनुसूचित जमातीमधील दुसरी कोणतीही महिला ग्रामपंचायत सदस्या नसल्यामुळे पंचायतचा कार्यकाळ पूर्ण होईपर्यंत तीच महिला सरपंच म्हणून राहिली.

निष्कर्ष

७३ व्या घटना दुरुस्तीला अनुसरून ग्रामपंचायत प्रशासनामध्ये राखीव जागा असतात. हा एक सोशल इंजिनियरिंगचाच भाग आहे की जे लोक पिढ्यानपिढ्या राजकीय सत्तेपासून वंचीत राहिले आहेत अशांना सत्तेत सामावून घेऊन सामाजिक न्यायाची संकल्पना रूजविणे. याच पार्श्वभूमिवर आपण विटनेर (जळगाव जिल्हा), मेटीखेडा (जिल्हा यवतमाळ), ब्रम्हनगर (जिल्हा पुणे), बिरदगाव (उसमानाबाद) या गावातील महिला सरपंच यशस्वी झालेल्या दिसल्या तर दुसरीकडे सांगवडे व अब्दुललाट (जिल्हा कोल्हापूर), पंचवाडी (जिल्हा नाशीक), पिलखोड (जिल्हा जळगाव) या गावातील महिला सरपंच अयशस्वी होताना दिसल्या. यशस्वी आणि अयशस्वीपणाचे संमिश्र चित्र महिला सक्षमिकरणाचे आढळून आले. घटनादुरुस्तीने महिलांसमोर ग्रामपंचायत प्रशासनामध्ये कुशलता दाखविण्याचे आव्हान उभे केले आहे. याच पार्श्वभूमीवर महाराष्ट्राने हे आव्हान स्वीकारून थोड्याफार प्रमाणात पूर्ण करून दाखविले आहे.

अशिक्षितपणा व अनुभवाची कमी या पार्श्वभूमिवर असे सुचवावे लागेल की ग्रामप्रशासन योग्यरित्या चालविण्यासाठी ग्रामपंचायत प्रशासनाला प्रशिक्षणाची गरज आहे. केवळ नियम म्हणून प्रशिक्षण देणे योग्य होणार नाही,तर आत्मीयता, जिव्हाळा ज्ञान देण्याच्या मानवी भूमिकेतून प्रेरित होऊन दिलेले प्रशिक्षण देणे समाज हितावह आहे. त्याचप्रमाणे महिला ग्रामपंचायत सदस्यांनी मनापासून गावच्या विकासात महिला कुठे कमी नाही या भावनेने प्रेरित होऊन स्वखुशीने प्रशिक्षण घेणे, संपूर्ण गावाचा विकासासाठी आवश्यक आहे. पंचायत राज्यव्यवस्था यशस्वी करावयाची असेल तर राज्यातील ग्रामपंचायतींना जास्तीत-जास्त मजबुती प्रदान केली पाहिजे.

संदर्भग्रंथ:

1. Gawankar Rohini, "Female Representation in Panchayat Raj institution with special reference to female participation in Zilla Parishad in the state of Maharashtra " II Annual conference on womens studies, Trivandrum, 9-12 April 1984.

2. Baviskar B.S. , "Empowerment & Women through Panchayats : Slow and Steady" in Panchayat Raj Update, Institute of Social Sciences, New Delhi, May 2007

3. Baviskar B.S. , "Pilkhod : iron conflict to consensus" in Panchayat Raj Update, Institute of Social Sciences, New Delhi, August 2001

4. News Item - " Women Sarpanches hoist National Flag" Panchayat Raj Update, Institute of Social Sciences, New Delhi, February 2003

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

ISSN 2277- 8063
December-2020
Vol-IX, Issue-IV 2020
Impact Factor - 6.013

20

Navjyot
नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages,
Commerce & Management)

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

2020-21

2020-21 (1)

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

ISSN 2277-8063 (Print)
December -2020
Vol. IX / Issue.IV / 2020
Impact Factor - 6.013

Navjyot
नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
Science, Humanities, Social Sciences,
Languages, Commerce & Management

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)

Indexed by:

Cosmos

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

Chief Editor
Prof. Dr. Ravindra P. Bhanage
Head, Dept. of Political Science,
Shivaji University,
Kolhapur.

Editor
Dr. Sandeep Tundulwar
Head, Dept. of Political Science,
Binzani Nagar Mahavidyalaya,
Nagpur.

- Published by-
HOUSAPublication,Kolhapur.

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

CONTENT

Sr. No	Subject	Title	Author	P. No.
1	Political Science	Globalization and Liberalization : A Prospective	Prof. Dr. Pyarelal H.Suryavanshi	1-3
2	राज्यशास्त्र	370 कलम केंद्र सरकारची भूमिका	डॉ. अनिल रा. कडू	4-5
3	राज्यशास्त्र	कलम - 370 आणि भारत-पाकिस्तान संबंध	डॉ. व्ही. एच. भटकर	6-7
4	राज्यशास्त्र	नवीन कृषी कायद्यानुसार कृषी व्यवस्थेचे भवितव्य	दत्तात्रय निवृत्ती रावण	8-12
5	Sociology	A Sociological Study of Consequences on Human Health of Vehicle Pollution	Dr. Mahendrakumar A. Jadhav	13-16
6	समाजशास्त्र	सातारा शहरातील ग्रामीण भागातील महिलांचा पंचायत येथील सहभाग : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. संध्या पौडमल	17-20
7	समाजशास्त्र	महाराष्ट्रातील भटक्या विमुक्त जमातीतील मुलांचे कल्याण: एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. अरूण पौडमल	21-24
8	मराठी	संत सावता माळी	प्रा.डॉ. विवेक गं. देशमुख	25-26
9	मानसशास्त्र	उतर बाल्यावस्थेतील बालकांवर मूल्यशिक्षणाचा परिणाम	प्रा. डॉ. पूनम देशमुख	27-28
10	Economics	The Study of The Redressals And Judgements Given By The District Consumer Forum Against The State Electricity Distribution Company	Dr. Leena Sharadrao Gawande	29-32
11	Geography	Cyclone: The Natural Catastrophe	Prof. M. M. Kanate	33-37
12	Commerce & Management	The Roadmap of Electronic Banking: Indian scenario	Prof. Mrs. Vani.N. Laturkar Mrs. Amarpreet Kour Randhawa	38-44
13	Physical Education & Sports	Comparative Study of Indian Game and Foreign Games: Fitness Level of Basketball Players and Kabaddi Players	Prof. Mahendra W. Deshmukh,	45-48
14	Sociology	Reproductive Rights of Women in India: An Overview	Dr. Pratibha B. Desai	49-54
15	राज्यशास्त्र	भारतीय परराष्ट्र धोरणात पंडित जवाहरलाल नेहरूंचे योगदान व भूमिका	डॉ. संजय गोरे	55-56
16	राज्यशास्त्र	भारतीय राज्यघटनेतील तरतुदी संदर्भात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार	डॉ. निशा सीताराम मोरे	57-64
17	Commerce	A Study of Niti Ayog and Its Achivments	Dr. Shivdatt A.Vibhute	65-67

COLLEGE OF ARTS & COMMERCE KOLHAPUR

A SOCIOLOGICAL STUDY OF CONSEQUENCES ON HUMAN HEALTH OF VEHICLE POLLUTION

Dr. Mahendrakumar A. Jadhav, Head Dept. Of Sociology Night College Of Arts & Commerce, Kolhapur. (MS)

Abstract

Air pollution is primitive or ancient problem, which we have been facing. When man had invented world, from that movement we facing it. And man is great accountable for that at the beginning it had normal and now has become very detrimental and serious problem, because the participation of man in the world and nature.This research paper depends upon primary and secondary data primary data consist of information from ten vehicle owner, ten pediatric doctors, ten experts in the field of automobile and traffic police. The secondary data were obtained through books, traffic vehicle statistics of regional transport office Kolhapur. The total numbers of two, three, and four wheeler vehicles in Kolhapur, Sangli, Satara&Karad are 32,94,589. From these 25,57,330 are the two wheeler. In two wheelers Kolhapur have 11,76,516 followed by Sangli as 6,29,526 and Satara 6,48,001, Karad 1,032,87. In the total two wheeler motor cycle Kolhapur have achieve first rank in Three District.For Impact of Vehicle pollution on Human Health, I have taken interview of 10 Doctor's, according to them Carbon Monoxide, Sulfur Die Oxide, Nitrous Oxide, Hydrogen sulfide, are deter mental Gases, which have been blending in air, Because of vehicle pollution. Carbon monoxide have integrated with Hemoglobin of human blood, Cause to obstacle in breathing. Sulfur Die oxide, Nytrus oxide, Hydrogen sulfide Injured Breathing branches and organ's of human body. Carbon monoxide, caused to reaction, heart attack, blood pressure, Neumonia, Allergy, paralysis, which very hazardous to the health of human body. Particularly it affected Childs rapidly.To control the impact of polluted air on individual person of society, needs to aware people about pollution. Awareness of people cab become conscious by arranging small assemblies in village, cities etc. From it people can acquaint with the effects of Vehicle pollution and endeavor to control it. To have health from air pollution, informs people about masks and compulsion to use it. To invent optional fuel, which pollute air very limited, gives motivate to persons or Branches.Instead of using petrol vehicle, caused pollution, use without petrol cycle which control pollution and same money. It is justified by china and Europe countries. To reduce pollution societies. Social clubs, self serve clubs, and youngster Groups etc. works sincerely and disciplinal. Voluntarily is beneficial for society. Televisions, News papers, Magazines, films Theatre can play important role to aware people about vehicle pollution.

Introduction: Air pollution occurs due to the presence of undesirable solid or gaseous particles in the air, in quantities that are harmful to human health and the environment. The air may become polluted by natural causes such as volcanoes, which release ash, dust, sulphur and other gases, or by forest fires that are occasionally naturally caused by lighting. However, unlike pollutants from human activity, naturally occurring pollutants tend to remain in the atmosphere for a short time and do not lead to permanent atmospheric change.

Air pollution is primitive or ancient problem, which we have been facing. When man had invented world, from that movement we facing it. And man is great accountable for that at the beginning it had normal and now has become very detrimental and serious problem, because the participation of man in the world and nature.

AIR POLLUTERS: Commonly, believed that naturally and artificially. The exiting factors which inters in the Air are call Air polluter. Same air polluters have created by man and some created by naturally. The pollution, which caused by industries and pollution which cause by climate, Creating carbon oxide. There environment which have

These large number of Vehicle caused tremendous pollution in air. According to healthlogy, man every day Breaths 23,000 time. (Commonly 2000 ltr. air take inside of body.) From this the importance of air is understood for human being, animal, trees.

Pollution Under Control. (P. U.C.) :

Ratio of Petrol Vehicles Carbon Monoxide			Diesel Vehicle Hortize Unit	Duration
Two Wheeler	Three Wheeler	Four Wheeler		
Below 3%	Below 1.5%	Below 1.5%	Below 50	6 months
3-4%	1.5-2.5%	1.5-2.5%	50-60	4 months
4-4.5%	2.5-3%	2.5-3%	60-65	2 months

At the time of Vehicle Checking, If the pollution find more than determined limit, action will take against it, though have primitive certificate of duration.

The Impact Vehicle Pollution on Human Health.

For Impact of Vehicle pollution on Human Health, I have taken interview of 10 Doctor's, according to them Carbon Monoxide, Sulfur Die Oxide, Nitrous Oxide, Hydrogen sulfide, are deter mental Gases, which have been blending in air, Because of vehicle pollution. Carbon monoxide have integrated with Hemoglobin of human blood, Cause to obstacle in breathing. Sulfur Die oxide, Nytrus oxide, Hydrogen sulfide Injured Breathing branches and organ's of human body. Carbon monoxide, caused to reaction, heart attack, blood pressure, Neumonia, Allergy, paralysis, which very hazardous to the health of human body. Particularly it affected Childs rapidly.

- **Vehicle Pollution – Policy Implication :**

1) Take care of vehicle regularly -

To Control vehicle pollution, must need to implicate, the Remedies/source as follows:

a. Render exact and regular Engine tuning.
b. By time table repair vehicle
c. do servicing and handle it according to company.
d. after particular period, check's the part of engine.

These factors helps us to control vehicle pollution.

2) Fit Catalytic Converter to vehicles –

It fit at the front part of petrol vehicle. In this instrument part platinum, palladium & Radium are used and formed Filtration structure. It controls carbon monoxide, hydro carbon, Hydrogen oxide by chemical reaction and converts it into carbon dioxide, water and Nitrogen, which helps to control petroleum vehicle pollution. To control pollution fits catalytic convertor.

3) Use C. N. G. –

In Vehicle Instead of using petrol and diesel, which are hazardous for pollution, use C.N.G. (Compressed Natural Gas) as fuel. It is useful to control vehicle pollution. Because, carbon monoxide, which deter mental to human life burns as whole or fully, caused to reduce pollution. Now at Mumbai utilise of C.N.G. is growing for taxi, car etc.

4) Use of Green Fuel –

Use of Diesel or Petrol in which Grass let is blended, it caused to throwed out more smoke, carbon from the silencer of vehicle. To control this pollution Green fuel mist use of vehicle. Unleaded petrol is called Green fuel controls the vehicle pollution.

5) Use of Four-Stroke Vehicle –

In two wheelers instead of two stroke use of four stroke, burns Gases Clearly or fully or whole. It is beneficial to control pollution.

6) Use Vehicle only when it is necessary –

Today, Vehicle has become prestigious thing for people. The parents can't fully concentrate on their child, caused in their absence secretly vehicles are being used